अध्याय 10

सामाजिक संरचना, परिवार, जेंडर और आयु

अध्याय की रूपरेखा

- सामाजिक संरचना
- शिकारी-संग्रहकर्ता समाज में सामाजिक संरचना
- जनजातियों में सामाजिक संरचना
- चीफडम में सामाजिक संरचना
- खेतिहर राज्यों में सामाजिक संरचना
- खेतिहर राज्यों में सामाजिक स्तरीकरण
- औद्योगिक व उद्योग-उपरांत राज्यों में सामाजिक संरचना
- औद्योगिक व उद्योग-उपरांत राज्यों में सामाजिक स्तरीकरण

सीखने के लक्ष्य

इस अध्याय को पढ़ने के बाद आप

10.1 सामाजिक संरचना के प्रमुख तत्वों पर चर्चा कर पाएंगे जिनमें हैसियत (status), परिवार, विवाह, जेंडर और आयु शामिल हैं।

10.2 घुमंतू (foraging) समाज में सामाजिक संरचना, परिवार, विवाह, जेंडर और आयु का विवरण दे पाएंगे।

10.3 जनजातीय समाज में सामाजिक संरचना, परिवार, विवाह, वंश-समूह, जेंडर और आयु का विवरण दे पाएंगे।

10.4 यह चर्चा कर पाएंगे कि चीफडम समाजों में हैसियत के अंतर, परिवार, जेंडर और आयु परस्पर सम्बंधित होते हैं।

10.5 खेतिहर राज्यों में परिवार, रिश्तेदारियों, विवाह, जेंडर और आयु के पैटर्न की चर्चा कर पाएंगे।

10.6 खेतिहर राज्यों में स्तरीकरण के प्रकारों की चर्चा कर पाएंगे।

सामाजिक संरचना

10.1 सामाजिक संरचना के प्रमुख तत्वों पर चर्चा करें जिनमें हैसियत, परिवार, विवाह, जेंडर और आयु शामिल हैं।

ग्रहों से लेकर सजीव कोशिका तक समस्त अजैविक और जैविक चीज़ों, की एक संरचना होती हैं - उनमें कुछ परस्पर सम्बंधित भाग एक विशेष व्यवस्था में जमे होते हैं। मानव वैज्ञानिक संरचना के विचार का उपयोग विभिन्न समाजों का विश्लेषण करते समय करते हैं। समाज एक-दूसरे से अंतर्क्रिया करते लोगों का एक बेतरतीब जमघट नहीं होता। वास्तव में, सामाजिक अंतर्क्रियाएं एक नियमित पैटर्न में होती हैं। जैसा कि हमने अध्याय 4 में देखा था, लोग अपने समाज की परिपाटियां, मूल्य और व्यवहार के तौर-तरीके संस्कृतिकरण के ज़रिए सीखते हैं। सामाजिक पैटर्न के अभाव में, लोगों को सामाजिक जीवन भ्रामक प्रतीत होगा। समाज में सम्बंधों के इन पैटर्न्स को मानव वैज्ञानिक **सामाजिक संरचना** कहते हैं। सामाजिक संरचना सारे मानव समाजों के लिए ढांचा प्रदान करती है, किंतु वह व्यक्तियों के निर्णयों को निर्धारित नहीं करती।

सामाजिक संरचना के घटक

सामाजिक संरचना का एक सबसे प्रमुख घटक *हैसियत* (status) है। हैसियत समाज में किसी व्यक्ति की मान्य स्थिति होती है। व्यक्ति की हैसियत से तय होता है कि वह समाज में शेष समस्त लोगों के सम्बंध में कहां फिट होता/ती है। हैसियत संपत्ति, सत्ता, प्रतिष्ठा पर या इन सबके सम्मिश्रण पर आधारित हो सकती है या उसके साथ जुड़ी हो सकती है। कई मानव वैज्ञानिक किसी विशिष्ट पोज़ीशन का श्रम के विभाजन, राजनैतिक व्यवस्था और अन्य सांस्कृतिक परिवर्तियों के साथ सम्बंध दर्शाने के लिए 'सामाजिक-आर्थिक स्थिति' जुम्ले का प्रयोग करते हैं।

सारे समाज *आरोपित* (ascribed) और *अर्जित* (achieved) हैसियतों को मान्य करते हैं। **आरोपित हैसियत** वह होती है जो किसी व्यक्ति के साथ जन्म से जुड़ी होती है

या वह व्यक्ति जीवन में कभी अनैच्छिक रूप से धारण कर लेता/ती है। सबसे प्रचलित आरोपित हैसियतें परिवार या रिश्तेदारी (जैसे पुत्र या पुत्री), लिंग (पुरुष या स्त्री) और उम्र पर आधारित होती हैं। इसके अलावा, कुछ समाजों में आरोपित हैसियतें नस्ल या जनजातीयता (ethnicity) पर आधारित होती हैं। उदाहरण के लिए, जैसा कि हम अगले एक अध्याय में देखेंगे, दक्षिण अफ्रीका की नस्लभेदी व्यवस्था के अंतर्गत आरोपित हैसियत का निर्धारण चमड़ी के रंग के आधार पर किया जाता था।

इसके विपरीत, अर्जित हैसियत वह होती है जो कम से कम कुछ हद तक व्यक्ति की स्वैच्छिक क्रियाओं पर आधारित हो। संयुक्त राज्य में व्यक्ति का पेशा या शिक्षा का स्तर अर्जित हैसियत के उदाहरण हैं। यकीनन, आपके पारिवारिक व रिश्तेदारी के सम्बंध आपके पेशे और शिक्षा के स्तर को प्रभावित कर सकते हैं। जॉर्ड डब्लू. बुश और जॉन केरी का शैक्षणिक स्तर और उनकी हैसियत का सम्बंध उस परिवार से है जिसमें उन्होंने जन्म लिया। अलबत्ता, इन व्यक्तियों को अपनी हैसियत अर्जित करने के लिए स्वैच्छिक रूप से कार्य करना पड़ा था।

हैसियत से नज़दीकी से जुड़ी अवधारणा सामाजिक *भूमिका* की है। भूमिका का मतलब है किसी हैसियत से जुड़े व्यवहार, दायित्वों, और मानकों का एक अपेक्षित पैटर्न। हैसियत और भूमिका के बीच अंतर करना आसान है: आप एक निश्चित हैसियत रखते हैं जबकि भूमिका को आप निभाते हैं (Linton 1936)। उदाहरण के लिए, एक विद्यार्थी के रूप में आपकी एक हैसियत होती है जो आपके प्रोफेसरों, प्रशासकों और अन्य स्टाफ से अलग होती है। जब आप उस हैसियत में बिराजे हैं, तो आप व्याख्यान में उपस्थित रहने, नोट्स लेने, कक्षाओं में भागीदारी करने और परीक्षा के लिए पढ़ाई करने जैसे काम करते हैं। भूमिका की यह अवधारणा थिएटर से आई है और इसका सम्बंध मंच पर कलाकारों द्वारा निभाए गए किरदारों से है। आप चाहे पति हों, मां हों, पुत्र, पुत्री, शिक्षक, वकील, न्यायाधीश, स्त्री, पुरुष जो भी हों, आपको एक निश्चित ढंग से व्यवहार करना होता है क्योंकि उस हैसियत के साथ कुछ मानक जुड़े होते हैं।

जैसा कि पहले कहा गया, किसी समाज में सामाजिक हैसियतें आम तौर पर संपत्ति, सत्ता और प्रतिष्ठा से मेल खाती हैं। मानव वैज्ञानिक देखते हैं कि सारे समाजों में हैसियतों की गैर-बराबरी होती है जो ऊंच-नीच के एक क्रम (हायरार्की) में व्यवस्थित होती हैं। हैसियतों में इस गैर-बराबरी को सामाजिक स्तरीकरण कहते हैं। अलग-अलग समाजों में स्तरीकरण अलग-अलग हद तक होता है और यह टेक्नॉलॉजिकल, आर्थिक और राजनैतिक कारकों पर निर्भर होता है। छोटे पैमाने के समाज बड़े पैमाने के समाजों की अपेक्षा कम स्तरीकृत होते हैं। अर्थात उनमें हैसियत की श्रेणियां कम होती हैं और संपत्ति, सत्ता व प्रतिष्ठा में अंतर भी कम होते हैं।

कुछ समाजों में संपत्ति, सत्ता और प्रतिष्ठा ज़मीन के स्वामित्व से या इस बात से जुड़ी होती है कि किसी के पास कितने पशु हैं। यू.एस. समाज में हैसियत का नज़दीकी सम्बंध आमदनी और ज़ायदाद से है। जनसंस्कृति (ethnographic) अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण उद्देश्य यह समझना है कि सामाजिक स्तरीकरण में अंतर के कारण क्या हैं और स्तरीकरण का समाज के अन्य पहलुओं से क्या सम्बंध है।

किसी भी समाज की सामाजिक संरचना के कई प्रमुख घटक होते हैं। किसी समाज का विश्लेषण करते हुए मानव वैज्ञानिक इनका अध्ययन करते हैं। इन घटकों की चर्चा परिवार, विवाह, जेंडर व उम्र से सम्बंधित अगले खंडों में की गई है।

परिवार

एक व्यापक बहु-सांस्कृतिक अध्ययन में जॉर्ज मरडॉक (George Murdock, 1945) ने पाया कि सारे समाज परिवार को मान्य करते हैं। अर्थात परिवार मनुष्यों का एक सार्वभौमिक गुण हैं और संभवत: इसकी जड़ें हमारी प्रायमेट विरासत में हो सकती हैं (Chapais, 2008)। मानव वैज्ञानिक परिवार को दो या दो से अधिक लोगों का ऐसा सामाजिक समूह मानते हैं जिनमें खून, विवाह या दत्तक सम्बंध हों और जो एक लंबे समय के लिए साथ-साथ रहते हों, आर्थिक संसाधन साझा करते हों और बच्चों की देखभाल करते हों। मानव वैज्ञानिक दो तरह के परिवारों के बीच भेद

करते हैं: जन्म-आधारित परिवार (फेमिली ऑफ ओरिएन्टेशन) अर्थात वह परिवार जिसमें लोग जन्म लेते हैं, और प्रजनन परिवार (फेमिली ऑफ प्रोक्रिएशन) अर्थात वह परिवार जिसके अंतर्गत लोग स्वयं अपने बच्चे पैदा करते हैं या बच्चे गोद लेते हैं (Murdock, 1949)। रिश्तेदारों के एक बहुत बड़े समूह के अंतर्गत परिवार एक सामाजिक इकाई है। प्रत्यक्ष एकल परिवार (न्यूक्लियर फेमिली) के परे रिश्तेदारियां (kinship) दुनिया के अधिकांश समाजों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मानव समुदायों के इन अंतर्क्रियात्मक पहलुओं का व्यक्तिगत विचारों और व्यवहार पर क्या असर होता है, इसे समझने के लिए मानव वैज्ञानिक परिवार के साथ-साथ रिश्तेदारियों का भी अध्ययन करते हैं।

हालांकि प्रकार और स्वरूप में विविधता होती है, किंतु जैसा कि ऊपर कहा गया है, जॉर्ज मरडॉक ने पाया कि परिवार सामाजिक संगठन का एक सार्वभौमिक पहलू है। परिवार की सर्व-व्याप्तता का कारण यह लगता है कि यह कुछ बुनियादी कार्य करता है जो मनुष्य की ज़रूरतों की पूर्ति करते हैं। परिवार का प्राथमिक काम बच्चों का पोषण और संस्कृतिकरण है। बच्चों को संस्कृति के बुनियादी मानक, मूल्य, ज्ञान और विश्वास परिवार के ज़रिए ही मिलते हैं।

परिवार का एक और काम यौन गतिविधियों के नियमन का है। हर संस्कृति यौन व्यवहार पर कुछ न कुछ प्रतिबंध तो लगाती है। यौन समागम मानव प्रजनन और विरासत का आधार है; यह काफी सामाजिक महत्व का मुद्दा भी है। इसलिए, यौन व्यवहार का नियमन समाज के उचित कामकाज के लिए अनिवार्य है। जैसी कि अध्याय 4 में चर्चा की गई थी, परिवार निकट परिवार में यौन सम्बंधों को प्रतिबंधित करता है - इसके लिए परिवार के अंदर यौन सम्बंधी व्यवहार पर पाबंदियां हैं।

परिवार अपने सदस्यों को जन्म से लेकर मृत्यु तक शारीरिक, भावनात्मक और प्राय: आर्थिक सुरक्षा व समर्थन देने का काम भी करता है। सारे समाजों में लोगों को भावनात्मक ऊष्णता, भोजन, आसरा और देखभाल की ज़रूरत होती है। परिवार एक ऐसा सामाजिक परिवेश मुहैया कराता है जिसमें ये ज़रूरते पूरी हो सकें। इनके

अलावा, मनुष्यों की स्नेह और निकटता की भावनात्मक ज़रूरतें भी होती है जिन्हें परिवार के अंदर आसानी से पूरा किया जा सकता है।

दुनिया भर में परिवारों के दो प्रमुख प्रकार - एकल परिवार और विस्तृत परिवार - पाए जाते हैं। एक सामान्य एकल परिवार में दो पालक (माता-पिता) और उनकी अपनी जैविक संतानें या गोद लिए बच्चे होते हैं।

जॉर्ज मरडॉक का मत था कि एकल परिवार सारे समाजों का सार्वभौमिक लक्षण है (1949)। उनके कहने का आशय यह था कि सारे परिवारों में एक नर और एक मादा होते हैं जो बच्चे पैदा करते हैं और रिश्तेदारी की इकाई के केंद्र में होते हैं।

अलबत्ता, जैसा कि हम आगे देखेंगे, एकल परिवार सारे समाजों में रिश्तेदारी की प्रमुख इकाई नहीं होती। कई समाजों में प्रमुख रूप विस्तृत परिवार होता है, जो पालकों, बच्चों, और अन्य रिश्तेदारों से बना होता है जो एक सामाजिक इकाई के रूप में बंधे होते हैं।

विवाह

अधिकांश समाजों में परिवार विवाह का प्रतिफल होता है। विवाह दो या अधिक व्यक्तियों के बीच एक सामाजिक बंधन है जिसे समाज की स्वीकृति होती है और जिसमें आर्थिक सहयोग, सामाजिक दायित्व, अधिकार, कर्तव्य और कभी-कभी सांस्कृतिक रूप से अनुमोदित यौन गतिविधि होती है। विवाह के दो सामान्य पैटर्न अस्तित्व में हैं: **एंडोगैमी** अर्थात एक ही सामाजिक समूह अथवा श्रेणी के लोगों के बीच विवाह और **एक्सोगैमी** अर्थात भिन्न सामाजिक समूहों या श्रेणियों के बीच विवाह।

विवाह में दो या दो से अधिक साझेदार हो सकते हैं। एकल विवाह (मोनोगैमी) के अंतर्गत आम तौर पर विवाह में दो व्यक्ति शामिल होते हैं। हालांकि पाश्चात्य औद्योगिक समाज में यह विवाह का सबसे परिचित रूप है, किंतु दुनिया में विवाह का यही एकमात्र रूप नहीं है। कई समाजों में किसी न किसी रूप में बहुविवाह का प्रचलन है। इसमें विपरीत लिंग के दो या दो से अधिक पति-पत्नी होते हैं। बहुविवाह दो प्रकार के होते हैं: एक पति और दो या दो से अधिक पत्नियों के बीच विवाह (**पोलीगायनी**)

और एक पत्नी तथा दो या दो से अधिक पति के बीच विवाह (**पोलीएंड्री**)। हालांकि विश्व की अधिकांश आबादी फिलहाल एकल विवाह का पालन करती है किंतु पोलीगायनी (बहुपत्नी प्रथा) 80 प्रतिशत मानव समाजों में स्वीकृत है। इनमें से कुछ समाजों की जनसंख्या बहुत कम है (Murdock 1981a, 1981b)। हालांकि बहुपति विवाह बहुत बिरली प्रथा है मगर बहु-पति विवाह का एक हालिया सर्वेक्षण दर्शाता है कि यह 81 प्रतिशत समाजों में पाई जाती है (Starkweather and Hames 2012)। हालांकि विवाह में आम तौर पर पुरुषों व स्त्रियों का बंधन होता है किंतु कई समाज हैं जहां समलैंगिक विवाहों को सामाजिक व कानूनी रूप से मान्य किया जाता है (L. Stone 2010)। जैसा कि हम देखेंगे, मानव वैज्ञानिकों ने इस बात को लेकर परिकल्पनाएं विकसित की हैं क्यों किसी विशेष सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्था में कतिपय किस्म के विवाह विकसित होते हैं।

जेंडर

जेंडर सम्बंध किसी भी समाज की सामाजिक संरचना का एक और महत्वपूर्ण घटक होते हैं। समाज में नर और मादा के रिश्तों की बात करते हुए मानव वैज्ञानिक लिंग व जेंडर के बीच भेद करते हैं। लिंग से आशय होता है नर व मादा के बीच जीव वैज्ञानिक व शारीरिक अंतर। इन अंतरों में प्राथमिक लैंगिक लक्षण - लैंगिक अंग - और द्वितीयक लैंगिक लक्षण, जैसे मादाओं में स्तन और अपेक्षाकृत चौड़े कूल्हे तथा नर में ऊपरी धड़ में ज़्यादा मांसपेशीय विकास और शरीर पर अधिक बाल। ध्यान दें कि ये सामान्य रुझान हैं और इनके कई अपवाद पाए जाते हैं। जैसे, कुछ नर कई मादाओं की तुलना में छोटे व हल्के होते हैं और उनमें शरीर पर बाल भी कम होते हैं। बहरहाल, आम तौर पर नर और मादा के बीच सार्वभौमिक रूप से कार्यिकीय और शारीरिक बनावट के आधार पर अंतर किया जाता है (L. Stone 2010)।

लिंग के विपरीत, अधिकांश मानव वैज्ञानिक जेंडर को जैविक की बजाय सांस्कृतिक मानते हैं। जेंडर से आशय उन विशिष्ट मानवीय लक्षणों से है जो किसी समाज द्वारा प्रत्येक लिंग के साथ जोड़ दिए जाते हैं। किसी समाज-विशेष के सदस्य के रूप में पुरुष व स्त्री कतिपय हैसियतों में रहते हैं, जैसे पुत्र, पुत्री, पति, पत्नी, पिता, और माता। इन विभिन्न हैसियत स्थितियों से सम्बंधित जेंडर भूमिकाएं निभाने के लिए पुरुषों का समाजीकरण 'मर्दाना' बनने के लिए तथा स्त्रियों का समाजीकरण 'ज़नाना' बनने के लिए

किया जाता है। मर्दाना और ज़नाना की परिभाषाएं विभिन्न समाजों में अलग-अलग होती हैं (Yangisako and Collier 1990; L. Stone 2010)।

जेंडर और संस्कृतिकरण जेंडर के बारे में एक महत्वपूर्ण मुद्दा यह है कि संस्कृतिकरण किस हद तक पुरुषों व स्त्रियों के व्यवहार को प्रभावित करता है। इस मुद्दे का अध्ययन करने के लिए मानव वैज्ञानिक उन मूल्यों, विश्वासों और मानकों पर ध्यान केंद्रित करते हैं जो जेंडर भूमिकाओं पर प्रभाव डाल सकते हैं। वे छोटे लड़कों और लड़कियों के साथ जुड़ी गतिविधियों का भी अवलोकन करते हैं। कई समाजों में संस्कृतिकरण के एक पहलू के तौर पर लड़के और लड़कियां अलग-अलग खेल खेलते हैं। यू.एस. के समाज में पारंपरिक रूप से लड़कियों की अपेक्षा लड़कों को आक्रामक, प्रतिस्पर्धी टीम खेलों में भाग लेने को प्रोत्साहित किया जाता है। जेंडर भूमिकाओं पर असर डालने वाले सांस्कृतिक मूल्य और विश्वास अन्य समाजों में भी पाए जाते हैं।

लिंग और श्रम का विभाजन अधिकांश समाजों में श्रम विभाजन का एक प्रमुख तत्व यह होता है कि पुरुषों और स्त्रियों को अलग-अलग काम सौंपे जाते हैं। इस परिघटना की व्याख्या के लिए मानव वैज्ञानिक इस मुद्दे पर ध्यान केंद्रित करते हैं कि क्या पुरुषों व स्त्रियों के बीच शारीरिक अंतर (लिंग के अंतर) इन अलग-अलग भूमिकाओं के लिए ज़िम्मेदार हैं। इस मुद्दे को संबोधित करने के लिए वे कई सवाल पूछते हैं: क्या श्रम का लिंग पर आधारित विभाजन सर्व व्यापी है? क्या जेंडर के साथ जुड़े काम के पैटर्न का कोई सम्बंध शारीरिक शक्ति से है? क्या बच्चों की देखभाल और गर्भावस्था का असर स्त्रियों के आर्थिक विशेषीकरण को निर्धारित या प्रभावित करता है? मर्दाना या ज़नाना व्यवहार के लिए जो मूल्य और विश्वास को निर्धारित किए गए हैं, वे कार्य के विभाजन पर किस हद तक असर डालते हैं?

जेंडर और हैसियत मानव वैज्ञानिक जिस एक और महत्वपूर्ण मुद्दे की तहकीकात करते हैं, वह है समाज में पुरुषों और स्त्रियों की हैसियत। जैसी कि आगे चर्चा की गई है, लुइस मॉर्गन (Lewis Morgan) जैसे कुछ शुरुआती मानव वैज्ञानिकों का मत था कि एक समय पर स्त्रियों की सामाजिक व राजनैतिक हैसियत पुरुषों की तुलना में उच्चतर थी किंतु समय के साथ यह पैटर्न पलट गया। आजकल मानव वैज्ञानिक इस बात पर ध्यान

देते हैं कि कैसे पुरुषों और स्त्रियों की हैसियत जैविक कारकों, श्रम विभाजन, रिश्तेदारी के सम्बंधों, राजनैतिक व्यवस्थाओं और मूल्यों व विश्वासों से जुड़ी है।

हालांकि लिंग के गुणधर्म जीव वैज्ञानिक रूप से निर्धारित होते हैं, किंतु जेंडर भूमिकाएं समाज-विशेष की टेक्नॉलॉजीगत, आर्थिक और सामाजिक-सांस्कृतिक परिस्थितियों के अनुसार अलग-अलग होती हैं। इस अध्याय और अगले अध्याय में हम मानव वैज्ञानिकों द्वारा किए गए कुछ हालिया अध्ययनों को खंगालेंगे जिन्होंने विविध समाजों में जेंडर भूमिकाओं में भिन्नताओं की हमारी समझ को व्यापकता दी है।

उम्र

रिश्तेदारियों और जेंडर के समान, उम्र भी सामाजिक-सांस्कृतिक व्यवस्थाओं में सामाजिक हैसियत निर्धारित करने में प्रयुक्त एक सार्वभौमिक तत्व है। बुढ़ाने की जीव वैज्ञानिक प्रक्रिया मानव जीवन का अपरिहार्य अंग है; जन्म से मृत्यु तक हमारे शरीर निरंतर बदलते रहते हैं। मनुष्यों में शैशव से लेकर बचपन, किशोरावस्था, वयस्क अवस्था से लेकर वृद्धावस्था तक निश्चित जीव वैज्ञानिक परिवर्तन होते हैं। हारमोनल व अन्य कार्यिकीय परिवर्तन प्रौढ़ता और बुढ़ाने की प्रक्रिया के पीछे होते हैं। उदाहरण के लिए, जब हम वृद्धावस्था में पहुंचते हैं तो हमारी ऐंद्रिक क्षमताएं बदलने लगती हैं: स्वाद, दृष्टि, स्पर्श, गंध, और श्रवण क्षमताएं कमज़ोर होने लगती हैं। सफेद बाल और झुर्रियां उभरने लगती हैं, और हमारे कद व वज़न में कमी आती है तथा कुल मिलाकर शक्ति व जीवंतता में गिरावट होती है। हालांकि शारीरिक परिवर्तन के मामले में व्यक्ति-व्यक्ति में अंतर होते हैं और इन पर कुछ हद तक सामाजिक व पर्यावरणीय कारकों का असर पड़ता है, किंतु ये प्रक्रियाएं हैं तो सार्वभौमिक।

अलबत्ता, बुढ़ाने का जीव विज्ञान इस बात का मात्र एक पक्ष है कि किसी संस्कृति विशेष में उम्र का सम्बंध सामाजिक संरचना से क्या है। मनुष्य का जीवन चक्र सामाजिक हैसियतों और भूमिकाओं का आधार है, जिनके शारीरिक व सांस्कृतिक दोनों आयाम हैं। जीवन चक्र की इन श्रेणियों के सांस्कृतिक मायने अलग-अलग समाजों में अलग-अलग होते हैं। उसी तरह उम्र-आधारित हैसियत को परिभाषित करने के लिए लोग जिन कसौटियों का सहारा लेते हैं, उनमें भी भिन्नता होती है। उम्र विशेष के लिए हैसियतों

और भूमिकाओं की परिभाषाओं के निहितार्थ उन लोगों के लिए काफी व्यापक होते हैं जो इन हैसियतों की स्थिति में हैं।

उम्र और संस्कृतिकरण जब लोग मानव जीवन चक्र के विभिन्न चरणों से गुज़रते हैं, तो उन्हें लगातार संस्कृतिकरण की प्रक्रिया का एहसास होता है। विभिन्न मानकों, मूल्यों और विश्वासों की उपस्थिति के कारण अलग-अलग समाजों में जीवन चक्र के विभिन्न चरणों में लोगों के साथ भिन्न-भिन्न सलूक हो सकता है। उदाहरण के लिए, समाजों के बीच बचपन में संस्कृतिकरण की अवधि की फर्क होता है। संयुक्त राज्य तथा अन्य औद्योगिकरण-उपरांत के समाजों में बचपन का सम्बंध एक विस्तृत शैक्षणिक अनुभव से होता है जो कई वर्षों तक जारी रह सकता है। कई उद्योग-पूर्व समाजों में बचपन अपेक्षाकृत छोटी अवधि होती है और बच्चे काफी कम उम्र में ही वयस्क हैसियत और ज़िम्मेदारियां निभाने लगते हैं।

उम्र बढ़ने के साथ किसी समाज में जिस एक और कारक का होता है वह है कि विभिन्न उम्रों में व्यक्ति को किस नज़र से देखा जाता है। बुढ़ापे को कैसे परिभाषित किया जाता है? उदाहरण के लिए, कई समाजों में वृद्धावस्था को सिर्फ समय बीतने के रूप में परिभाषित नहीं किया जाता। ज़्यादा मर्तबा यह होता है कि वृद्धावस्था को सामाजिक हैसियत, काम के स्वरूप, पारिवारिक हैसियत या प्रजनन क्षमता में परिवर्तन के लिहाज़ से देखा जाता है (Cowgill 1986)। ये कारक इस बात पर असर डालते हैं कि समाज में लोगों को अलग-अलग उम्र में क्या महत्व दिया जाता है।

उम्र और श्रम विभाजन व्यक्ति अपने जीवन चक्र के अलग-अलग पड़ावों पर जो आर्थिक भूमिकाएं अपनाते हैं वह भी उम्र पर निर्भर करता है। हर जगह बच्चों का संपर्क उन तकनीकी हुनर से करवाया जाता है जो उन्हें अपने पर्यावरण में जीवित रहने के लिए ज़रूरी होंगे। बड़े होकर वे श्रम विभाजन के तहत विशिष्ट भूमिका अपनाते हैं। जिस तरह पुरुष व स्त्री भूमिकाओं में अंतर होते हैं, ठीक उसी तरह युवाओं और वयस्कों की भूमिकाएं भिन्न-भिन्न होती हैं। उदाहरण के लिए, कुछ उद्योग-पूर्व समाजों में बुज़ुर्ग लोग केंद्रीय भूमिकाओं में होते हैं जबकि अन्य समाजों में वे कोई महत्वपूर्ण भूमिका

नहीं निभाते। औद्योगिक व औद्योगिकरण-उपरांत समाजों में बुज़ुर्ग लोग आम तौर पर किसी महत्वपूर्ण व्यावसायिक भूमिका में नहीं होते।

उम्र और हैसियत उम्र सामाजिक हैसियत का एक प्रमुख निर्धारक है। लोगों को आम तौर पर जीवन चक्र के किसी चरण से जुड़ी विशिष्ट हैसियत सौंप दी जाती है। इसका परिणाम उम्र-स्तरीकरण के रूप में प्रकट होता है, अर्थात विभिन्न उम्र के लोगों के बीच संपत्ति, सत्ता और प्रतिष्ठा का गैर-बराबर आवंटन। मानव वैज्ञानिक पाते हैं कि उम्र-स्तरीकरण तकनीकी विकास के स्तर के साथ बदलता है। उदाहरण के लिए, कई उद्योग-पूर्व समाजों में बुज़ुर्ग लोगों की उच्च सामाजिक हैसियत होती है जबकि अधिकांश औद्योगिक समाजों में बुज़ुर्ग लोगों की हैसियत में गिरावट आती है।

विभिन्न उम्र के लोगों को हैसियत के आवंटन का एक सबसे सामान्य तरीका है उम्र-ग्रेड के ज़रिए। उम्र-ग्रेड वे हैसियतें हैं जिन्हें उम्र के आधार पर परिभाषित किया जाता है। उम्र बढ़ने के साथ व्यक्ति इन हैसियतों से गुज़रता/ती है। उदाहरण के लिए, अधिकांश औद्योगिक समाजों में उम्र-ग्रेड शैशव, स्कूल-पूर्व, किंडरगार्टन, प्रारंभिक स्कूल, माध्यमिक स्कूल, हाई स्कूल, युवावस्था, अधेड़ावस्था, युवा-बुज़ुर्ग, और बूढ़े-बुज़ुर्ग जैसी उम्रों से सम्बद्ध होते हैं (Cowgill 1986)। इनमें से प्रत्येक ग्रेड एक विशिष्ट हैसियत की द्योतक होती है।

शिकारी-संग्रहकर्ता समाजों में सामाजिक संरचना

10.2 संग्रहकर्ता समाजों में सामाजिक संरचना, परिवार, विवाह, जेंडर और उम्र का विवरण दीजिए

संग्रहकर्ता समाज का बुनियादी सामाजिक संगठन परिवार, विवाह, रिश्तेदारियों, जेंडर और उम्र पर आधारित होता है। संग्रहकर्ता आबादियों के सामाजिक संगठन के दो बुनियादी तत्व एकल परिवार और कबीला (band) होते हैं। एकल परिवार एक छोटी पारिवारिक इकाई होती है जो प्रजनन द्वारा जुड़े होते हैं: पालक और संतानें। शिकारी संग्रहकर्ता समाज के लिए एकल परिवार सबसे अनुकूल होता है क्योंकि इसमें वह लचीलापन होता है जो एक ऐसे समाज में ज़रूरी है जो शिकार और शिकार के बंटवारे

पर निर्भर होता है (Fox 1967; Pasternak 1976)। बारम्बार की घुमंतू गतिशीलता में संग्रहण के काम के लिए छोटे एकल परिवारों के समूह उपयुक्त होते हैं। आम तौर पर शिकार और संग्रह का काम एकल परिवारों के छोटे-छोटे समूहों द्वारा किया जाता है। उदाहरण के लिए, कुछ मौसमों में कैमरून के बाका (Baka) वनवासी जंगलों में संग्रहण करते हैं और अपने एकल परिवारों के लिए धनुषाकार बल्लियों को पत्तियों से ढंककर झोपड़ियां बनाते हैं (Campagnoli 2005)। मौसम के दौरान बाद में ये बाका एकल परिवार कई महीनों तक अपने रिश्तेदारों के साथ अपेक्षाकृत अधिक स्थायी शिविरों में रहते हैं।

कबीले का सबसे आम प्रकार एकल परिवारों से मिलकर बना झुंड होता है जिसमें 20-100 सदस्य होते हैं। कभी-कभी, शोशोन इंडियन्स (Shoshone Indians) जैसे समाजों में भोजन व अन्य संसाधन तलाश के लिए कबीला एकल परिवारों में बंट जाता है। अन्य परिस्थितियों में कई एकल परिवार शिकार व संग्रह की अन्य गतिविधियों में सहयोग करते हैं। कुछ मामलों में कबीले में चार-पांच (या उससे भी ज़्यादा) विस्तृत परिवार होते हैं, जिनमें विवाहित बच्चे और उनकी संतानें अपने पालकों के साथ रहते हैं। ऐसे बहु-पारिवारिक कबीले संग्रह कार्य के लिए रिश्तेदारी का संजाल उपलब्ध कराते हैं जिससे उन्हें जीवन निर्वाह और आर्थिक लेन-देन में मदद मिलती है।

किसी कबीले में सदस्यों की संख्या वहां के प्राकृतिक पर्यावरण की वहन क्षमता पर निर्भर होती है। अधिकांश संग्रहकर्ता समूहों में 20 से 100 सदस्य होते थे। रेगिस्तान, आर्कटिक और उष्ण कटिबंधीय वर्षा वनों में संग्रहकर्ता छोटे-छोटे बहु-पारिवारिक दलों में रहते थे और ये अलग-अलग इलाकों में रहते थे। सामान्यतः दल का संगठन बहुत लचीला होता है और सदस्य परिस्थितियों के अनुसार दल में जुड़ते या अलग होते रहते हैं। कुछ मामलों में जब भोजन और पानी जैसे संसाधनों की किल्लत होती है तो पूरे के पूरे दल किसी दूसरे दल के इलाकों में प्रवास कर जाते हैं।

विवाह और रिश्तेदारियां

हालांकि एक (Ache) जैसे कई सारे संग्रहकर्ता समूहों में बहुपत्नी प्रथा, अर्थात एक पुरुष और दो या अधिक स्त्रियां, प्रचलित है किंतु संग्रहकर्ता समूहों में विवाह का सामान्य प्रकार एकल विवाह होता है (Hill and Hurtado 1996; Ember, Ember, and Low 2007)।

विवाह सामाजिक सम्बंधों को पुख्ता करने का एक महत्वपूर्ण साधन है। कुछ मामलों में, बचपन में ही भावी पति-पत्नी की मंगनी कर दी जाती है। सामान्यत: लड़की लड़के से काफी छोटी होती है। उदाहरण के लिए Ju/'hoansi San लड़कियों की शादी 12-14 वर्ष की उम्र में कर दी जाती है जबकि लड़के 18-25 वर्ष या उससे भी बड़े हो सकते हैं।

हालांकि ये वैवाहिक व्यवस्थाएं संग्रहकर्ता समाजों के नियमित लक्षण हैं किंतु इसका मतलब यह नहीं है कि युगल इन अरेंज्ड विवाहों को आसानी से स्वीकार कर लेते हैं। एक सान महिला ने अपने प्रथम विवाह के बारे में कहा:

> *जब मैंने अपने पति त्साऊ से विवाह किया तो मैंने बहुत ज़्यादा लड़ाई नहीं की किंतु जब मुझे उसकी झोपड़ी में सोने के लिए ले जाया गया तो मैं बहुत रोई। जब बड़े लोग चले गए तो मैं ध्यान से सुनती रही कि वे सो गए हैं। उसके बाद जब मेरा पति सो गया और मैंने उसकी सांसों की आवाज़ें सुनीं, तो मैं एकदम चुपचाप उठी, अपना कंबल उसके नीचे से खींचा और बाहर जाकर झाड़ियों में सो गई।*
>
> *सुबह लोग त्साऊ की झोपड़ी में आए और पूछा, "तुम्हारी पत्नी कहां है?" उसने इधर-उधर देखा और कहा, "मुझे नहीं पता मेरी पत्नी कहां चली गई है।" फिर उन्होंने मेरे कदमों के निशान देखकर मुझे वहां झाड़ियों में खोज लिया। वे मुझे पति के पास वापिस ले आए। उन्होंने कहा कि यह आदमी है जिसे उन्होंने मुझे सौंपा है और वह मुझे नुकसान नहीं पहुंचाएगा।*
>
> *उसके बाद हम साथ-साथ ठीक-ठाक ही रहे। शुरू-शुरू में जब हम एक ही कंबल के नीचे सोते थे तो हमारे बदन छूते नहीं थे, मगर कुछ दिनों बाद मैं उसके सामने सोने लगी। कई लड़कियां अपने पतियों को पसंद नहीं करती हैं और दूर जाने की कोशिश करती रहती हैं, जब तक कि उनका पति हार नहीं मान लेता और उनके पालक उसे वापिस नहीं ले जाते। (Lee 1993:83)*

विवाह के नियम संग्रहकर्ता में समाजों वैवाहिक सम्बंधों का मकसद अपने कबीले में आर्थिक, सामाजिक और राजनैतिक अंतर्निर्भरता को बढ़ाना और उपयुक्त कबीला

गठबंधनों को मज़बूत करना है। इसके लिए इस बात के नियम बनाए गए हैं कि कौन किससे विवाह कर सकता/ती है। इनमें से कई नियमों का सम्बंध कज़िन्स (चचेरे, ममेरे, फुफेरे भाई-बहनों) के बीच विवाह से है। संग्रहकर्ता समाजों में पाया जाने वाल एक आम वैवाहिक नियम *क्रॉस-कज़िन विवाह* कहलाता है। क्रॉस कज़िन फूफेरे या ममेरे भाई या बहन को कहते हैं। कुल मिलाकर क्रॉस कज़िन विवाह का मतलब होता कि पुरुष या तो अपने पिता की बहन की लड़की से या अपनी मां के भाई की लड़की से विवाह करेगा।

इसके अलावा, संग्रहकर्ता समाजों में इस बात को लेकर नियम होते हैं कि विवाहित दंपति को कहां रहना होगा। अधिकांश कबीला समाजों में पितृ-स्थानिक निवास होता है, जिसमें नव विवाहित दंपति पति के पिता के साथ निवास करती है। अर्थात यदि कोई पुरुष किसी अन्य कबीले की स्त्री से विवाह करता है, तो उस स्त्री को अपने पति के कबीले में शामिल होना पड़ेगा। ऐसे समाजों में पितृ-स्थानिक निवास का नियम और क्रॉस-कज़िन विवाह का नियम मिलकर एक प्रणाली का निर्माण करते हैं जिसे सीमित वैवाहिक आदान प्रदान (*restricted marital exchange*) कहते हैं जिसमें दो समूह स्त्रियों का आदान-प्रदान करते हैं (Lévi-Strauss 1969)। इस प्रणाली का उद्देश्य रिश्तेदारी के गठबंधनों के बढ़ावा देकर समूह की एकजुटता को मज़बूत करना है।

चित्र 10.1 में दिया गया रिश्तेदारी का रेखाचित्र कुछ संग्रहकर्ता समाजों में सामाजिक संरचना को प्रस्तुत करता है। इस चित्र में ईगो (Ego) नामक व्यक्ति को संदर्भ बिंदु के रूप में इस्तेमाल किया गया है और रिश्तेदारी के सम्बंध ईगो के बच्चों, पालकों, पालकों के माता-पिता, और अन्य रिश्तेदारों से शुरू करके जोड़े गए हैं। ध्यान दें कि ईगो ने अपनी फूफेरी बहन से विवाह किया है। पितृ-स्थानिक निवास के नियम की वजह से ईगो के पिता की बहन को अपने पति के साथ दूसरे कबीले में जाना पड़ा था। अर्थात ईगो का विवाह अपने कबीले से बाहर हो रहा है।

ईगो के समान, ईगो की पत्नी के भाई ने अपने कबीले से बाहर की स्त्री से विवाह किया है। क्रॉस कज़िन नियम के मुताबिक उनकी पुत्री ने ईगो के पुत्र से विवाह किया है। ईगो की पुत्री अंततः किसी अन्य कबीले के लड़के से विवाह करेगी। क्रॉस कज़िन विवाह और पितृ-स्थानिक निवास के नियमों के चलते यह सीमित आदान-प्रदान अंतरपारिवारिक और

अंतरजनजातीय रिश्तेदारियों के मज़बूत नेटवर्क विकसित करता है। पीढ़ियों के साथ ये नेटवर्क विस्तृत होते जाते हैं, जिससे परस्पर निर्भर आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक सम्बंध बढ़ते जाते हैं।

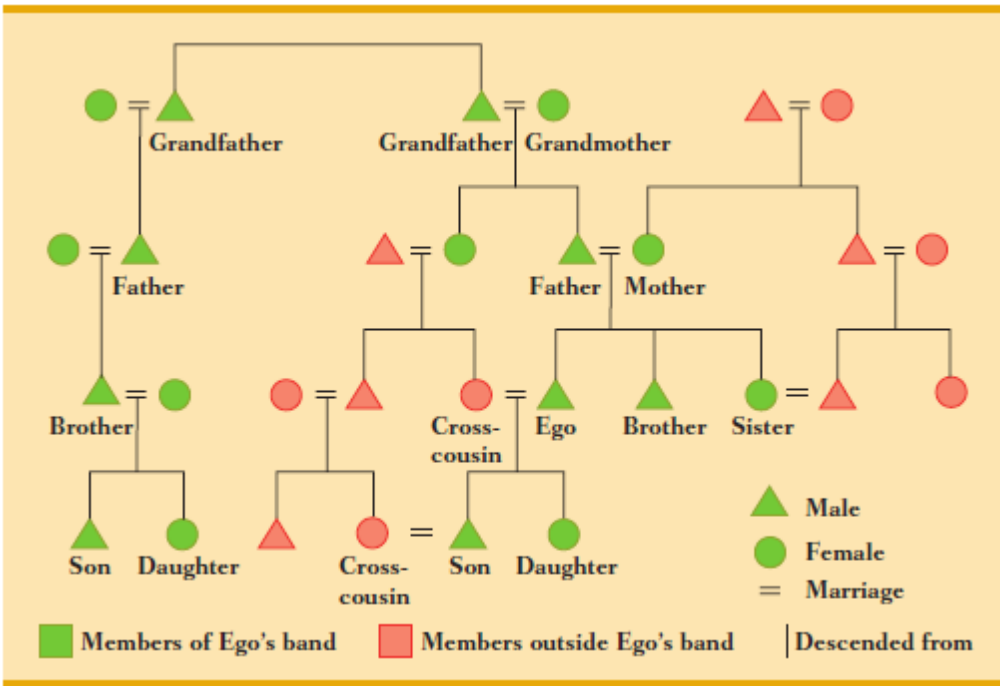

चित्र 10.1 शिकारी-संग्रहकर्ता समाजों में विवाह और रिश्तेदारियों के पैटर्न

प्रचलित
बीले में
लकों के
वधूसेवा
क पिता
1993)।
ीलों के
बीच आर्थिक व सामाजिक बंधन मज़बूत होंगे। u/'hoansi San में वधूसेवा की प्रथा का एक कारण यह भी है कि विवाह के समय स्त्री लैंगिक रूप से परिपक्व नहीं होती। जो San लड़कियां रजस्वला होने से पहले विवाह करती हैं उनसे पति के साथ संभोग करने की अपेक्षा नहीं की जाती। लिहाज़ा वधूसेवा की अवधि स्त्री की परिपक्वता अवधि से मेल खाती है। किंतु वधूसेवा दो कबीलों के बीच रिश्तेदारियों और परस्पर बंधनों को मज़बूत करने का काम भी करती है। पैरागुए के एक (Ache) जैसे कुछ शिकारी संग्रहकर्ता समाजों में वधूसेवा के बगैर ही मातृ-स्थानिक निवास की प्रथा होती है (Hill and Hurtado 1996)।

शिकारी संग्रहकर्ताओं में अन्य वैवाहिक पैटर्न सारे शिकारी संग्रहकर्ता समाज ऊपर वर्णित वैवाहिक पैटर्न का पालन नहीं करते हैं। उदाहरण के लिए, अतीत में अधिकांश एस्किमो

(इनुइट) विवाहों में न तो कज़िन विवाह को तरजीह देने को लेकर कोई नियम था और न ही नव दंपति के सम्बंध को स्वीकृति देने के लिए किए जाने वाले अनुष्ठान या उत्सव होते थे। पारंपरिक रूप से तो पुरुष व स्त्री बस साथ-साथ रहना शुरू कर देते थे। कुछ हद तक इनुइट इस वैवाहिक व्यवस्था को आर्थिक व प्रजनन कार्य के लिए एक व्यावहारिक व उपयोगितावादी सम्बंध मानते थे (Balikci 1970)। इसके अलावा बहु-पति प्रथा इनुइट संस्कृति का एक लक्षण रहा है (Starkweather and Hames 2012)। निसंदेह, बहु-पतित्व शिकार के लिए पुरुषों की लंबी अनुपस्थिति और इस भय से जुड़ा था कि पत्नी का अपहरण हो जाएगा या वह बेवफा हो जाएगी। इसके अलावा, चूंकि इनुइट समाज में अधिकांश खाद्य उत्पादन पुरुष करते हैं, एक से अधिक पुरुष प्रदाता होने पर स्त्रियों को फायदा होगा। कुछ मामलों, इनुइट स्त्रियां अन्य पुरुषों के साथ औपचारिक बहु-पतित्व सम्बंध बना लेती थीं, खासकर पति के भाइयों के साथ, जिसे बिरादर बहुपतित्त्व (fraternal polyandry) कहते हैं।

तलाक अधिकांश मामलों में, शिकारी संग्रहकर्ता समाजों में तलाक आसानी से हो जाता है। उदाहरण के लिए, Ju/'hoansi San में तलाक की प्रक्रिया, जो अक्सर स्त्री द्वारा शुरू की जाती है, सौहार्द व सहयोग की आसान-सी बात होती है। यह भी हो सकता है कि तलाकशुदा लोग पड़ोसियों के रूप में अपने नए पति/पत्नी के साथ रहते रहें। चूंकि एकल परिवार से परे कोई सख्त कानून नहीं हैं और न ही रिश्तेदारियों का कोई जटिल पैटर्न है, तो Ju/'hoansi San में विवाह को समाप्त करना एक आसान प्रक्रिया है (Lee 1993, 2013)। जैसा कि ऊपर कहा गया था, पैरागुए के एक (Ache) शिकारी संग्रहकर्ताओं में बहु-पत्नी प्रथा प्रचलित है, जो शिकारी संग्रहकर्ताओं में असामान्य है (Hill and Hurtado 1996)। एक (Ache) लोगों में एक क्रमिक एकल विवाह प्रथा भी पाई जाती है जिसमें बार-बार तलाक होते हैं और हो सकता है कि अपने जीवन काल में किसी स्त्री के 12 या उससे भी अधिक पति हों। एक (Ache) विवाह चंद घंटों से लेकर 47 साल तक टिकते हैं (Hill and Hurtado 1996)।

इनुइट में भी तलाक काफी आम बात है और आसानी से मिल जाता है (Balikci 1970)। San के ही समान, इसका एक कारण तो यही है कि एकल परिवार से आगे कोई औपचारिक सामाजिक समूह नहीं होता। एक कारण यह भी है कि विवाह तथा विवाह-

उपरांत निवास को लेकर कोई सख्त नियम नहीं हैं। उल्लेखनीय बात यह है कि तलाक की वजह से रिश्तेदारी के सम्बंध टूटें ऐसा ज़रूरी नहीं है। चाहे इनुइट दम्पत्ति अलग हो जाएं, जो अध्ययन किए गए विवाहों में 100 फीसदी मामलों में हुआ था, रिश्तेदारी के सम्बंध बने रहते हैं (Burch 1970)। कभी-कभी दम्पति वापिस जुड़ जाते हैं और पहले और दूसरे विवाह के बच्चे एक नया मिला-जुला परिवार बन जाते हैं। लिहाज़ा. तलाक से वास्तव में रिश्तेदारी के सम्बंध बनते हैं, जो आर्कटिक की कठिन परिस्थितियों में एक सामाजिक-सांस्कृतिक अनुकूलन है।

जेंडर

शिकारी संग्रहकर्ता समाजों की सामाजिक संरचना के एक गुणधर्म के रूप में जेंडर जनसंस्कृति (ethnographic) अनुसंधान का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र रहा है। सांस्कृतिक मानव वैज्ञानिक जेंडर, जीवन निर्वाह, अर्थ व्यवस्था और राजनैतिक संगठन के पैटर्न्स के बीच अंतर्सम्बंधों की छानबीन करते रहे हैं।

जेंडर और श्रम विभाजन शिकारी संग्रहकर्ता समाजों पर हाल के जनजातीय अनुसंधान से पहले, मानव वैज्ञानिक मानते थे कि पुरुषों द्वारा की जाने वाली जीवन निर्वाह की गतिविधियां, खास तौर से शिकार व मत्स्याखेट, अधिकांश भोजन संसाधन मुहैया कराती हैं। पारंपरिक लिंग-आधारित वैकासिक परिप्रेक्ष्य के मुताबिक, एकल परिवार में, पुरुष शिकार करते थे और स्त्रियां वनस्पति संग्रह करती थीं और सहयोग करती थीं (Lovejoy 1981, Washburn and Lancaster 1968)। Ju/'hoansi San, Semang, और Mbuti, जैसे कुछ शिकारी-संग्रहकर्ता समाजों में स्त्रियां पौधे बीनकर अधिकांश भोजन उपलब्ध कराती थीं (Martin and Voorhies 1975; Dahlberg 1981; Lee 1993, 2013; Weisner 2002)। इसके अलावा, स्त्रियां कभी-कभार शिकार भी करती हैं और परोक्ष रूप से मांस भी प्राप्त करती हैं। मलेशिया के वर्षा वनों के Batak शिकारी संग्रहकर्ताओं तथा फिलीपाइन्स में Agta में, स्त्री-पुरुष दोनों लगभग सारे जीवन निर्वाह के काम करते हैं (Estioko-Griffin and Griffin 1978; Endicott 1988)। Agta में स्त्रियां पुरुषों के समान ही जंगलों में जंगली सुअर मारने जाती हैं। ऑस्ट्रेलिया के Tiwi तथा पूर्वी अफ्रीका के Hadza शिकारी संग्रहकर्ताओं में भी यही पैटर्न देखने को मिलता है (Goodale 1971; Woodburn 1982)।

कैरोल एंबर (Carol Ember 1978) द्वारा शिकारी संग्रहकर्ताओं पर किए गए बहु-संस्कृति अध्ययन से पता चलता है कि पुरुष सामान्यत: शिकार और मत्स्याखेट से मांस प्राप्त करते हैं। अलबत्ता, जैसा कि निकोल वेगस्पैक (Nicole Waguespack 2005) द्वारा जनजातीय व पुरातात्विक, दोनों तरह के प्रमाणों के एक हाल के अध्ययन से संकेत मिलता है कि मांस प्राप्ति के वर्चस्व वाले समाजों में भी स्त्रियां महत्वपूर्ण आर्थिक भूमिका निभाती हैं और कई किस्म की गतिविधियों में शामिल रहती हैं, जैसे चमड़े का काम और मकान बनाना। श्रम विभाजन को मात्र लिंग-आधारित श्रम विभाजन के रूप में व्यक्त नहीं किया जा सकता जिसमें पुरुष शिकार करते हैं और स्त्रियां वनस्पति संग्रह करती हैं।

श्रम विभाजन की लिंग-आधारित व्याख्या सांस्कृतिक मानव वैज्ञानिकों द्वारा पूछा गया पहला-पहला सवाल यह था: शिकारी संग्रहकर्ता समाजों में श्रम विभाजन इतना अधिक किसी लिंग से क्यों जुड़ा है (जैसे पुरुष शिकार करते हैं, स्त्रियां संग्रह करती हैं)? इस सवाल के कई संभव जवाब हैं। पहला जवाब है कि पुरुष शिकार करते हैं और स्त्रियां संग्रह या अन्य गैर-निर्वाह कार्य करती हैं क्योंकि पुरुष अधिक शक्तिशाली होते हैं और बड़े शिकार का पीछा करने के लिए उनमें ज़्यादा सहनशक्ति होती है। एक अन्य जवाब है कि चूंकि स्त्रियां बच्चे पैदा करती हैं और उनकी देखभाल करती हैं, इसलिए उनके पास शिकार के लिए ज़रूरी गतिशीलता की आज़ादी नहीं होती (Friedl 1975)। तीसरा जवाब यह है कि संग्रह करना, खास तौर से घर के आसपास, अपेक्षाकृत सुरक्षित कार्य है जिसमें गर्भवती स्त्री या बच्चों की देखभाल करने वाली स्त्री के लिए कोई खतरा नहीं है (Brown 1970b)। अपने बच्चों को जीवित रखना और उनके लिए प्रावधान करना संग्रहकर्ता समाजों में स्त्रियों की गतिविधियों का बुनियादी पहलू है (Gurven and Hill 2009)।

इनमें से प्रत्येक सिद्धांत के समर्थन और विरोध में प्रमाण हैं। कुछ शिकारी-संग्रहकर्ता समाजों में पुरुष और स्त्री दोनों ही शिकार व संग्रह का काम करते हैं। इसके अलावा, स्त्रियां कई मर्तबा ऐसे काम करती हैं जिनमें शक्ति व स्टेमिना की ज़रूरत होती है, जैसे भोजन, पानी, जलाऊ लकड़ी और बच्चों को ढोना। अर्थात, संसाधनों का संग्रह कोई बैठे-बैठे की जाने वाली आराम की गतिविधि नहीं है। इस प्रमाण के आधार पर, मानव

वैज्ञानिक लिंडा मैरी फेडिगन (Linda Marie Fedigan 1986) ने सुझाव दिया था कि भारी काम और बच्चों की देखभाल के काम परस्पर अलग-अलग नहीं हैं, जैसा कि पहले कहा जाता था।

अपने "Why do Men Hunt?: A Reevaluation of 'Man the Hunter ' and the Sexual Division of Labor" (पुरुष शिकार क्यों करते हैं?: 'शिकारी पुरुष' और लिंग-आधारित श्रम विभाजन का पुन: आकलन) शीर्षक के अपने निबंध में माइकेल गुर्वन और किम हिल (Michael Gurven और Kim Hill 2009) ने शिकारी संग्रहकर्ता समाजों में पुरुष-स्त्री गतिविधियों की मौजूदा व्याख्याओं का आकलन किया है। पुरुष द्वारा शिकार करने की पारंपरिक व्याख्या परिवार के लिए व्यवस्था करने की रही है। अलबत्ता, संग्रह करने के अन्य तरीकों की अपेक्षा मांस के लिए शिकार करना कम भरोसेमंद और ज़्यादा महंगा है। एक परिकल्पना यह सुझाई गई थी कि पुरुष यह उच्च लागत व कम उपज वाली शिकार की गतिविधि संभोग का अवसर हासिल करने हेतु स्त्रियों को आकर्षित करने के लिए अपनी हैसियत और शारीरिक क्षमता की 'नुमाइश' करने हेतु करते हैं (Hawkes and Bliege-Bird 2002; Hawkes et al. 2010)। इसे 'महंगा संकेत मॉडल' कहते हैं। गुर्वन और हिल इस बात के लिए एक समग्र, बहुआयामी मॉडल प्रस्तुत करते हैं कि क्यों पुरुष शिकार करते हैं (2009)। उनके मॉडल में 'महंगा संकेत' एक कारक है जो पुरुषों को शिकार की गतिविधि के लिए प्रेरित करता है, किंतु इसके साथ बच्चों में निवेश (पालकीय निवेश), साझेदारी और सहयोग के ज़रिए गठबंधन निर्माण से मिलने वाला सामाजिक बीमा, और शिकारी-संग्रहकर्ता समूह के बीमार या अक्षम लोगों की मदद करने जैसे अन्य कारक भी शामिल करने होंगे। यह मॉडल इस बात की छानबीन करने का एक उपयोगी रास्ता प्रदान करता है कि क्यों शिकारी-संग्रहकर्ता समाजों में पुरुष शिकार करते हैं।

शिकारी संग्रहकर्ताओं में जेंडर भूमिकाओं और जीवन निर्वाह को लेकर कई शोध प्रश्न भावी मानव वैज्ञानिकों के लिए बचे हैं। अधिकांश हालिया प्रमाण बताते हैं कि जेंडर भूमिकाओं और जीवन निर्वाह की गतिविधियों में उतना सख्त विभाजन नहीं हैं जितना पहले सोचा जाता है। इन मामलों में, ऐसा प्रतीत होता है कि पुरुष व स्त्री दोनों के लिए जीवन निर्वाह की रणनीतियों में खुलापन है और व्यवहार काफी लचीला है।

स्त्री की हैसियत जेंडर भूमिका और जीवन निर्वाह से नज़दीकी से जुड़ा प्रश्न स्त्रियों की सामाजिक हैसियत का है। आनुभविक आंकड़ों से तो लगता है कि अन्य समाजों की अपेक्षा शिकारी-संग्रहकर्ता समाजों में जेंडर सम्बंध ज़्यादा समतामूलक होते हैं - अर्थात पुरुषों व स्त्रियों की हैसियत लगभग बराबर होती है (Friedl 1975; Shostak 1981; Endicott 1988; Lepowsky 1993; Ward 2003)। इसमें स्त्रियों द्वारा भोजन संग्रह में किए गए योगदान की झलक मिलती है।

उदाहरण के लिए, रिचर्ड ली (Richard Lee 1981, 2013) बताते हैं कि आर्थिक गतिविधियों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका के फलस्वरूप, Ju/'hoansi San स्त्रियां राजनैतिक निर्णय प्रक्रिया में पुरुषों के बराबर भागीदारी करती हैं। Ju/'hoansi San स्त्रियों के साथ सम्मानजनक व्यवहार किया जाता है, और पुरुष वर्चस्व या स्त्रियों के साथ बदसलूकी का कोई प्रमाण नहीं है। यही बात Mbuti, Semang, और Agta के साथ-साथ अन्य शिकारी-संग्रहकर्ताओं पर भी लागू होती है। अलबत्ता, यह परिकल्पना सुझाती है कि जिन समाजों में भोजन आपूर्ति में स्त्रियों का योगदान कम महत्वपूर्ण है या उसे कम महत्व दिया जाता है, उनमें स्त्रियों की हैसियत कमतर होती है। उदाहरण के लिए, कुछ पारंपरिक एस्किमो तथा अन्य उत्तरी शिकारी-संग्रहकर्ता समूहों, जिनके लिए शिकार ही एकमात्र जीवन निर्वाह की गतिविधि है, में स्त्रियां परिवार के लिए संसाधन के नाम पर ज़्यादा कुछ नहीं जुटातीं। नतीजतन, ये समाज राजनैतिक व आर्थिक मामलों में अधिक पितृसत्तात्मक या पुरुष प्रधान रहे हैं (Friedl 1975; Martin and Voorhies 1975; Lepowsky 1993; Ward 2003)।

ज़ाहिर है, शिकारी-संग्रहकर्ता समाजों में स्त्रियों और पुरुषों के बीच बराबरी सार्वभौमिक नहीं है। Ju/'hoansi San और Agta जैसे कुछ समूहों में स्त्रियों को ज़्यादा बराबरी हासिल है जबकि पारंपरिक एस्किमो जैसे अन्य समूहों में स्त्रियों की हैसियत निम्न है। सर्वाधिक समतामूलक समूहों में भी पुरुषों को कुछ सांस्कृतिक लाभ मिलता है। कुछ मामलों में मांस को ज़्यादा लज़ीज़ और शानदार भोजन माना जाता है, और यह बात पुरुष की हैसियत में इजाफा करती है। अलबत्ता, एक व्यापक, बहु-सांस्कृतिक परिप्रेक्ष्य में जेंडर भूमिकाओं को देखें तो शिकारी संग्रहकर्ता समाजों में अधिकांश अन्य समाजों की अपेक्षा अधिक समानता होती है।

उम्र

लगभग सारे शिकारी-संग्रहकर्ता समाजों में, रिश्तेदारी और जेंडर की तरह, उम्र को भी समाज में व्यक्तियों के स्थान निर्धारित करने का एक आधार बनाया जाता है। उम्र-स्तरीकरण और ऊंच-नीच के क्रम के लिहाज़ से समाज-समाज में काफी विविधता होती है। यह पर्यावरण और सांस्कृतिक परिस्थिति पर निर्भर करता है।

बुज़ुर्गों की भूमिका शिकारी संग्रहकर्ता समाजों में वृद्धावस्था की परिभाषा कालक्रम के हिसाब से कम और सामाजिक हैसियत में कतिपय परिवर्तनों - जीवन निर्वाह के कामों में कम भागीदारी या काम के पैटर्न में परिवर्तन या दादा-दादी, नाना-नानी बन जाने से जुड़े परिवर्तनों - के आधार पर ज़्यादा की जाती है (Glascock 1981)। अलबत्ता, सारे समाजों में वृद्धावस्था की शुरुआत को आंशिक रूप से औसत आयु के आधार पर परिभाषित किया जाता है। शिकारी संग्रहकर्ता समाजों के बारे में सामान्य जनांकिक व जनजातीय आंकड़ों से लगता है कि 'वृद्धावस्था' की परिभाषा में 45 से लेकर 75 साल तक की विविधता होती है।

बुढ़ाने को लेकर एक प्रारंभिक अध्ययन में परिकल्पना दी गई थी कि शिकारी संग्रहकर्ता समाजों में बूढ़े लोगों के पास सत्ता बहुत कम होती है और उनकी हैसियत निम्न होती है (Simmons 1945)। यह तर्क इस मान्यता पर टिका था कि चूंकि शिकारी संग्रहकर्ता समाजों में बुज़ुर्ग लोगों का नियंत्रण बहुत कम भौतिक संपत्ति पर होता है, जिसे वे युवा पीढ़ी के साथ सौदेबाज़ी के लिए इस्तेमाल कर सकें, इसलिए बुज़ुर्ग लोग निम्न हैसियत का प्रतिनिधित्व करते हैं। इस परिकल्पना के अनुसार बुज़ुर्ग लोगों की हैसियत का सम्बंध जीवन निर्वाह और आर्थिक गतिविधियों से है। जब शिकारी संग्रहकर्ता व्यक्ति उम्रदराज़ होते हैं और उनकी शक्ति व ऊर्जा घटने लगती है, तो जीवन निर्वाह में उनका योगदान सीमित हो जाता है और तदनुसार उनकी हैसियत में कमी आती है।

अलबत्ता, अधिकांश मौजूदा जनजातीय आंकड़े इस परिकल्पना का समर्थन नहीं करते। उदाहरण के लिए, भारत के अंडमान द्वीपसमूह के शिकारी संग्रहकर्ताओं के एक शुरुआती विवरण में ए. आर. रैडक्लिफ-ब्राउन (A. R. Radcliffe-Brown ([1922] 1964) ने बुज़ुर्ग पुरुषों को दिए जाने वाले सम्मान और इज़्ज़त का ज़िक्र किया था। अफ्रीका के

मध्य कॉन्गो के Mbuti में उम्र हैसियत का निर्धारण करने वाला एक प्रमुख कारक है और बुज़ुर्ग लोग समूह में सबसे महत्वपूर्ण आर्थिक व राजनैतिक निर्णय लेते हैं। हालांकि युवा लोग कभी-कभी बुज़ुर्गों का खुलेआम मखौल बना लेते हैं किंतु बुज़ुर्ग लोग अपने सांस्कृतिक ज्ञान की वजह से Mbuti समाज पर हावी रहते हैं (Turnbull 1983)।

जिन मानव वैज्ञानिकों ने Ju/'hoansi San समूह का अध्ययन किया है, वे बताते हैं कि हालांकि बुढ़ापे में बहुत कम भौतिक सुरक्षा होती है किंतु बुज़ुर्गों को परित्यक्त नहीं किया जाता और उनकी हैसियत अपेक्षाकृत उच्चतर बनी रहती है (Thomas 1958; Lee 1979, 2013)। इस तथ्य के बावजूद कि बुज़ुर्ग लोग जीवन निर्वाह की गतिविधियों में उत्पादक भूमिका नहीं निभाते, रिश्तेदारियों के नज़दीकी बंधनों के चलते वे सुरक्षित बने रहते हैं।

मानव वैज्ञानिक पाते हैं कि शिकारी संग्रहकर्ता समाजों में बुज़ुर्ग लोगों की हैसियत युवा लोगों की अपेक्षा ऊंची होती है। अपने संचित ज्ञान, जिसकी ज़रूरत जीवन निर्वाह की गतिविधियों में, राजनैतिक निर्णय लेने में और बौद्धिक व आध्यात्मिक मार्गदर्शन में होती है, की बदौलत बुज़ुर्ग लोगों का सम्मान किया जाता है। मानव स्मृति इन समाजों के लिए पुस्तकालयों का काम करती है और यह संस्कृति के संरक्षण तथा ज्ञान के संचार के लिए आवश्यक है। सांस्कृतिक परंपराओं को याद किया जाता है और पीढ़ी-दर-पीढ़ी सौंपा जाता है और इन परंपराओं पर नियंत्रण सम्मान का आधार बनता है।

घोर अभाव की स्थितियों के अलावा, शिकारी संग्रहकर्ता समाजों में बुज़ुर्गों के साथ बदसलूकी नहीं होती। विभिन्न किस्म के शिकारी संग्रहकर्ता समाजों में बुज़ुर्गों के साथ व्यवहार की अपनी छानबीन में शोधकर्ताओं ने निष्कर्ष निकाला है कि बुज़ुर्गों के विरुद्ध कार्य, जैसे परित्याग, एक्सपोज़र, और हत्या सिर्फ इन्तहाई पर्यावरणीय परिस्थितियों में ही होते हैं, जब बुज़ुर्गों को एक बोझ माना जाता है (Glascock 1981)। ऐसी करतूतें एस्किमो जैसे समूहों में दस्तावेज़ीकृत हुई हैं किंतु ये अपवाद ही लगती हैं। अधिकांश शिकारी संग्रहकर्ता समाजों में बुज़ुर्गों का ख्याल रखना युवाओं का नैतिक दायित्व होता है।

बच्चों की देखभाल टर्नबुल (Turnbull 1983) ने टिप्पणी की है कि बुज़ुर्ग दादा-दादी, नाना-नानी (ग्रांडपैरेंट्स) की एक महत्वपूर्ण सार्वभौमिक भूमिका बच्चे संभालने की है। जहां शिकारी संग्रहकर्ता समाजों में पालक शिकार व संग्रह जैसे जीवन निर्वाह के कामों में जुटे होते हैं, ग्रांडपैरेंट्स बच्चों को संभालने का काम करते हैं। Ju/'hoansi San और Mbuti में जब मां संग्रह कार्य के लिए जाती है तो बुज़ुर्ग ग्रांडपैरेंट्स बच्चों की देखभाल करते हैं। बुज़ुर्ग लोग पोते-पोतियों, नाति-नातिनों को समाज के हुनर, मानक और मूल्य सिखाते हैं। बुज़ुर्ग Mbuti, जो अपना समय कहानियां और मिथक व दंतकथाएं सुनाते हुए व्यतीत करते हैं, पर विचार करते हुए टर्नबुल ने संकेत किया है कि संस्कृति के संरक्षण में बुज़ुर्ग Mbuti की भूमिका का यह प्रमुख कार्य है। अधिकांश शिकारी संग्रहकर्ता समाजों में युवाओं और बुज़ुर्गों के सम्बंध का यह सामान्य पैटर्न है। हाल में, मानव वैज्ञानिक क्रिस्टेन हॉक्स (Kristen Hawkes 2004) ने इस बात का अध्ययन किया है कि कैसे 'ग्रांडमदर प्रभाव' और स्त्रियों की लंबी आयु ने बच्चों की देखभाल और छोटे बच्चों के लिए पोषण का प्रावधान करके शिकारी संग्रहकर्ता समाजों में उल्लेखनीय जीवन-मूल्य (survival value) प्रदान किया है। वे बताती हैं कि अतीत व वर्तमान दोनों शिकारी संग्रहकर्चा समाजों में एक-तिहाई या उससे भी ज़्यादा स्त्रियां 45 वर्ष से ज़्यादा जीती हैं। रजोनिवृत्ति उपरांत इन स्त्रियों के जीवित रहना इन शिकारी संग्रहकर्ता समुदायों में ग्रांडचिल्ड्रन के जीवित रहने और खुशहाली के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण होगा।

जनजातियों में सामाजिक संरचना

10.3 जनजातीय समाजों में सामाजिक संरचना, परिवार, विवाह, वंश-समूह, जेंडर और उम्र का विवरण दीजिए।

जनजातीय समाज शिकारी संग्रहकर्ता समाजों से इस मायने में भिन्न हैं कि जनजातीय लोग अपने निर्वाह के लिए अधिकांश भोजन छोटे पैमाने की खेती (बागवानी) और पशुओं को पालतू बनाकर (पशुपालन द्वारा) पैदा करते हैं। भोजन उत्पादन के विकास का सम्बंध नए किस्म के सामाजिक संगठन से है। दलों (bands) के समान, जनजातियों में भी सामाजिक संगठन मूलत: रिश्तेदारियों पर आधारित होता है। अलबत्ता, जनजातीय समाजों, जिन्हें नए किस्म की समस्याओं से जूझना होता है, में रिश्तेदारियों, विवाह

और अन्य सामाजिक प्रणालियों को लेकर नियम में कहीं ज़्यादा विस्तृत होते हैं। इन नई समस्याओं में अपेक्षाकृत घनी आबादियां, ज़मीन या पशुधन पर नियंत्रण और कभी-कभी युद्ध भी शामिल होते हैं।

नए व विविध किस्म के सामाजिक संगठन ने जनजातीय समाजों को खाद्य उत्पादन की नई परिस्थितियों के साथ तालमेल बनाने में समर्थ बनाया है। शिकारी संग्रहकर्ताओं, जिन्हें कभी-कभी एक-दूसरे से अलग छोटे-छोटे संगठित दलों में रहना पड़ता है, के विपरीत खाद्य उत्पादकों को ऐसे सामाजिक सम्बंध बनाने पड़ते हैं जो ज़्यादा दृढ़ और स्थायी हों। जनजातीय सामाजिक संगठन परिवार, वंश-समूह, जेंडर और उम्र पर आधारित होता है। जनजातीय समाजों का सामाजिक संगठन दल-आधारित समाजों की अपेक्षा कहीं ज़्यादा पेचीदा होता है।

परिवार

जनजातीय समाजों में सबसे आम सामाजिक समूह विस्तृत परिवार होता है। अधिकांश विस्तृत परिवारों में तीन पीढ़ियां होती हैं - ग्रांडपैरेंट्स, पालक और बच्चे - हालांकि ऐसे परिवारों में विवाहित भाई-बहन और उनके वैवाहिक साथी और बच्चे भी हो सकते हैं। एकल परिवार के मुकाबले विस्तृत परिवार अपेक्षाकृत बड़ी व ज़्यादा स्थिर सामाजिक इकाई होती है जो घरेलू आर्थिक व जीवन निर्वाह की गतिविधियों को संगठित करने व चलाने में ज़्यादा कारगर होती है (Pasternak 1976; L. Stone 2010)। अलबत्ता, विस्तृत परिवार भी जनजातीय समाजों में सहयोग, श्रम और परस्परता की पेचीदा ज़रूरतों की पूर्ति नहीं कर सकते। इन ज़रूरतों की पूर्ति के लिए जनजातीय समूहों ने और भी अधिक 'विस्तृत' सामाजिक संगठन विकसित किया है, जो रिश्तेदारी और गैर-रिश्तदारी दोनों तरह के तत्वों पर आधारित है।

वंश-समूह

जनजातीय समाजों में पाया जाने वाला एक ज़्यादा विस्तारित सामाजिक समूह वंश-समूह होता है। वंश-समूह एक सामाजिक समूह होता है जिसकी पहचान एक व्यक्ति

द्वारा होती है ताकि वास्तविक या काल्पनिक रिश्तेदारियां तय की जा सकें। वंश-समूह जनजातीय समाजों में प्रमुख सामाजिक इकाई होती है।

एक प्रमुख किस्म का वंश-समूह खानदान (lineage) पर आधारित होता है। मानव वैज्ञानिक एक खानदान की परिभाषा ऐसे वंश-समूह के रूप में करते हैं जो सम्बंधियों से मिलकर बना होता है, जो सबके सब अपने सम्बंध किसी आम तौर पर ज्ञात पूर्वज के साथ या तो खून के सम्बंध से या विवाह के सम्बंध से खोजते हैं। खानदान में हर व्यक्ति को पता होता है कि उस पूर्वज से उसका सम्बंध क्या है।

एक-रैखीय वंश-समूह

एक-रैखीय वंश-समूह ऐसे वंश-समूह होते हैं जो अपने वंश की जड़ें वंश के एक ही ओर से (यानी एक ही लिंग से) तलाश करते हैं। सबसे आम एक-रैखीय वंश-समूह पितृवंशीय समूह या पितृवंश होते हैं। इनमें लोग अपने वंश का पता एक साझा पुरुष पूर्वज से शुरू करके पुरुषों के आधार पर ही करते हैं (देखें चित्र 10.2 ऊपर)। पितृवंशीय समूह जनजातीय समाज में खानदान का सबसे आम रूप है (Pasternak 1976; L. Stone 2010)।

एक-रैखीय वंश-समूह का एक अन्य उदाहरण मातृवंशीय समूह या मातृवंश है। इसके सदस्य अपनी वंशावली आम तौर पर ज्ञात किसी स्त्री पूर्वज से जोड़ते हैं (देखें चित्र 10.2 नीचे)। मातृवंशीय खानदान सबसे अधिक बागवानी समाजों में पाए जाते हैं, हालांकि ये सबसे आम संगठनात्मक रूप नहीं हैं। Iroquois, Hopi और Crow जैसे बहुत थोड़े से उत्तर अमरीकी जनजातीय समाजों में; पूरे मध्य व दक्षिण अफ्रीका के कई जनजातीय समाजों में; और प्रशांत महासागर के द्वीपों पर रहने वाले कुछ लोगों में मातृवंशीय खानदान पाए जाते हैं (L. Stone 2010)।

चित्र 10.2 एक पितृवंशीय प्रणाली (ऊपर), एक मातृवंशीय प्रणाली नीचे

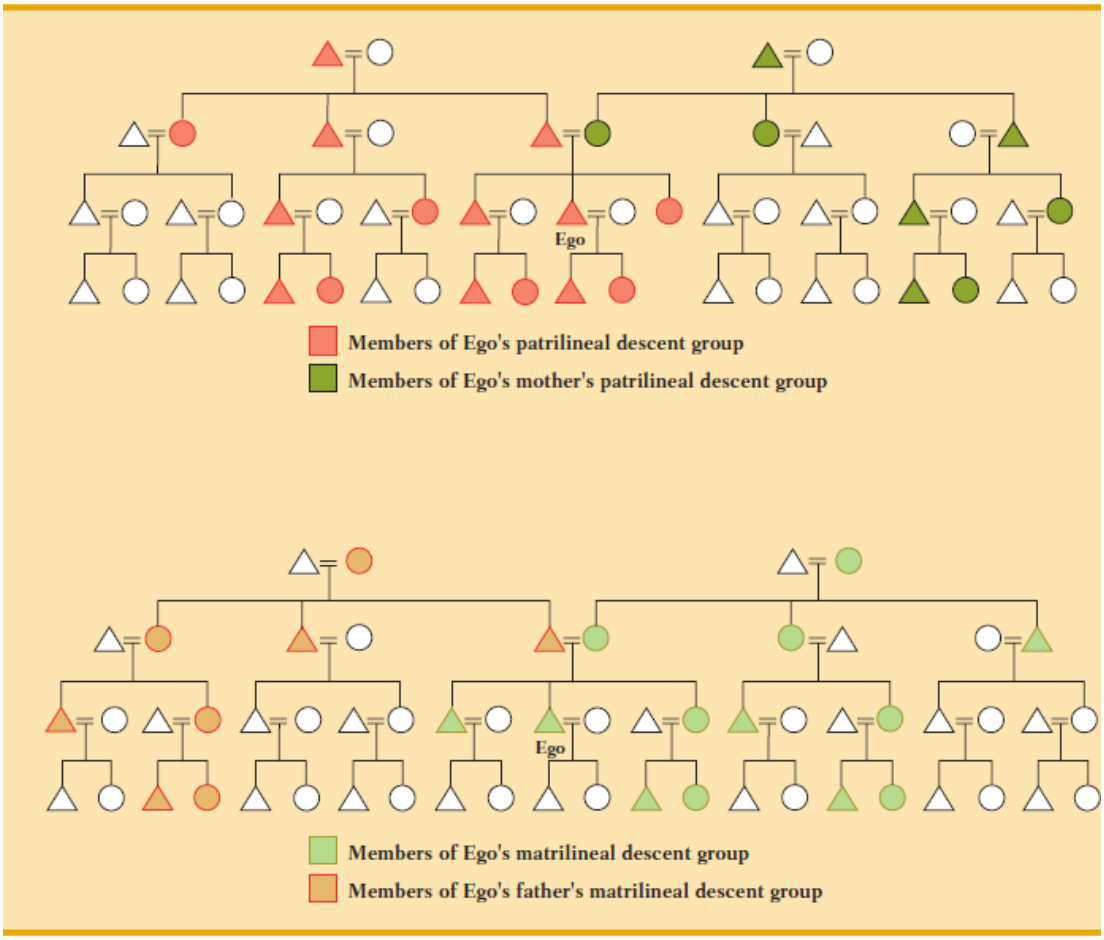

एक-रैखीय वंश-समूह का एक बिरला उदाहरण दोहरे वंश का है जिसमें पितृवंशीय व मातृवंशीय तत्व मिले रहते हैं। इस तरह के सामाजिक संगठन में कोई भी व्यक्ति अपने पिता और माता दोनों के वंश का सदस्य होता है। कई सारे अफ्रीकी जनजातीय समाजों, जैसे नाइजीरिया के Afikpo Igbo, में दोहरे वंश पर आधारित सामाजिक संगठन पाया जाता है (Ottenberg 1965)।

उभय-वंशीय वंश-समूह एक अन्य प्रकार के वंश-समूह को उभयवंशीय समूह कहते हैं। उभयवंशीय वंश-समूह किसी व्यक्ति के वंशानुक्रम सम्बंधों को या तो पुरुष वंश या स्त्री वंश की ओर से देखकर बनाया जाता है। ऐसे समूह के सारे सदस्य किसी पुरुष या स्त्री विशेष के ज़रिए एक-दूसरे से सम्बंधित नहीं होते। अर्थात तकनीकी दृष्टि से देखा जाए तो इस प्रकार का वंश-समूह एक-रैखीय नहीं होता। आम तौर पर जब कोई व्यक्ति

अपने पिता या माता के वंश-समूह से सम्बद्धता का निर्णय कर लेता/ती है तो वह उसी वंश-समूह में बना रहता/ती है। चूंकि व्यक्ति स्वयं अपना वंश चुन सकता/ती है, उभयवंश प्रणाली प्राय: आर्थिक व राजनैतिक रणनीति बनाने का ज़्यादा अवसर देती है। यह चुनाव करते हुए आम तौर पर दो पारिवारिक समूहों की तुलनात्मक आर्थिक व राजनैतिक ताकत का ध्यान रखा जाता है।

द्विपक्षीय वंशानुक्रम कई सारे जनजातीय समाज द्विपक्षीय वंशानुक्रम का पालन करते हैं। इसमें सम्बंधियों को एक साथ परिवार के मां तथा पिता पक्ष की ओर से चिंहित किया जाता है। इस तरह का वंशानुक्रम किसी खास किस्म के वंश-समूह में परिणत नहीं होता। इसी वजह से यह जनजातीय समाजों में बहुत आम नहीं है। जिन जनजातीय समाजों में द्विपक्षीय वंशानुक्रम पाया जाता है, उनमें आर्थिक, सामाजिक व राजनैतिक उद्देश्यों के लिए सम्बंधियों को लामबंद करने हेतु एक ढीले-ढाले समूह, जिसे किंडर्ड (Kindred) कहते हैं, का उपयोग किया जाता है। किंडर्ड किसी परिवार के मातृ पक्ष और पितृ पक्ष की ओर से सम्बंधित लोग होते हैं जिन्हें कोई व्यक्ति महत्वपूर्ण रिश्तेदारियों के रूप में मानता/ती है (चित्र 10.3 देखें)। उदाहरण के लिए यूएस समाज में जब कोई व्यक्ति अपने सारे सम्बंधियों की बात करता/ती है तो वह एक किस्म के द्विपक्षीय किंडर्ड की बात होती है। अलबत्ता, जनजातीय समाज में इस तरह के द्विपक्षीय किंडर्ड की भूमिका की तुलना में यूएस समाज में इसका कोई कामकाजी महत्व नहीं है।

चित्र 10.3 किंडर्ड के अंतर्गत परिवार के दोनों पक्षों के रिश्तेदार आते हैं जिन्हें ईगो महत्वपूर्ण रिश्तेदार मानता है

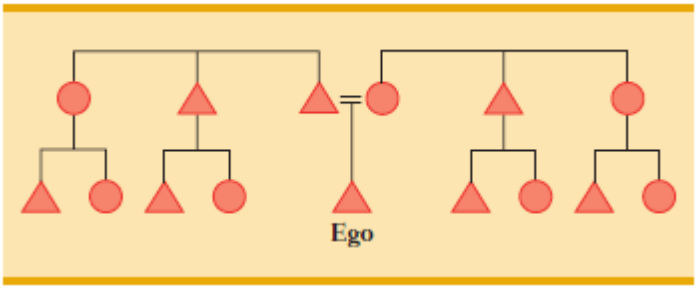

अज्ञात पूर्वज या कुछ मामलों में किसी पवित्र पौधे या पशु आत्मा को मानते हैं। गोत्र के सदस्यों का आम तौर पर एक साझा नाम होता है किंतु वे किसी वास्तविक पूर्वज से

सम्बंध नहीं जोड़ पाते। कुछ गोत्र पितृ-गोत्र होते हैं जिनमें समूह की पहचान किसी पुरुष के ज़रिए होती है जिसके सब वंशज हैं। अन्य गोत्र मातृ-गोत्र होते हैं जिनमें वंशानुक्रम स्त्री के माध्यम से पहचाना जाता है। कुछ जनजातीय समाजों में वंश और गोत्र दोनों होते हैं। कुछ मामलों में गोत्र वंशों से मिलकर बनते हैं जो अपनी उत्पत्ति किसी काल्पनिक पूर्वज या पवित्र आत्मा से जोड़ते हैं। ऐसी प्रणालियों में गोत्र व्यापक समूह होते हैं जो कई वंशों से मिलकर बन होते हैं।

फ्रेट्रीस (Phratries) और मॉइटीस (Moities) जनजातीय समाजों में पाए जाने वाले ज़्यादा ढीले-ढाले ढांचे फ्रेट्रीस और मॉइटीस हैं। फ्रेट्रीस दो-तीन गोत्रों को मिलकर बने समूह होते हैं। फ्रेट्रीस के सदस्य आम तौर पर मानते हैं कि उनके बीच कुछ ढीले-ढाले वांशिक सम्बंध हैं। मॉइटीस (फ्रांसीसी शब्द से बना है जिसका अर्थ होता है 'आधा') गोत्र अथवा फ्रेट्रीस से मिलकर बनते हैं जो पूरे समाज को दो बराबर भागों में बांट देते हैं। कुछ मामलों में, जैसे उत्तर अमरीकी Hopi में मॉइटी विभाजन गांव को दो भागों में बांट देता है। लोगों को अपने मॉइटी से बाहर विवाह करना होता है। इसके अलावा, आर्थिक व राजनैतिक संगठन तथा धार्मिक गतिविधियों की दृष्टि से प्रत्येक मॉइटी के विशिष्ट कार्य होते हैं। जिन जनजातीय समाजों में फ्रेट्रीस और मॉइटीस पाए जाते हैं वहां ये सामाजिक सम्बंधों के संगठित करने के लिए मॉडल्स उपलब्ध कराते हैं।

वंश-समूहों के कार्य

वंश-समूह जनजातीय समाजों को विशिष्ट सांगठनिक लक्षण प्रदान करते हैं। ये कार्पोरेट सामाजिक इकाइयां बन सकते हैं, अर्थात ये किसी व्यक्ति-विशेष के जीवन काल के उपरांत भी टिके रहते हैं। लिहाज़ा ये वस्तुओं व सेवाओं के उत्पादन, लेन-देन और वितरण के नियमन में लंबे समय तक भूमिका निभा सकते हैं। ज़मीन, पशुधन और अन्य संसाधनों पर पारिवारिक अधिकार को प्राय: इन कार्पोरेट वंश-समूहों के संदर्भ में परिभाषित किया जाता है।

वंश-समूह और आर्थिक सम्बंध वंश-समूह जनजातीय समाजों को अपने आर्थिक अधिकारों व दायित्वों का प्रबंधन करने में समर्थ बनाते हैं। वंश-समूह के अंदर अलग-अलग एकल परिवारों को विशिष्ट ज़मीनों और पशुओं पर अधिकार प्राप्त होता है।

अधिकांश मामलों में बागवानी कबीले को उनके पूरे खानदान की ज़मीन का अधिकार विरासत में मिलता है। खानदान इस ज़मीन को अपने सदस्यों में जिस तरीके से बांटता है, मानव वैज्ञानिक (और वकील) उसे उपयोग का अधिकार (usufruct rights) या ज़मीन पर कार्पोरेट अधिकार कहते हैं। कुछ ज़्यादा विकसित पितृ-वंशीय बागवानी लोगों में पीढ़ी-दर-पीढ़ी ज़मीन का हस्तांतरण सबसे उम्रदराज़ पुरुष के माध्यम से किया जाता है। विरासत के इस पैटर्न को प्राइमोजेनिचर कहते हैं। अपेक्षाकृत कम प्रचलित पैटर्न अल्टिमोजेनिचर है, जिसमें ज़मीन-ज़ायदाद का मालिक सबसे युवा पुत्र होता है।

बागवानी समाजों में, पितृवंश के अंतर्गत अलग-अलग परिवारों को बागवानी के भूखंडों पर बागवानी का संयुक्त अधिकार होता है। उदाहरण के लिए, Yanomamö में गांव आम तौर पर दो वंशों से बने होते हैं; इन दो वंशों के परिवार अपने-अपने भूखंडों पर खेती करते हैं (Chagnon 2012)। इस मायने में Yanomamö पितृवंश एक कार्पोरेट समूह जैसा है। इन पितृवंशों के ज़रिए हैसियत, अधिकारों और दायित्वों का हस्तांतरण बगैर किसी विवाद या टकराव के होता है। इन जनजातीय समाजों में ज़मीन को आम तौर पर अलग-अलग भूखंडों में बांटा नहीं जाता और इसे अन्य वंश-समूहों को बेचा नहीं जा सकता और न ही अदला-बदली की जा सकती है।

Iroquois जनजातीय समाज मातृवंशीय कार्पोरेट समूह पर आधारित था। Iroquois में विभिन्न मातृवंश एक बड़े घर (longhouses) में एक साथ रहते थे और औज़ारों व बाड़ी के भूखंडों पर उनका सामूहिक अधिकार होता था। मक्का व अन्य फसलों की झूम खेती में ये मातृवंश उत्पादन की बुनियादी इकाई थे। संपत्ति का उत्तराधिकार मातृवंशीय आधार पर कार्पोरेट समूह की सबसे उम्रदराज़ स्त्री के ज़रिए मिलता था। मातृवंश में उसकी हैसियत सर्वोपरि होती थी और वह ज़मीन तथा अन्य आर्थिक अधिकारों व संसाधनों के आवंटन के निर्णयों को प्रभावित करती थी (Brown 1970a)।

द्विपक्षीय वंश-समूह वाले समाजों में कभी-कभी उत्पादन व लेन-देन के लिए बुनियादी श्रम-सहयोग के समूह किंडर्ड होते हैं। द्विपक्षीय समाजों में रहने वाले लोग आर्थिक सहायता के लिए मातृ पक्ष का सहारा भी ले सकते हैं और पितृ पक्ष का भी। लिहाज़ा किंडर्ड कहीं अधिक ढीले-ढाले ढंग से गठित कार्पोरेट समूह होता है। किंडर्ड निहायत

लचीला होता है और यह कतिपय पर्यावरणीय परिस्थितियों में बेहतर अनुकूलन की गुंजाइश देता है।

विवाह

कार्पोरेट वंश-समूह जनजातीय समाजों में वैवाहिक सम्बंध के निर्धारण में भूमिका निभाते हैं। शिकारी-संग्रहकर्ताओं के समान, अधिकांश जनजातीय लोग विभिन्न कार्पोरेट समूहों के बीच विवाह के एक्सोगैमस नियमों का पालन करते हैं अर्थात लोग आम तौर पर अपने वंश, किंडर्ड, गोत्र, मॉइटी या फ्रेट्री से बाहर विवाह करते हैं। जनजातीय समाजों में वैवाहिक नियम रिश्तेदारी के बंधनों और समूहों के बीच गठबंधनों को सुनिश्चित करते हैं।

कुछ जनजातीय समाजों में विभिन्न किस्म के कज़िन विवाह प्रचलित हैं। इस बात को चित्र 10.4 में प्रस्तुत किया गया है। उदाहरण के लिए Yanomamö में विभिन्न गांवों के पितृवंशों के बीच डबल क्रॉस कज़िन विवाह और पितृ-स्थानिक निवास का चलन है जिसमें नव विवाहित दम्पति पति के पालकों के साथ रहते हैं। कुल मिलाकर एक पितृवंश के पुरुष अन्य पितृवंश के पुरुषों के साथ बहनों का आदान-प्रदान कर लेते हैं, जिनके साथ वे विवाह करें ऐसा ज़रूरी नहीं है। जब अगली पीढ़ी के पुत्र इस तरह के विवाह को दोहराते हैं, तो उनका विवाह दरअसल एक ऐसी स्त्री से होता है जिससे वे पहले से ही सम्बंधित हैं। पुरुष जिस स्त्री से विवाह करता है, वह उसके पिता की बहन की पुत्री भी होती है और उसकी मां के भाई की पुत्री भी होती है। स्त्री जिस पुरुष से विवाह कर रही है, वह उसकी मां के भाई का पुत्र भी है और पिता की बहन का पुत्र भी। इस किस्म के पितृवंशीय एक्सोगैमस विवाह कई जनजातीय समाजों में प्रचलित हैं। यह एक प्रकार का सीमित वैवाहिक लेन-देन है जो गांवों के बीच आर्थिक व राजनैतिक गठबंधन बनाने में मदद करता है (Chagnon 2012; Hames 2004)।

चित्र 10.4 विभिन्न किस्म के कज़िन विवाह

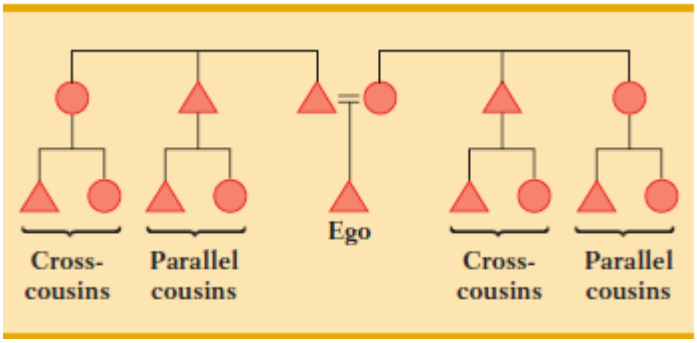

शिया के कई समाज शामिल हैं, मातृपक्षीय क्रॉस-कज़िन विवाह को ज़्यादा तरजीह देते हैं। इस प्रणाली में, पुरुष निरंतर अपनी मां के भाई की पुत्री से विवाह करते हैं। इससे एक ऐसी वैवाहिक प्रणाली बनती है जिसमें स्त्रियां एक पितृवंश से दूसरे में जाती रहती हैं। इस प्रणाली में दो से ज़्यादा गांव शामिल होते हैं। पितृवंश या तो पत्नी-प्राप्तकर्ता या पत्नी-दाता के रूप में विशेषीकृत हो जाते हैं। तीन वंशों - A, B और C - के उदाहरण लेकर मानव वैज्ञानिकों ने वैवाहिक आदान-प्रदान के चक्र खोजे हैं। वंश B सदैव वंश A को स्त्रियां देता है मगर अपनी पत्नियां वंश C से प्राप्त करता है (देखें चित्र 10.5)। क्लॉड लेवी-स्ट्रॉस (Claude Lévi-Strauss 1969) इस तरह की विवाह प्रणाली को सामान्य आदान-प्रदान कहते हैं जो सीमित आदान-प्रदान से भिन्न है जो दो वंशों के बीच होता है।

चित्र 10.5 तीन वंशों के बीच मातृवंशीय क्रॉस कज़िन विवाह

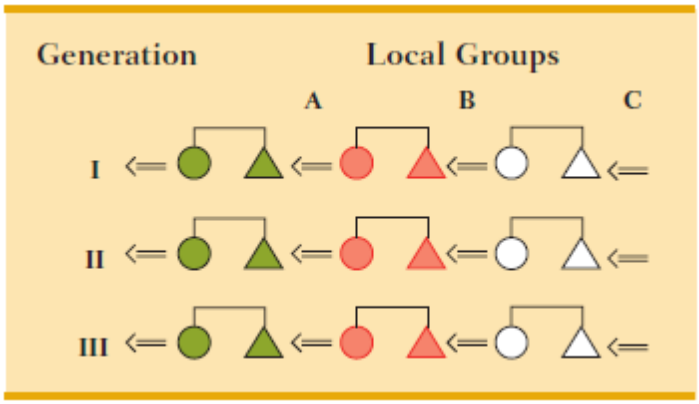

कुछ पितृवंशीय समाजों में एक और किस्म का कज़िन विवाह पाया जात है जिसे समांतर-कज़िन विवाह कहते हैं। इसमें पुरुष अपने पिता के भाई की पुत्री से विवाह

करता है। कज़िन विवाह के अन्य रूपों के विपरीत, समांतर कज़िन विवाह का परिणाम एंडोगैमी - अपने ही वंश के अंदर विवाह - के रूप में सामने आता है (देखें चित्र 10.6)। इस तरह के विवाह Bedouin तथा मध्य पूर्व और उत्तरी अफ्रीका के अन्य कबीलों में पाए जाते हैं।

चित्र 10.6 पितृपक्षीय समांतर कज़िन विवाह

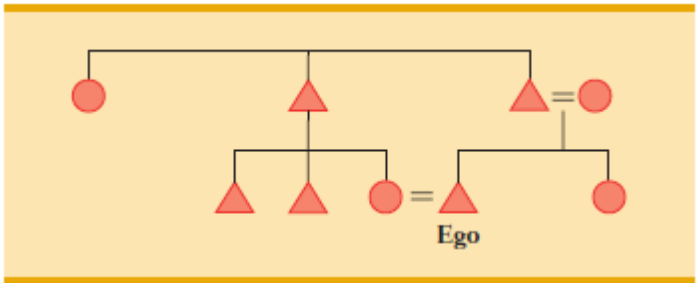

बहु-पत्नी प्रथा अंतर-संस्कृति शोध ने दर्शाया है कि बहु-पत्नी प्रथा, जिसमें एक पुरुष दो या दो से अधिक स्त्रियों से विवाह करता है, जनजातीय समाज में सबसे ज़्यादा बार दिखाई देती है (Ember, Ember, and Low 2007)। एक क्लासिक बहु-संस्कृति अध्ययन में मानव वैज्ञानिक के मार्टिन और बारबरा वूरिस (Kay Martin और Barbara Voorhies 1975) ने रेखांकित किया है कि बहु-पत्नी प्रथा जनजातीय समाजों के लिए पारिस्थितिक व आर्थिक अनुकूलन की रणनीति है। किसी पुरुष की जितनी अधिक पत्नियां होंगी, वह आवंटन और आदान-प्रदान के लिए उतनी ही अधिक ज़मीन या पशुधन पर नियंत्रण करेगा। इससे किसी परिवार में उपलब्ध श्रम की मात्रा और कुल उत्पादकता में वृद्धि होती है। इसके अलावा, इन जनजातीय समाजों में संपत्ति की गणना संतानों की संख्या के आधार पर की जाती है। अपने वंश में प्रजनन करती संतानें प्रतिष्ठा का पैमाना होता है और बच्चे भी परिवार के उत्पादक सदस्य बन जाते हैं।

मानव वैज्ञानिक डगलस व्हाइट (Douglas White 1988) ने बहु-पत्नी प्रथा का विस्तृत अंतर-संस्कृति अध्ययन किया है। वे बहु-पत्नी प्रथा के एक अत्यंत प्रचलित प्रकार का विवरण संपदा-वृद्धिकारक विवाह के तौर पर करते हैं। इसके अंतर्गत बुज़ुर्ग पुरुष उत्पादक श्रम, जिससे उनकी संपत्ति में वृद्धि होती है, पैदा करने के लिए कई पत्नियां इकट्ठी करते हैं। इस संपदा-वृद्धिकारक बहु-पत्नी प्रथा और नई ज़मीन हासिल करने

की क्षमता का निकट सम्बंध देखा गया है। जैसे-जैसे नई ज़मीनें उपलब्ध होती जाती हैं, नई पत्नियों से प्राप्त होने वाला श्रम मूल्यवान हो जाता है। व्हाइट के मुताबिक इस संपदा-वृद्धिकारक बहु-पत्नी प्रथा का सम्बंध युद्ध और पत्नियां जीतने से भी होता है। अपने अनुसंधान में उन्होंने पाया कि कबीलों के युद्ध में अक्सर दूसरे समूह की स्त्रियों को बंदी बनाया जाता था और यह बुज़ुर्ग पुरुषों के लिए नई पत्नियां जुटाने का एक प्रमुख तरीका था।

हाल ही में, ह्युमन रिलेशन्स एरिया फाइल्स से प्राप्त व्यापक अंतरसंस्कृति नमूने के सावधानीपूर्वक किए गए नियंत्रित सांख्यिकीय मल्टीपल रिग्रेशन एनालिसिस से पता चला है कि गैर-राज्य आधारित समाजों में युद्धों की प्रचुरता और युद्धों में पुरुषों को गंवाने का काफी सशक्त सम्बंध बहु-पत्नी विवाहों से है (Ember, Ember, and Low 2007)। इस अनुसंधान से पता चलता है कि युद्ध, जो हम अगले अध्याय में देखेंगे कि जनजातीय समाज का एक बुनियादी गुणधर्म है, की बहुलता का सम्बंध पुरुषों के अभाव और बहु-पत्नी विवाहों में वृद्धि से होता है।

संपदा में वृद्धि के अलावा, बहु-पत्नी प्रथा कुछ व्यक्तियों और वंशों को बड़ी संख्या में बच्चे हासिल करने में समर्थ बनाती है। उदाहरण के लिए, लगभग 25 प्रतिशत Yanomamö विवाह बहु-पत्नीक होते हैं। 20 राजनैतिक नेताओं के एक प्रादर्श समूह में 71 पत्नियां थीं और 172 बच्चे थे (Chagnon and Irons 1979)। Shinbone नाम के एक Yanomamö व्यक्ति के पास 11 पत्नियां और 43 बच्चे थे (Chagnon 2012)। Yanomamö प्रकरण से लगता है कि बहु-पत्नी प्रथा का सम्बंध युद्ध, पुरुषों की उच्च मृत्यु दर और अन्य कारकों से है जिनमें प्रजनन सामर्थ्य भी शामिल है।

वधू की संपदा का आदान-प्रदान कई जनजातीय समाजों में विवाह के साथ संपदा का आदान-प्रदान होता है। आदान-प्रदान का सबसे आम तरीका, खास तौर से पितृवंशीय समाजों में, वधूसंपदा कहलाता है। इसमें वर के वंश-समूह से कुछ संपदा, कई बार शंख और पशुधन जैसा सीमित उपयोग का धन, वधू के वंश को हस्तांतरित की जाती है। वधूसंपदा कोई व्यापारिक लेन-देन नहीं होता जिसके माध्यम से वधू को एक वस्तु में तबदील कर दिया जाए; अर्थात वधू का परिवार उसे वर के परिवार को 'बेचता' नहीं है।

वधूसंपदा विवाह के माध्यम से दो वंश समूहों के बीच परस्परता और अधिकारों को स्थापित करने का प्रतीक है और उसे रेखांकित करती है। किसी पितृवंशीय समाज में, वधू नए कार्पोरेट समूह की सदस्य बन जाती है, जिसे उसके श्रम और अंततः संतानों पर अधिकार प्राप्त हो जाता है। बदले में, पति के समूह की पत्नी के परिवार के प्रति कुछ ज़िम्मेदारियां होती हैं। वधूसंपदा इन परस्पर अधिकारों और दायित्वों को प्रतिबिंबित करती है और वधू के परिवार को वधू के श्रम व उसकी प्रजनन संभावनाओं से वंचित करने की क्षतिपूर्ति करती है। एक बार वधूसंपदा का भुगतान हो गया, तो उसके सारे बच्चे वर के परिवार के होते हैं। इससे दो समूहों के बीच गठबंधन बनाने में मदद मिलती है। वैवाहिक सौदों के एक अंतर-संस्कृति अध्ययन से पता चलता है कि जनजातीय समाजों में वधूसंपदा के लेनदेन का सम्बंध परिवार में नए स्त्री श्रम को जोड़ने, संपत्ति के हस्तांतरण और पुरुषों की हैसियत में वृद्धि से है (Schlegel and Eloul 1988)। वधूसंपदा भुगतान करने में नाकामी आम तौर पर पारिवारिक टकरावों को जन्म देती है जिसमें विवाह को समाप्त करना तक शामिल है।

बहु-पति प्रथा सारे जनजातीय समाज बहु-पत्नीक नहीं हैं। कुछ शिकारी-संग्रहकर्ता समूहों के समान जनजातीय समाजों में भी बहु-पति प्रथा पाई जाती है (Starkweather and Hames 2012)। बहु-पति विवाह एक स्त्री और दो या दो से अधिक पुरुषों के बीच होते हैं। व्यवस्थित औपचारिक बहु-पति विवाह उत्तरी भारत के हिमालय क्षेत्र, श्रीलंका और तिब्बत के भूतपूर्व जनजातीय समाजों में पाए जाते हैं। और अभी हाल तक दक्षिण भारत के Toda कबीलों में पाए जाते थे। क्लासिकल बहु-पति विवाह का सबसे प्रचलित प्रकार बिरादराना बहु-पतित्व है जिसमें भाई एक पत्नी साझा करते हैं।

Toda भैंस पालने वाले पशुपालक थे जिनकी संख्या करीब 800 थी। पारंपरिक रूप से माता-पिता बचपन में ही विवाह सम्बंध तय कर देते थे। जब कोई Toda लड़की किसी व्यक्ति से विवाह करती है, तो वह स्वतः ही सारे भाइयों की पत्नी बन जाती है। इनमें वे भाई भी शामिल होते हैं जिनका अभी जन्म भी नहीं हुआ है। पितृस्थानिक निवास नियम के ज़रिए पत्नी पति के परिवार में जुड़ जाती है। सह-पतियों में यौन ईर्ष्या के प्रमाण बहुत कम हैं। यदि पत्नी गर्भवती हो जाती है, तो सबसे बड़ा भाई बच्चे के पालकत्व का दावा करता है। अन्य सह-पति समाज-वैज्ञानिक अर्थ में 'पिता' होते हैं और

बच्चे के संदर्भ में उनके कुछ अधिकार होते हैं, जैसे परिवार के लिए उनका श्रम। जैविक पालकत्व को बहुत महत्वपूर्ण नहीं माना जाता था। Toda में बहु-पति विवाह के विकास की सबसे प्रचलित व्याख्या यह है कि कन्या शिशु हत्या प्रचलित थी, जिसकी वजह से स्त्रियों की कमी थी (Rivers [1906] 1967; Oswalt 1972; Walker 1986)।

औपचारिक बहु-पति प्रथा के अन्य मामलों में, जैसे हिमालय क्षेत्र में, ज़मीन व संसाधनों के अभाव ने इसे मज़बूत किया था। लैन्सी लेवाइन ने पाया कि उत्तर-पश्चिमी नेपाल के Nyinba में आदर्श विवाह वह होता है जिसमें एक स्त्री किसी अन्य परिवार के तीन भाइयों से विवाह करे (1988; Boyd and Silk 2012)। इससे फायदा यह होता है कि एक पति ज़मीन पर खेती करता है, दूसरा पशुओं को संभालता है और तीसरा व्यापार में लग सकता है। लेवाइन ने देखा कि बहु-पति विवाह में पुरुषों को अपनी संतानों के पालकत्व की बहुत चिंता रहती है और वे अपने ही (जैविक) बच्चों से नज़दीकी सम्बंध रखने को इच्छुक होते हैं। यह बात वैकासिक मनोविज्ञान परिकल्पना के सर्वथा अनुरूप है (देखें अध्याय 10)।

मानव वैज्ञानिकों ने बताया है कि जनजातीय रिकॉर्ड्स जितना दर्शाते हैं, अनौपचारिक स्तर पर गैर-क्लासिकल बहु-पति प्रथा उससे कहीं ज़्यादा प्रचलित थी (Borgerhoff Mulder 2009; Hrdy 2000; Starkweather and Hames 2012)। कुछ मामलों में अनौपचारिक किस्म के बहु-पति विवाहों को आम तौर पर क्रमिक एकल विवाह और बहु-पत्नी विवाह के रूप में रिकॉर्ड किया जाता है, जहां स्त्रियां अपने जीवन काल में अलग-अलग अवधियों में अलग-अलग पुरुष से विवाहित होती हैं। तंज़ानिया के Pimbwe नामक बागवान कबीले में Monique Borgerhoff Mulder के जनजातीय अनुसंधान में कई स्त्रियों का पता चला जिन्होंने अपने जीवन काल में कई पुरुषों के साथ संभोग किया था (2009)। अनौपचारिक बहु-पति विवाह Yanomamö जैसे कई जनजातीय समाजों में पाए गए हैं जहां युद्ध अथवा बीमारियों के कारण पुरुषों का अभाव होता है (Starkweather and Hames 2012)।

भावज विवाह और साली से विवाह (लेविरेट और सोरोरेट) कुछ जनजातीय समाजों के वंश समूहों की कार्पोरेट प्रकृति विवाह के उन दो नियमों में झलकती है जो रिश्तेदारियों

के बंधन के संरक्षण और पति/पत्नी की मृत्यु के बाद दायित्वों की पूर्ति के लिए बनाए गए है। इन नियमों को लेविरेट और सोरोरेट कहते हैं। लेविरेट नियम यह है कि विधवा स्त्री को अपने मृतक पति के किसी भाई से विवाह करना होता है। कुछ समाजों में, जैसे बिब्लिकल युग के इस्राइलियों में या समकालीन समय के Nuer या Tiv कबीलों में पुरुष को अपने भाई की विधवा के साथ सहवास करना होता है ताकि वह बच्चे पैदा कर सके। इन बच्चों को मृतक पति के बच्चे माना जाता है। लेविरेट व्यवस्था का मुख्य तत्व यह है कि मृतक पति के अधिकार व वंश उसकी मृत्यु के बाद भी बरकरार रहते हैं। सोरोरेट विवाह का वह नियम है जिसमें निर्देश है कि पत्नी की मृत्यु पर पति को उसकी किसी बहन (साली) से विवाह करना होगा।

लेविरेट और सोरोरेट दोनों में मृत्यु के बाद भी रक्त सम्बंधियों और वैवाहिक सम्बंधियों के परस्पर दायित्वों की पूर्ति की व्यवस्था है। सम्बंधित परिवारों के बीच परस्पर लेन-देन किसी व्यक्ति की मृत्यु के उपरांत भी जारी रहना चाहिए। ये वैवाहिक प्रथाएं जनजातीय समाजों में आर्थिक, रिश्तेदारियों और राजनैतिक कारकों के बीच निर्णायक कड़ियों को रेखांकित करती हैं।

जनजातीय समाजों में विवाहोपरांत निवास के नियम मानव वैज्ञानिकों ने पाया है कि जनजातीय समाजों में विवाह के बाद निवास के नियम वंश-समूह के प्रकार से सम्बंधित हैं। उदाहरण के लिए, अधिकांश जनजातीय समाजों में पितृवंश और पितृ-स्थानिक निवास की व्यवस्था है। कम संख्या में विवाहोपरांत मातृ-स्थानिक निवास का प्रावधान है, जिसमें नव विवाहित दम्पति पत्नी के पालकों के साथ या उनके आसपास रहते हैं। मातृवंशीय समाजों में एक और नियम मिलता है जिसे एवंक्यूलोकल (avunculocal) कहते हैं, जिसमें नवदम्पति पति के मामा के साथ निवास करते हैं।

विवाहोपरांत निवास के नियमों की वजहें जनजातीय समाजों में विवाहोपरांत निवास के नियमों और वंश-समूह के प्रकारों के बीच सम्बंधों का अध्ययन करके मानव वैज्ञानिकों ने पाया है कि निवास के नियम अक्सर समाज की व्यावहारिक परिस्थिति के प्रति अनुकूलन होते हैं। इस संदर्भ में सबसे ज़्यादा मान्य परिकल्पना के मुताबिक विवाहोपरांत निवास के नियम समाज में वंश-समूह की किस्म से पहले विकसित हो

जाते हैं (Fox 1967; Keesing and Strathern 1998; Martin and Voorhies 1975)। उदाहरण के लिए, हो सकता है कि सीमित ज़मीन व संसाधन, पड़ोसी समूहों के साथ बारंबार के युद्ध, जनसंख्या का दबाव और सहयोगी कार्य की ज़रूरत ने मिलकर पितृ-स्थानिक निवास और पितृवंशीय समूहों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई होगी। निवास और वंश सम्बंधी इन पुरुष-केंद्रित नियमों का उद्देश्य शायद ज़मीन, पशु और लोगों के संदर्भ में साझा हितों को साधने के लिए पिता, पुत्रों और भाइयों को साथ-साथ रखने का रहा होगा।

तो फिर वह क्या चीज़ है जो मातृ-स्थानिक निवास के नियम और मातृवंश का निर्माण करती है? मेल्विन और कैरोल एम्बर (Melvin and Carol Ember 1971) के एक बहु-संस्कृति अध्ययन के आधार पर एक व्याख्या यह दी गई है कि मातृ-स्थानिक निवास के नियम युद्ध के पैटर्न के प्रत्युत्तर में बने होंगे। एम्बर द्वय का सुझाव था कि जो समाज आंतरिक युद्धों - यानी निकट पड़ोसी समाजों के साथ युद्ध - में लिप्त रहते हैं, उनमें पितृ-स्थानिक निवास के नियम पाए जाते हैं। इसके विपरीत, जो समाज बाह्य युद्ध - यानी घर से काफी दूर युद्ध - में लिप्त होते हैं, उनमें मातृ-स्थानिक निवास के नियम बनते हैं। जिन समाजों में बाह्य युद्ध पुरुषों को लंबी-लंबी अवधियों के लिए अपने इलाके से दूर ले जाते हैं, उनमें रिश्तेदारी के समूह की स्त्रियों को साथ रखना ज़रूरी होता है। एम्बर द्वय ने Iroquois के उदाहरण का उपयोग किया है, जिनमें पुरुषों को बाह्य युद्धों के लिए घर से सैकड़ों किलोमीटर दूर जाना पड़ता है, और इसने मातृ-स्थानिक निवास और मातृवंशीय समूहों को जन्म दिया है।

मार्विन हैरिस (Marvin Harris 1979) ने एम्बर द्वय की परिकल्पना को आगे बढ़ाते हुए सुझाया है कि मातृ-स्थानिक निवास और मातवृंश उन समाजों में पाए जाते हैं जिनमें पुरुष, किसी भी कारण से, लंबी अवधियों के लिए नदारद रहते हैं। उदाहरण के लिए, Navajo में स्त्रियां अपने घर के आसपास ही भेड़ें पालती हैं, जबकि पुरुष घोड़े पालते हैं और मज़दूरी करते हैं, जिसके लिए उन्हें अपने घर से दूर जाना पड़ता है। Navajo में मातृ-स्थानिक निवास और मातृवंश पाए जाते हैं।

जनजातीय समाजों में विवाह सम्बंधी सामान्यीकरण इस बात पर ज़ोर देना ज़रूरी है कि जनजातीय समाजों में वंशानुक्रम, विवाह और निवास के नियम *अचर नहीं* हैं। इनमें लचीलापन होता है और ये पारिस्थितिक, जनांकिक, आर्थिक और राजनैतिक परिस्थितियों के साथ बदलते हैं। उदाहरण के लिए, जिन जनजातीय समूहों में वैवाहिक साथी के चयन से सम्बंधित नियम हैं उनमें परिस्थिति के अनुसार अपवादों की गुंजाइश होती है। यदि किसी जनजातीय समाज में क्रॉस-कज़िन या समांतर-कज़िन विवाह की प्रथा है और यदि किसी व्यक्ति को उपयुक्त श्रेणी का कज़िन उपलब्ध नहीं है तो उसके लिए विभिन्न अन्य विकल्प उपलब्ध होते हैं।

संयोजित (अरेंज्ड) विवाह के लिए कई अन्य उम्मीदवार उपलब्ध होते हैं। जैसा कि मानव वैज्ञानिक वार्ड गुडइनफ (Ward Goodenough (1956) ने काफी पहले दर्शाया था, वैवाहिक पसंद, निवास के लिए जगह और वंश के निर्धारण में जनजातीय समाजों में काफी जोड़-तोड़ किया जाता है। वैवाहिक व्यवस्था में प्राय: संपत्ति, ज़मीन, पशुधन और अन्य संसाधनों की उपलब्धता जैसे कारकों का असर पड़ता है। कबीले के बुज़ुर्ग अक्सर अपने बच्चों के वैवाहिक सम्बंधों को लेकर लंबी-लंबी बातचीत करते हैं। दुनिया के अन्य लोगों के समान, ये लोग भी खुदमुख्तयार नहीं होते जो स्वचालित ढंग से सांस्कृतिक मानकों का पालन करें। रिश्तेदारी और वैवाहिक नियम आदर्श मानक हैं, और अक्सर इनका उल्लंघन किया जाता है।

तलाक जनजातीय समाजों, और खासकर पितृवंशीय जनजातीय समाजों में, तलाक की दर का सम्बंध वधूसंपत्ति के लेन-देन से सम्बंधित हो सकता है। एक पारंपरिक मत यह सुझाया गया है कि जिन पितृवंशीय समाजों में वधूसंपत्ति का मूल्य काफी अधिक होता है, उनमें विवाह टिकाऊ होते हैं। इवान्स-प्रिटचार्ड (Evans-Pritchard 1951) ने Nuer विवाह के विवरण में बताया है कि वधूसंपत्ति का प्रमुख मकसद विवाह का टिकाऊपन सुनिश्चित करना है। वंशानुगत समाजों में पुरुष का परिवार, स्त्री के आर्थिक उत्पादन व उर्वरता पर अधिकार के बदले कुछ वधूसंपत्ति अदा करता है। वधूसंपत्ति जितनी अधिक होगी, स्त्री के परिवार से पति के परिवार को अधिकारों का हस्तांतरण उतना ही अधिक संपूर्ण होगा। विवाह की समाप्ति के लिए वधूसंपत्ति लौटाना होती है। यदि इसकी राशि बहुत अधिक है और वधू के परिवार के कई सदस्यों के बीच बंट चुकी है, तो इसे लौटाने

की संभावना बहुत कम हो जाती है (Gluckman 1953; Leach 1953;1954; Schneider 1953)। दूसरी ओर, जब वधूसंपत्ति कम होती है तो विवाह अस्थिर होता है और तलाक ज़्यादा बार होता है।

अलबत्ता, जैसा कि रॉजर कीसिंग (Roger Keesing 1981) ने कहा है, यह परिकल्पना एक मूलभूत सवाल को जन्म देती है: क्या विवाह इसलिए टिकाऊ होता है क्योंकि वधूसंपत्ति की लागत अधिक है, या क्या किसी समाज में ऊंची वधूसंपत्ति का मानक तभी बन सकता है जब उसमें टिकाऊ किस्म के विवाह मौजूद हों? तलाक को लेकर कीसिंग के अपने सिद्धांतों में वंशानुक्रम के नियमों को केंद्र में रखा गया है। आम तौर पर, मातृवंशीय समाजों में तलाक की दर ऊंची होती है जबकि पितृवंशीय समाजों में यह दर कम होती है। मातृवंशीय समाजों में, स्त्री का अपनी संतानों पर अधिकार होता है और इसलिए यदि पति बदसलूकी करता है तो ज़्यादा संभावना है कि वह उसे तलाक दे देगी। उदाहरण के लिए, मातृवंशीय Hopi और Zuni में किसी स्त्री को तलाक हासिल करने के लिए इतना भर करना होता है कि पुरुष का सामान दरवाज़े के बाहर रख दे। ऐसा होने पर पति अपनी मां के घर लौट जाता है और पत्नी व बच्चे पत्नी के घर में बने रहते हैं (Garbarino 1988)।

पितृवंशीय समूहों की अपेक्षा मातृवंशीय समूहों में विवाह कम टिकने की वजह बच्चों पर हितों के टकराव (या कार्पोरेट अधिकार) है। जब स्त्री के प्राथमिक हित उसके अपने जन्म के वंश से जुड़े रहते हैं और उसके वंश-समूह के लोगों का उस पर और उसके बच्चों पर नियंत्रण होता है, तो पति से तथा पति के वंश से उसका बंधन कमज़ोर व अस्थायी रहता है (Keesing 1975)। दूसरी ओर, पितृवंशीय समाजों में, पत्नी को पूरी तरह पति के वंश में समाहित कर लिया गया है। इससे बच्चों पर पितृवंशीय अधिकार सुदृढ़ होते हैं और ज़्यादा टिकाऊ वैवाहिक बंधन बनते हैं।

जेंडर

जेंडर जनजातीय समाजों की सामाजिक संरचना का अत्यंत महत्वपूर्ण तत्व होता है। जनजातीय समाजों के बहु-संस्कृति अनुसंधान ने स्त्री-पुरुष सम्बंधों की बेहतर समझ में योगदान दिया है। मानव वैज्ञानिकों की दिलचस्पी जनजातीय समाजों में जेंडर

भूमिकाओं, जीवन निर्वाह के कामों, स्त्रियों की हैसियत, पितृसत्ता और यौनिकता के परस्पर सम्बंधों में रही है।

जेंडर व संस्कृतिकरण: मार्गरेट मीड (Margaret Mead) का अध्ययन हालांकि उन्नीसवीं सदी के मानव वैज्ञानिकों ने जेंडर भूमिकाओं के सवाल को संबोधित किया था, किंतु उनके निष्कर्ष कमोबेश अटकलनुमा थे और प्रत्यक्ष जनसंस्कृति शोध पर आधारित नहीं थे। बीसवीं सदी में मानव वैज्ञानिक स्त्रियों और पुरुषों की भूमिकाओं के संदर्भ में जानकारी जुटाने फील्ड में जाने लगे। जेंडर भूमिकाओं को लेकर पहला महत्वपूर्ण अध्ययन मार्गरेट मीड ने किया था और उसमें न्यू गिनी के तीन समाज शामिल थे: Arapesh, Mundugumor, और Tchambuli। मीड का अध्ययन 1935 में प्रकाशित हुआ था और इसका शीर्षक था *Sex and Temperament in Three Primitive Societies* (तीन आदिम समाजों में यौनिकता और मिज़ाज)।

मीड ने विवरण दिया है कि इन तीन समाजों में नितांत अलग-अलग किस्म की जेंडर भूमिकाएं पाई जाती हैं। Arapesh में स्त्री और पुरुष दोनों का व्यवहार एक जैसा होता है। मीड ने दोनों लिगों को गैर-आक्रामक, सहयोगी, सुस्त (अकर्मक), और अन्य की ज़रूरतों के प्रति संवेदी बताया है। उस समय के यूएस मापदंडों के आधार पर मीड ने Arapesh को ज़नाना (स्त्रीयोचित) बताया है। इसके विपरीत मीड ने Mundugumor स्त्री व पुरुषों को आक्रामक, स्वार्थी, असंवेदनशील, और असहयोगी बताया है जो लगभग यूएस के मर्दाना (पुरुषोचित) से मेल खाता है। मीड के मुताबिक Tchambuli यूएस की जेंडर भूमिका सम्बंधी छवि के सर्वथा विपरीत थे। Tchambuli स्त्रियां राजनैतिक व आर्थिक रूप से प्रबल (प्रभुत्वशाली) थीं जबकि पुरुष दब्बू, भावनात्मक रूप से पराश्रित और कम ज़िम्मेदार थे। स्त्रियां कमाऊ (पालनहार) थीं और राजनैतिक नेता थीं। वे युद्ध में भी भाग लेती थीं। पुरुष घरेलू शिविर के आसपास ही रुकते थे और बच्चों की देखभाल करते थे। उनकी एक प्रमुख गतिविधि नृत्य, चित्रकारी और आभूषण बनाने जैसे कलात्मक कार्य थे। लिहाज़ा, यूएस मानकों के हिसाब से Tchambuli स्त्रियां मर्दाना थीं और Tchambuli पुरुष ज़नाना थे।

मीड का निष्कर्ष था कि समाज पुरुषों और स्त्रियों के बीच सामाजिक व सांस्कृतिक अंतरों को अधिकतम भी कर सकते हैं और न्यूनतम भी। उनका तर्क था कि जेंडर भिन्नताएं समाज-समाज में बहुत अलग-अलग होती हैं। मीड के अध्ययन ने यूएस समाज में जेंडर छवियों को लेकर यथास्थिति को चुनौती दी थी। इसने उभरते नारीवादी आंदोलन को भी बहुत आकर्षित किया क्योंकि इसने दावा किया कि जेंडर भूमिकाओं को निर्धारित (व सीमित) करने का काम जीव विज्ञान नहीं बल्कि संस्कृति करती है। Tchambuli स्त्रियां 1960 के दशक में संयुक्त राज्य में नारीवादी आंदोलन का एक महत्वपूर्ण प्रतीक बन गईं।

मीड के अध्ययन का पुनर्मूल्यांकन 1970 के दशक में Tchambuli (जो वास्तव में खुद को Chambri कहते हैं) का पुन: अध्ययन करने के बाद, मानव वैज्ञानिक डेबोरा गेवर्ट्ज़ (Deborah Gewertz 1981) ने निष्कर्ष दिया कि मीड का जेंडर भूमिका उलटने सम्बंधी विवरण पूरी तरह सही परिकल्पना नहीं है। हालांकि गेवर्ट्ज़ का निष्कर्ष था कि मीड अपने विवरणों और टिप्पणियों में मूलत: सही थीं, किंतु वे वहां यह देखने के लिए पर्याप्त समय के लिए नहीं रही थीं कि Chambri को क्या हो रहा है। गेवर्ट्ज़ के मुताबिक मीड ने Chambri को एक ऐसे समय पर देखा था जब वे एक अनोखे संक्रमण से गुज़र रहे थे। उदाहरण के लिए, 1930 के दशक में Chambri को एक शत्रु कबीले द्वारा उनके द्वीपों से खदेड़ दिया गया था। उनकी सारी भौतिक संरचनाओं और कलाकृतियों को जला दिया गया था। परिणामस्वरूप, जब मीड ने अपना अध्ययन किया उस समय Chambri पुरुष पूर्णकालिक रूप से अपने घरेलू शिविरों के पास रहकर कलाकृतियों की रचना और पुनर्निर्माण के काम में लगे थे। मीड ने मान लिया कि ये पुरुषों के सामान्य कामकाज हैं जबकि ये वास्तव में असामान्य थे। जनजातीय आंकड़ों के सावधानीपूर्वक मूल्यांकन के बाद गेवर्ट्ज़ निष्कर्ष देते हैं कि Chambri जेंडर भूमिकाओं के पूर्णत: उलटने का प्रदर्शन नहीं करते, जैसा कि मीड ने विवरण दिया है। गेवर्ट्ज़ ने पाया कि Chambri पुरुष वस्तुओं और कीमती चीज़ों के वितरण का नियंत्रण करते हैं, और इसके चलते वे राजनैतिक व आर्थिक रूप से प्रभुताशाली होते हैं, इस तथ्य के बावजूद कि अधिकांश वस्तुओं का उत्पादन स्त्रियां करती हैं।

गेवर्ट्ज़ द्वारा Chambri जेंडर भूमिका के पैटर्न का पुनर्मूल्यांकन मीड की इस परिकल्पना को चुनौती देता है कि मानव समाजों में जेंडर भूमिकाओं को लेकर ज़बरदस्त लचीलापन है। हालांकि गेवर्ट्ज़ यह मानते हैं कि सांस्कृतिक मूल्य जेंडर भूमिकाओं को प्रभावित करते हैं, किंतु जेंडर भूमिकाओं का पूरी तरह पलटना Chambri के मामले में दिखाई नहीं दिया। 1930 के दशक के आसपास के अन्य मानव वैज्ञानिकों के समान, मीड ने भी उन पेचीदा क्षेत्रीय इतिहासों को ध्यान में नहीं रखा, जो न्यू गिनी के इन जनजातीय समाजों में जेंडर भूमिकाओं को प्रभावित करते हैं।

पितृसत्ता Tchambuli में जेंडर भूमिकाओं को लेकर मीड के निष्कर्षों के बावजूद, अधिकांश आधुनिक मानव वैज्ञानिक इस बात पर सहमत हैं कि मातृसत्ता का पैटर्न, जिसमें स्त्रियां आर्थिक व राजनैतिक दृष्टि से पुरुषों पर हावी रहती हैं, पुरातात्विक, ऐतिहासिक और जनजातीय रिकॉर्ड में नहीं मिलते (Bamberger 1974; Friedl 1975; Ortner 1974, 1996; L. Stone 2010)। (देखें: "Critical Perspectives: Were There Matriarchal States?" पृष्ठ 212-214)। चंद अपवादों को छोड़ दें तो अधिकांश जनजातीय समाज पितृसत्तात्मक होते हैं। मानव वैज्ञानिकों ने पितृसत्ता की व्यापक उपस्थिति की व्याख्या के लिए कई परिकल्पनाएं पेश की हैं।

सामाजिक-जीव वैज्ञानिक और वैकासिक मनोवैज्ञानिक जनजातीय समाज में पितृसत्ता को कुदरती प्रजनन रणनीति के एक परिणाम के रूप में देखते हैं, जिससे प्रजनन सम्बंधी फिटनेस बढ़ती है। इस मत के मुताबिक, पुरुष यथासंभव अधिक से अधिक स्त्रियों के साथ बच्चे पैदा करने को प्रवृत्त होते हैं, ताकि उनकी प्रजनन सफलता में वृद्धि हो। जैसे कि हम देख चुके हैं, कुछ जनजातीय पुरुषों के अन्य के मुकाबले ज़्यादा बच्चे होते हैं। इन प्रजनन रणनीतियों में पुरुषों के बीच स्त्रियों के लिए प्रतिस्पर्धा होती है। इस मॉडल के मुताबिक इस प्रतिस्पर्धा का परिणाम राजनैतिक टकराव तथा युद्धों की संख्या में वृद्धि के रूप में सामने आता है। ये कारक जनजातीय समाजों में पितृ-स्थानिकता, पितृवंश, बहुपत्नी प्रथा, और पितृसत्ता के सबब बनते हैं (Van den Berghe and Barash 1977; Chagnon and Hames 1979; Chagnon 2000)। जीव विज्ञान पर आधारित एक और मत स्टीवन गोल्डबर्ग (Steven Goldberg 1993) द्वारा सुझाया गया है कि समाज में

पुरुष हमेशा हावी रहते हैं क्योंकि नर-हारमोन उन्हें हैसियत और प्रभुता के लिए स्त्रियों की अपेक्षा ज़्यादा प्रतिस्पर्धा करने को उकसाते हैं।

विलियम डिवेल और मार्विन हैरिस (William Divale and Marvin Harris 1976) जैसे सांस्कृतिक भौतिकवादी, कुदरती जीव वैज्ञानिक शक्तियों का हवाला देने की बजाय, कहते हैं कि पितृसत्ता और जेंडर की ऊंच-नीच संसाधनों के अभाव और जनजातीय समाज में होने वाले बारंबार के युद्धों से पैदा होती है। आम तौर पर, जब भौतिक संसाधन दुर्लभ होते हैं, खास तौर से बागवानी करने वाले समाजों में, प्रतिस्पर्धी कबीलों के बीच युद्ध काफी ज़्यादा होते हैं। चूंकि अधिकांश योद्धा पुरुष होते हैं, इन समाजों में पुरुषों की हैसियत और ताकत दोनों में ही वृद्धि होती है। इन कारणों से पुरुष-प्रधानता की मानसिकता विकसित हो जाती है। डिवेल और हैरिस के अध्ययन की काफी आलोचना पद्धतिगत खामियों और अपर्याप्त आंकड़ों की वजह से हुई है (Hirschfeld et al. 1978)। अलबत्ता, ह्युमन रिलेशन्स एरिया फाइल्स का उपयोग करते हुए किए गए एक बहु-संस्कृति अध्ययन से पता चला था कि युद्ध में वृद्धि का निकट सम्बंध स्त्रियों की हैसियत में गिरावट से है (Khalturina and Khorotayev 2006)। इस अध्ययन में पता चला था कि जो समाज पुरुष आक्रामकता के लिए समाजीकरण और पुरुष की कठोरता व प्रधानता की विचारधारा पर ज़ोर देते हैं, उनमें पत्नियों को पीटने की आवृत्ति ज़्यादा होती है और जेंडर के बीच विभाजन का स्तर भी अधिक होता है। इसके अलावा, इस बहु-संस्कृति अध्ययन ने पूर्व में किए गए एक अध्ययन (जिसका उल्लेख पहले किया जा चुका है) की भी पुष्टि की कि बहु-पत्नी प्रथा व्यापक युद्धों और वढ़ी हुई पुरुष मृत्यु दर का परिणाम होती है, जो स्त्रियों की ताकत को कम करती है और पितृसत्ता को बढ़ावा देती है। जनजातीय युद्ध, बहु-पत्नी प्रथा और पितृसत्तात्मक समाजों के विकास के बीच सम्बंध भावी मानव वैज्ञानिकों के लिए संभावित शोध का विषय है।

जनजातीय समाजों में पितृसत्ता और लिंगभेद अन्य मानव वैज्ञानिक ज़ोर देते हैं कि हो सकता है कि जीव वैज्ञानिक या भौतिक कारक पुरुष वर्चस्व में योगदान देते हैं, किंतु जनजातीय पितृसत्ता को बनाए रखने में स्त्री को परिभाषित करने वाले सांस्कृतिक मूल्यों का काफी महत्व है। दूसरे शब्दों में, कई जनजातीय समाजों में स्त्री भूमिकाओं का महत्व पुरुष भूमिकाओं से कहीं कम होता है। कई जनजातीय समाज ऐसी मायथॉलॉजी,

अस्थाओं और विचारधाराओं से चिपके रहते हैं जो पुरुष वर्चस्व और स्त्री की पराधीनता को उचित ठहराते हैं। ये मायथॉलॉजी, अस्थाएं और विचारधाराएं सेक्सिज़्म - यानी लोगों के लिंग पर आधारित पूर्वाग्रह और भेदभाव - को पुष्ट करती हैं। उदाहरण के लिए, न्यू गिनी के कई पितृवंशीय बागवानी समाजों में माहवारी (मासिक स्राव) के दौरान पुरुषों को स्त्रियों से अलग रखा जाता है क्योंकि वे मानते हैं कि माहवारी के दौरान स्त्री अशुद्ध होती है और समुदाय को हानि पहुंचाएगी। मासिक स्राव के खून को अक्सर टोने-टोटके से या हानिकारक रसों के उत्पादन से जोड़कर देखा जाता था; इसलिए, स्त्रियों से नियमित संपर्क पर पाबंदी थी। प्राय: माना जाता था कि स्त्रियां शारिरीक व मनोवैज्ञानिक तौर पर पुरुषों से सर्वथा भिन्न होती हैं, और उनके शारीरिक द्रव तथा सत्व खतरनाक और अशुभ होते हैं (Lindenbaum 1972)। पुरुषों की इन चिंताओं, आस्थाओं और पूर्वाग्रहों का परिणाम प्राय: स्त्रियों के विरुद्ध भेदभाव की प्रथाओं के रूप में सामने आता था। उदाहरण के लिए, न्यू गिनी के अधिकांश कबीलों में पतियों और पत्नियों को अलग-अलग घरों में निवास करने के नियम हैं और छोटे लड़कों को उनकी मांओं से अलग करके पुरुषों के घरों में रखा जाता है।

इनमें से कई जनजातीय समाजों में स्त्रियों को राजनैतिक गतिविधियों व पवित्र अनुष्ठानों के अलावा सैन्य टकरावों से भी बाहर रखा जाता है। सांस्कृतिक परिभाषा की इस सीमा का परिणाम यह होता है कि पुरुष वह प्रमुख जेंडर बन जाता है जो समाज का अस्तित्व सुनिश्चित करता है। इन नज़रियों की वजह से, इनमें से कई जनजातीय समाजों में स्त्रियों को सामाजिक पराधीनता, यौन अलगाव, अत्यधिक वर्चस्व और व्यवस्थित शारीरिक अत्याचारों का सामना करना पड़ता है (Lindenbaum 1972; Chagnon 1997)। कभी-कभी तो गर्भावस्था के दौरान उन्हें भौतिक संसाधनों से भी वंचित किया जाता है, पुरुषों के बराबर भोजन से वंचित किया जाता है और शारीरिक रूप से क्षत-विक्षत किया जाता है। लिंगभेदी विचारधाराओं के आधार पर प्राय: इन प्रथाओं को उचित ठहराया जाता है।

अलबत्ता, जनजातीय समाजों में विविधता भी है। पपुआ न्यू गिनी के Vanatinal जनजातीय लोगों पर किए गए जनजातीय अध्ययन के आधार पर, मारिया लेपोस्व्की (Maria Lepowsky 1993) ने बताया है कि उनमें पुरुष वर्चस्व की विचारधारा बहुत कम

है और माहवारी वाली स्त्रियों के साथ संपर्क को लेकर कोई प्रतिबंध नहीं है। लेपोस्व्की की दलील है कि Vanatinal में स्त्रियों का सम्मान किया जाता है और उनके साथ पुरुषों के समान व्यवहार किया जाता है। Vanatinal स्त्रियां कीमती चीज़ों के व्यापार और लेन-देन के ज़रिए प्रतिष्ठा हासिल कर सकती हैं। किंतु इन स्त्रियों को शिकार, मत्स्याखेट और युद्ध में भाग लेने की अनुमति नहीं है। युद्ध के संचालन और हिंसा के खतरे के संदर्भ में नियंत्रण व सत्ता Vanatinal पुरुषों के हाथ में है। लिहाज़ा, Vanatinal समाज आदर्श रूप में जेंडर-समता वाला समाज नहीं है। पपुआ न्यू गिनी में जेंडर भूमिकाओं और वंचनाओं को समझने में एक और कारक की भूमिका रही है - पुरुष मानव वैज्ञानिक स्त्रियों के खिलाफ इन पाबंदियों की पुरुष-व्याख्या को अत्यधिक महत्व देते रहे हैं और स्त्रियों की आवाज़ को अनदेखा करते हैं। कुछ मामलों में स्त्रियां पुरुषों के वीर्य को उतना ही संदूषक मानती हैं जितना पुरुष उनके माहवारी के खून को।

जेंडर, जीवन निर्वाह और स्त्री हैसियत कई मानव वैज्ञानिकों का मत है कि जनजातीय समाजों में स्त्रियों की हैसियत जीवन निर्वाह की गतिविधियों में उनके योगदान पर निर्भर करती है। जैसा कि हम देख चुके हैं, पुरुष व स्त्री दोनों बागवानी उत्पादन में शरीक होते हैं। पुरुष आम तौर पर बगीचे के लिए ज़मीन साफ करते हैं, और स्त्रियां फसलों की निंदाई व कटाई का काम करती हैं। जनजातीय बागवानी समाजों के एक बहु-संस्कृति सर्वेक्षण में पता चला है कि बागवानी समाजों में पुरुषों के मुकाबले स्त्रियां खेती की गतिविधियों में ज़्यादा योगदान करती है (Martin and Voorhies 1975; Goody 1976)। इसके बावजूद, इनमें से अधिकांश जनजातीय समाजों में लिंगभेदी विचारधारा के साथ पितृसत्ता हावी है। अलबत्ता, कुछ मातृवंशीय बागवानी समाजों में स्त्रियों की हैसियत उच्चतर होती है।

मातृवंशीय समाजों में स्त्री की हैसियत Iroquois, Hopi और उत्तरी अमेरिका के Zuni जैसे मातृवंश के आधार पर संगठित समाजों में आर्थिक व राजनैतिक निर्णय प्रक्रिया में स्त्रियों का काफी प्रभाव रहता है। मातृवंश के अंतर्गत पत्नियों की मांएं और बहनें उन्हें कई बार पुरुषों के साथ विवादों में समर्थन भी देती हैं। इसके अलावा, ज़मीन, टेक्नॉलॉजी और पशुधन समेत समस्त संपत्ति पर अधिकार मातृवंशों में निहित होते हैं। अलबत्ता, आम तौर पर मातृवंशीय समाजों में पुरुष राजनैतिक सत्ता के प्रभावशाली पदों

पर आसीन होते हैं और आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण रखते हैं। अधिकांश मातृवंशीय समाजों में परिवार में मां के भाई के पास राजनैतिक सत्ता व आर्थिक नियंत्रण होता है। लिहाज़ा मातृवंशिकता स्वत: मातृसत्ता में परिणत नहीं होती।

Iroquois: मातृवंशीय समाज में स्त्रियां Iroquois मातृवंशीय समाजों में स्त्रियों की हैसियत का एक अच्छा उदाहरण है। बड़े घरों (हवेलियों) में रहने वाले लोग एक-दूसरे से मातृवंश के ज़रिए सम्बंधित होते थे। वरिष्ठ महिलाएं, उनकी पुत्रियां, पुत्रियों के बच्चे, भाई और अविवाहित पुत्र मिलकर हवेली बनाते थे। हालांकि पति भी हवेली में रहते थे, मगर उन्हें बाहरी माना जाता था। हवेली के मातृवंश बगीचे के भूखंडों की देखरेख करते थे और औज़ारों के साझा मालिक होते थे। ये मातृवंश मक्का, बीन्स, और स्क्वैश लगाते थे, निंदाई करते थे और कटाई करते थे। स्त्रियां सारे भोजन का प्रोसेसिंग, भंडारण और वितरण करती थीं तथा पुरुषों के युद्ध दलों को उपलब्ध कराती थीं। भोजन आपूर्ति के लिए पुरुष स्त्रियों पर बुरी तरह निर्भर थे।

इन मातृवंशों के बुज़ुर्ग संरक्षकों को सेचम (मुखिया) - Iroquois राजनैतिक व्यवस्था में परिषद का नेता - नियुक्त करने का अधिकार होता था। 50 सेचम की एक परिषद पांच अलग-अलग Iroquois राज्यसंघों का शासन करती थी। अक्सर वे इस पद पर अपने छोटे पुत्रों को नियुक्त करती थीं और तब तक शासन करती थीं जब तक कि ये पुत्र वयस्क न हो जाएं। स्त्रियां शांति व युद्ध सम्बंधी निर्णयों पर भी असर डाल सकती थीं और यह फैसला कर सकती थीं कि युद्ध-बंदी जिएंगे या मरेंगे (Brown 1970a)।

स्पष्ट रूप से, जैसा कि Iroquois प्रकरण दर्शाता है, कुछ मातृवंशीय समाजों में स्त्रियां आर्थिक व राजनैतिक समीकरण को प्रभावित करती थीं। अपने बहु-संस्कृति अध्ययन में, मार्टिन और वूरहाइस (Martin and Voorhies 1975) ने पाया कि जिन बागवानी समाजों में मातृवंशीय परंपरा का पालन किया जाता है, उनमें स्त्रियों की हैसियत उच्चतर होती है। ऐसे कई मातृवंशीय समाजों में पुरुष राजनैतिक ताकत तभी विकसित कर पाते हैं जब उन्हें उनकी पत्नियों के सम्बंधियों का ज़ोरदार समर्थन मिले। अलबत्ता, ये निष्कर्ष यह भी दर्शाते हैं कि मातृवंशीय समाजों में पुरुष फिर भी काफी राजनैतिक ताकत रखते हैं और प्रमुख आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण बना लेते हैं। हो सकता है कि इन समाजों

में महिलाओं का सम्मान किया जाता हो किंतु आर्थिक व राजैतिक रूप से वे पुरुषों के अधीन ही रहती हैं।

उम्र

जैसा कि ऊपर कहा गया था, सारे समाजों में उम्र आधारित श्रेणियां - एक ही उम्र के लोगों के समूह - होती हैं। किसी उम्र समूह के अंदर लोग कुछ निश्चित मानक सीखते हैं और सांस्कृतिक ज्ञान अर्जित करते हैं। कुछ जनजातीय समाजों में उम्र समूह ऐसे विशेषीकृत समूह बन गए हैं, जिनके कई अन्य कार्य भी होते हैं।

उम्र समूह पूर्वी अफ्रीका, उत्तरी अमेरिका, ब्राज़ील, भारत और न्यू गिनी के कुछ जनजातीय समाजों में विशिष्ट उम्र समूह बहु-कार्य संस्थाओं के रूप में उभरे। कुछ जनजातीय समूहों में उम्र समूह, उम्र समुच्चय के रूप में कहीं अधिक औपचारिक व संस्थागत समूह बन गए। उम्र समुच्चय ऐसे लोगों का समूह होता है जो लगभग हमउम्र हों, और अपने समुदाय के अंदर जिनके कुछ अधिकार, दायित्व, कर्तव्य और विशेषाधिकार हों। सामान्य: व्यक्ति काफी छुटपन में ही उम्र समूह में प्रवेश करते हैं और फिर उस समूह के साथ जीवन के विभिन्न मुकामों से होकर गुज़रते हैं। किसी उम्र समुच्चय के अंदर जीवन के एक मुकाम से दूसरे में जाने के साथ कुछ विशिष्ट अनुष्ठान (rite of passage) होते हैं।

जनजातीय पशुपालकों में उम्र समुच्चय व उम्र समूह पूर्वी अफ्रीका के कई जनजातीय पशुपालकों, जैसे Karimojong, Masaai, Nuer, Pokot, Samburu, और Sebei, में विशेषीकृत उम्र समुच्चय व उम्र समूह प्रणाली होती है जो सामाजिक संगठन को ढांचा प्रदान करती है। उदाहरण के लिए, Sebei में आठ उम्र समुच्चय होते हैं और प्रत्येक तीन उप-समुच्चयों में विभाजित होता है। आठ समुच्चयों को औपचारिक घर दिए जाते हैं और प्रत्येक उप-समुच्चय का एक अनौपचारिक नाम होता है। Sebei पुरुष दीक्षा के साथ किसी उम्र समूह में प्रवेश करते हैं जिसमें उनका लिंगछेदन (circumcision) किया जाता है और उनका संपर्क कबीले के गुप्त ज्ञान और विश्वासों से कराया जाता है।

Sebei दीक्षा लगभग हर 6 वर्षों में एक बार आयोजित की जाती है और दीक्षा के अनुष्ठान आम तौर पर 6 माह तक चलते हैं। जिन व्यक्तियों की दीक्षा एक साथ होती है उनके बीच मज़बूत बंधन बन जाते हैं। नव-दीक्षित Sebei लड़के इस प्रणाली के सबसे निचले स्तर - कनिष्ठ योद्धा - में प्रवेश करते हैं। उम्र बढ़ने के साथ वे अगले स्तर पर पहुंचते हैं - वरिष्ठ योद्धा, जबकि छोटे लड़के कनिष्ठ स्तर पर प्रवेश करते हैं। पुरुषों के समूह आजीवन एक स्तर से अगले स्तर में प्रगति करते रहते हैं (Goldschmidt 1986)।

Sebei उम्र समुच्चय एक महत्वपूर्ण सैन्य भूमिका अदा करते हैं। उम्र समुच्चय के सदस्यों का दायित्व होता है कि वे पशुओं की रक्षा करें और अन्य शिविरों पर आक्रमण करें। इसके अलावा, उम्र-समुंच्चय इन समाजों में हैसियत का प्राथमिक आधार होते हैं। सबसे बुनियादी सामाजिक श्रेणी में कनिष्ठ व वरिष्ठ योद्धा तथा कनिष्ठ व वरिष्ठ बुज़ुर्ग होते हैं। सारी सामाजिक अंतर्क्रियाओं, राजनैतिक गतिविधियों और त्यौहारों पर उम्र समुच्चय प्रणाली का असर होता है। अन्य पूर्वी अफ्रीकी पशुपालकों, जैसे Maasai और Nuer, में युवा पुरुष भी किशोरावस्था में प्रवेश के समय ऐसे ही दर्दनाक दीक्षा अनुष्ठानों से गुज़रते हैं जो उनकी हैसियत को बच्चे से बदलकर योद्धा वयस्क पुरुष की कर देते हैं और वे अन्य छोटे व बड़े लोगों से अलग रहते हैं (Evans-Pritchard 1951; Salzman 2004)। उम्र-समुच्चय की कार्पोरेट इकाइयां स्थायी परस्पर दायित्वों को परिभाषित करती हैं जो आजीवन जारी रहते हैं। किसी केंद्रीकृत सरकार के अभाव में, ये उम्र-समुच्चय सामाजिक सम्बद्धता बनाए रखने में जीवंत भूमिका निभाते हैं।

बुज़ुर्ग जनजातीय पशुपालकों और बागवानी करने वालों में बुज़ुर्ग लोग संपत्ति के स्वामित्व या नियंत्रण का उपयोग अपने हैसियत को पुष्ट करने में करते हैं। जिन समाजों में बुज़ुर्ग लोगों का संसाधनों पर व्यापक नियंत्रण होता है, उनमें उम्रदराज़ लोगों के प्रति अधिक सम्मान नज़र आता है (Silverman and Maxwell 1983)। ज़मीन, स्त्रियों और पशुओं पर नियंत्रण तथा युवा पीढ़ी को इनका वितरण वह प्रमुख तरीका है जिसके ज़रिए बूढ़े पुरुष (और मातृवंशीय समाजों में कभी-कभार स्त्रियां) शेष समाज पर अपनी सत्ता का उपयोग करते हैं। कई मामलों में उम्रदराज़ लोगों का यह वर्चस्व उम्र आघारित स्तरीकरण या गैर-बराबरियों को जन्म देता है।

जिस व्यवस्था में बूढ़े लोग असाधारण सत्ता का उपयोग करते हैं, उसे बुज़ुर्गराज या जेरोंटोक्रेसी (**gerontocracy**) कहते हैं अर्थात बूढ़े लोगों (आम तौर पर पुरुषों) का राज जो समुदाय के भौतिक व प्रजनन सम्बंधी संसाधनों पर नियंत्रण रखते हैं। बुज़ुर्गराज में बूढ़े पुरुष न सिर्फ संपत्ति संसाधन पर बल्कि कबीले की युवा स्त्रियों पर भी एकाधिकार रखते हैं। इन जनजातीय समाजों में इन्सानों तक पहुंच संपत्ति व सत्ता का सबसे बड़ा ज़रिया है। इसके अलावा, बुज़ुर्ग पुरुषों को वधूसंपत्ति के संचय का भी लाभ मिलता है। इन प्रक्रियाओं के ज़रिए, बूढ़े पुरुषों की हैसियत ज़्यादा सुरक्षित होती है और उनके पास आर्थिक विशेषाधिकार भी ज़्यादा होते हैं। वे जीवन निर्वाह और आर्थिक गतिविधियों से सेवा निवृत्त हो जाते हैं और अक्सर कबीले के मामलों में राजनैतिक नेतृत्व की भूमिका अपना लेते हैं। इस क्षमता में वे विवाह बंधनों, संसाधनों के लेन-देन और अन्य मामलों में महत्वपूर्ण निर्णय लेते हैं।

बुज़ुर्गराज वाले कबीला समाज आज भी काफी प्रमुख हैं। प्राचीन इस्रालियों - जो कभी एक पशुपालक कबीला था - में बुज़ुर्ग लोग अपने बड़े बच्चों की संपत्ति के निपटारे और विवाहों पर नियंत्रण रखते थे और बाइबल में ऐसे कई जनजातीय कुलपुरुषों (patriarch) के उदाहरणों का उल्लेख है जो बहुपत्नी विवाह में लिप्त थे। एक आधुनिक पशुपालक कबीले - अफगानिस्तान का किरगिज़ (Kirghiz) - में बुज़ुर्ग लोगों के पास व्यापक राजनैतिक ताकत व हैसियत होती है जो उन्होंने कुछ हद तक आर्थिक संसाधनों पर नियंत्रण के ज़रिए हासिल की है। इसके अलावा, ऐसा माना जाता है कि बुज़ुर्ग लोग बुद्धिमान होते हैं, उनके पास इतिहास और स्थानीय पारिस्थितिकी का विस्तृत ज्ञान होता है तथा समूह के अस्तित्व के लिए ज़रूरी पशु चिकित्सा का ज्ञान भी होता है (Shahrani 1981)। लिहाज़ा, सांस्कृतिक ज्ञान पर अधिकार जनजातीय समाजों में बुज़ुर्गराज की प्रवृत्ति के विकास का सबब बन सकता है।

चीफडम्स में सामाजिक संरचना

10.4 चर्चा कीजिए कि चीफडम समाजों में हैसियत में अंतर, परिवार, जेंडर और उम्र किस तरह से सम्बंधित हैं।

सामाजिक संरचना को लेकर पूर्व की चर्चा में हमने सामाजिक स्तरीकरण और समाज में विभिन्न हैसियतों के बीच गैर-बराबरी की अवधारणा जोड़ी थी। चीफडम समाज व्यापक स्तरीकरण का प्रदर्शन करते हैं। वे विभिन्न स्तरों - समाज में श्रेणीबद्ध विभाजन के आधार पर समकक्ष हैसियत वाले व्यक्तियों के समूहों - में बंटे होते हैं। चीफडम समाजों में स्तर मात्र आर्थिक कारकों के आधार पर नहीं बनते बल्कि वे प्रतिष्ठा, सत्ता और धार्मिक आस्थाओं और परिपाटियों के आधार पर समाज को विभाजित करते हैं।

श्रेणियां और सांस्कृतिक नियम (Sumptuary Rules)

चीफडम समाज सोपानबद्ध (hierarchical) समाज होते हैं, जिनमें कुछ लोगों की संपत्ति, श्रेणी, हैसियत, अधिकारों तथा सत्ता तक पहुंच अन्य लोगों से अधिक होती है। समाज में विभिन्न परिवारों और वंश-समूहों - घर, खानदान और कुलों - की विशिष्ट निर्धारित श्रेणी होती है और उन्हें उस श्रेणी के आधार पर कुछ अधिकार, विशेषाधिकार और दायित्व सौंपे जाते हैं। निचले व ऊपरी स्तरों के बीच सामाजिक अंतर्क्रिया का संचालन सांस्कृतिक नियमों (Sumptuary Rules) या सांस्कृतिक मानकों और प्रथाओं के तहत होता है जो उच्च हैसियत वाले समूहों को शेष समाज से अलग करते हैं। सामान्यतः, जितनी ऊंची हैसियत व श्रेणी होगी, आभूषण, पहनावा और सजावटी वस्तुएं (प्रतीक) उतने ही अलंकारपूर्ण होंगे। उदाहरण के लिए, मिसिसिपी क्षेत्र के देशज अमरीकियों Natchez में उच्च श्रेणी के सदस्य पूरे शरीर पर गोदने गुदवाते थे, जबकि निम्न श्रेणी के लोग कुछेक गोदने ही गुदवाते थे (Schildkrout and Kaeppler 2004)।

प्रशांत क्षेत्र के कुछ चीफडम्स में ऐसे सांस्कृतिक नियम थे जिनके तहत जनता से सर्वोच्च मुखिया नहीं बल्कि एक विशेष प्रवक्ता मुखिया बात करता था। सर्वोच्च मुखिया आद्य शब्दावली से युक्त एक कुलीन भाषा बोलता था जिसमें ऐसे शब्द होते थे जिनका उपयोग आम लोग एक-दूसरे के साथ नहीं कर सकते थे। अन्य सांस्कृतिक नियमों में उच्च श्रेणी के लोगों को छूने या उनके साथ खाना खाने की मनाहियां वगैरह थे। सांस्कृतिक नियमों में परिधान, विवाह, लेन-देन, और अन्य सांस्कृतिक प्रथाओं को लेकर भी मापदंड निर्धारित थे। कई चीफडम्स में सामाजिक रूप से नीचे लोगों को 'सामाजिक श्रेष्ठियों' के समक्ष दंडवत होना पड़ता था और सम्मान के अन्य संकेतों का प्रदर्शन

करना पड़ता था। ऐसे अधिकांश समाजों में गैर-बराबरी और ऊंच-नीच (hierarchy) के प्रतीक गहराई में निहित थे।

एक प्रकरण अध्ययन: पोलीनेशिया और स्तरीकृत वंश-समूह पोलीनेशियाई द्वीपों के बारे में जनजातीय-ऐतिहासिक डैटा में चीफडम समाजों में सामाजिक स्तरीकरण के कुछ अत्यंत विस्तृत विवरण मिलते हैं। सामाजिक संगठन का आदर्श आधार शंक्वाकार कुल (conical clan) था (देखें चित्र 10.7) जो एक विस्तृत वंश-समूह था जिसका एक साझा पूर्वज होता था जिसे आम तौर पर पितृवंशीय परंपरा के आधार पर चिंहित किया जाता था (Kirchoff 1955; Sahlins 1968; Goldman 1970)। किसी व्यक्ति की श्रेणी और वंशावली इस आधार पर तय होती थी कि वह संस्थापक पूर्वज से कितनी दूर का रिश्तेदार है, जैसा कि चित्र 10.7 में दर्शाया गया है। पूर्वज से सीधे वंशानुक्रम में सर्वोच्च श्रेणी वाले वरिष्ठ पुरुष से सम्बंध में कोई व्यक्ति जितना निकट होगा/गी, उसकी श्रेणी व हैसियत उतने ही ऊंचे होंगे। दरअसल, मार्शल साहलिन्स (Marshall Sahlins 1985) ने सुझाया है कि हवाईवासी ऊपर से नीचे वंशानुक्रम (descent) नहीं देखते थे बल्कि नीचे से शुरू करके प्राचीन शासक वंश से सम्बंध (ascent) देखते थे।

चित्र 10.7 शंक्वाकार कुला का एक मॉडल

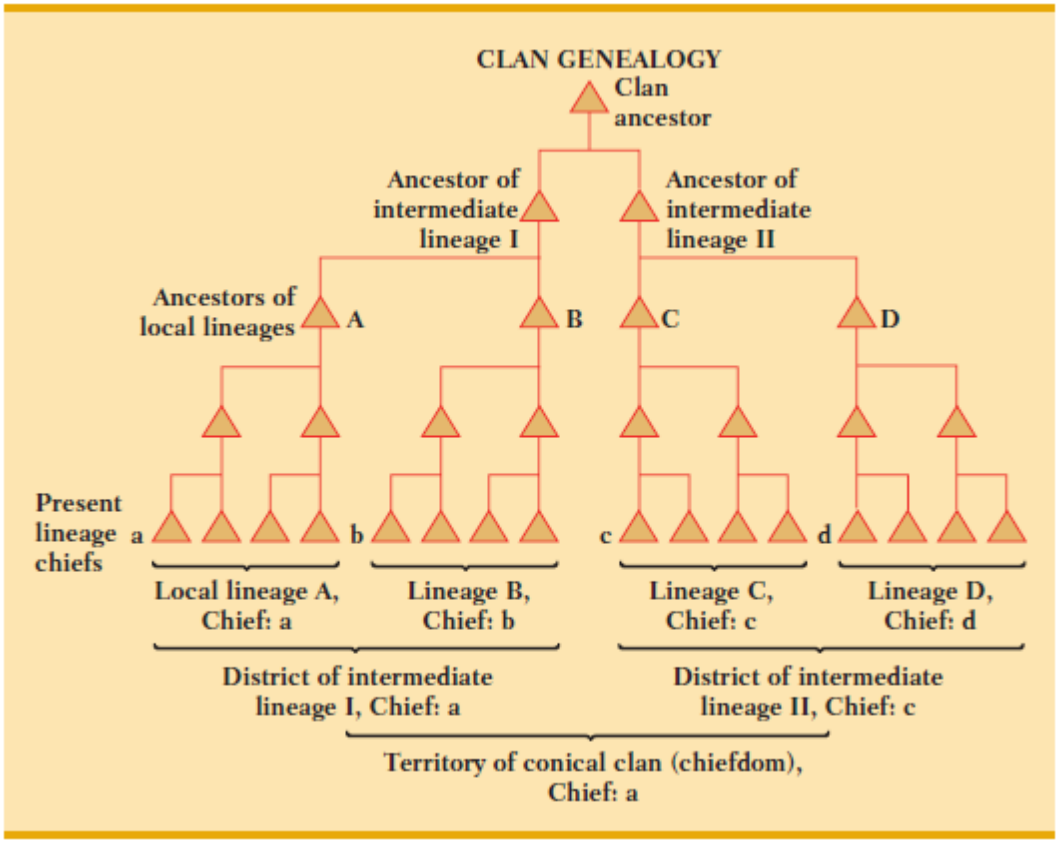

हालांकि पोलीनेशियन समाजों में पितृवंशीय रुझान दिखता है, किंतु अधिकांश समाज उभयवंशी थे (Goodenough 1955; Firth 1957)। वरिष्ठ पुरुष गांवों में स्थानीय वंश-समूह के मुखिया होते थे। इन स्थानीय समूहों को अपेक्षाकृत बड़े, वरिष्ठ समूह, जो शंक्वाकार कुल में सन्निहित होते थे, के सापेक्ष श्रेणी दी जाती थी। उभयपक्षीय नियमों के चलते कतिपय समूहों में जन्म लेने वाले लोगों को अपनी श्रेणी व हैसियत चुनते समय यह विकल्प मिलता है कि वे अपने पितृवंश के साथ सम्बद्धता रखे या मातृवंश के साथ। आम तौर पर इन चीफडम में इस तरह के वंशानुक्रम के अलावा हैसियत अर्जित करने के लिए ऊपर की ओर गतिशीलता का कोई तरीका उपलब्ध नहीं था।

विवाह

जनजातीय समाजों की तरह, चीफडम्स में भी अधिकांश विवाह सावधानीपूर्वक निर्धारित किए जाते थे। इनमें कभी-कभी अलग-अलग वंश समूहों के कज़िन विवाह शामिल थे।

जो लोग अपने वंश-समूह से बाहर विवाह करते थे (एक्सोगैमी) वे प्राय: अपने सामाजिक स्तर के अंतर्गत ही विवाह करते थे (एंडोगैमी)। अलबत्ता, कुछ चीफडम्स में कभी-कभी उच्चतर स्तर के पुरुष का विवाह निम्न स्तर की स्त्री के साथ संयोजित किया जाता था (हायपरगैमस विवाह)। मानव वैज्ञानिक जेन कोलियर (Jane Collier 1988) ने पाया कि जिन समाजों में वंशानुक्रम के आधार पर ऊंच-नीच का बोलबाला होता है, उनमें स्त्रियां निम्न श्रेणी के पुरुषों के साथ विवाह से कतराती है और कोशिश करती हैं कि ऐसे पुरुषों से विवाह करें जिनके पास ज़्यादा आर्थिक व राजनैतिक अधिकार हों।

उत्तरी अमेरिका के एक चीफडम में एक ऐसी स्थिति देखने को मिलती है जहां विवाह पूरे समाज के लिए सामाजिक गतिशीलता का व्यवस्थित तरीका उपलब्ध कराते हैं। मिसिसिपी क्षेत्र के Natchez Indians एक मातृवंशीय समाज था जो चार स्तरों में बंटा था: महान सूर्य प्रमुख (Great Sun chief) (सर्वोच्च श्रेणी के वंश का सबसे बड़ा पुत्र) और उसके भाई, आभिजात्य वंश, सम्मानित वंश और निकृष्ट 'स्टिंकार्ड' (stinkards)। तीन ऊपरी स्तरों के सदस्यों को निचले स्तर (स्टिंकार्ड) से विवाह करना होता था (हायपोगैमी)। इससे पीढ़ी-दर-पीढ़ी एक किस्म की नियमित सामाजिक गतिशीलता सुनिश्चित होती थी। ऊपरी तीन श्रेणियों के बच्चे अपनी मां की हैसियत अख्तियार करते थे, बशर्ते कि वह स्टिंकार्ड न हो।

यदि महान सूर्य प्रमुख की स्त्री किसी स्टिंकार्ड से विवाह करती तो उनके बच्चे ऊपरी स्तर, महान सूर्य, के सदस्य हो जाते। यदि कोई आभिजात्य स्त्री किसी स्टिंकार्ड से विवाह करती तो उनके बच्चे आभिजात्य बन जाते। अलबत्ता, यदि कोई आभिजात्य पुरुष किसी स्टिंकार्ड से विवाह करता तो उनके बच्चे स्तर में गिरकर सम्मानित वंश की श्रेणी में पहुंच जाते। विवाह के ज़रिए सारे स्टिंकार्ड बच्चे हैसियत के सोपानों में ऊपर की ओर बढ़ते थे।

हालांकि यह व्यवस्था एक हद तक सामाजिक गतिशीलता की इज़ाज़त देती थी किंतु स्टिंकार्ड स्तर को बनाए रखना भी ज़रूरी था ताकि ऊपरी स्तरों के लोगों को वैवाहिक साथी मिल सकें। स्टिंकार्ड स्तर को बनाए रखने का एक तरीका था कि दो स्टिंकार्ड

आपस में विवाह करें। उनके बच्चे निचले स्तर पर बने रहेंगे। इसके अलावा, युद्ध में बंदी बनाए गए लोगों से स्टिंकार्ड श्रेणी को बनाए रखा जाता था।

एंडोगैमी चीफडम समाजों में विवाह एंटोगैमस और एक्सोगैमस दोनों प्रकार के होते थे। हालांकि हो सकता है कि विवाह अलग-अलग वंश-समूह के आधार पर एक्सोगैमस हो, किंतु आम तौर पर पति-पत्नी एक ही सामाजिक श्रेणी के होते थे (एंडोगैमी)। ऐसे एंडोगैमस विवाह सावधानीपूर्वक संयोजित किए जाते थे ताकि उच्च श्रेणी के वंश समूहों में वंशानुक्रम के अनुसार उपयुक्त रिश्तेदारियां और वंशानुक्रम के सम्बंध बने रहें। अक्सर इसके लिए एक ही स्तर के अलग-अलग वंश समूहों के बीच कज़िन विवाह किए जाते थे। हवाईवासी चीफ्स में एंडोगैमी के नियमों का परिणाम प्राय: भाई-बहनों की शादी के रूप में सामने आता था, जिन्हें शाही-इनसेस्ट विवाह कहा जाता था। एक मानव वैज्ञानिक ने इन भाई-बहन विवाहों को विभिन्न हवाई द्वीपों के मुखिया परिवारों के बीच गठबंधन बनाने की कोशिश बताया है (Valeri 1985)।

बहु-पत्नित्व चीफडम समाजों में कई शासक परिवार बहु-पत्नी प्रथा चलाते थे। उत्तर-पश्चिमी तट के Tsimshian में मुखिया की 20 तक पत्नियां हो सकती थीं, जो आम तौर पर अन्य समूहों के उच्च श्रेणी के वंशों की होती थीं। छोटे मुखिया निम्नतर वंशों की कई पत्नियों से विवाह करते थे। कुछ मामलों में, निम्न श्रेणी के वंश की कोई स्त्री अपने पिता की राजनैतिक जोड़-तोड़ के दम पर उच्च वंश में विवाह कर लेती थी। उदाहरण के लिए, कोई पिता अपनी पुत्री का विवाह ऊंची श्रेणी के किसी मुखिया से करवा सकता था। ऐसे सारे बहु-पत्नीक विवाहों के साथ वस्तुओं का लेन-देन होता था जो चीफ के सोपानों में ऊपर तक जाता था, जिसके परिणामस्वरूप अतिशेष संसाधनों और पत्नियों का संचय होता रहता था (Rosman and Rubel 1986)। Trobriand Islanders में पारंपरिक रूप से पुरुष मुखिया की विभिन्न वंशों की 60 तक पत्नियां होती थीं। कई चीफडम समाजों में उच्च स्तरों पर बहु-पत्नीत्व की ऊंची दर होती थी।

चीफडम के सामान्य सामाजिक सिद्धांत चीफडम समाजों में परिवार का सामान्य रूप विस्तृत परिवार का था, जिसमें एक ही घर में तीन पीढ़ियां रहती थीं। उदाहरण के लिए, प्रशांत क्षेत्र में बुनियादी घरेलू इकाई आम तौर पर तीन पीढ़ियों से बनी होती थी; कुछ

मामलों में दो-तीन भाई अपने बच्चों के साथ घर के स्थायी निवासी होते थे। गांव के किसी एक इलाके के परिवार प्राय: एक ही वंश के होते थे। चीफडम समाजों में विस्तृत परिवार ही आम तौर पर जीवन निर्वाह के लिए उत्पादन व उपभोग की बुनियादी इकाई थे।

अलग-अलग चीफडम के बीच विवाहोपरांत निवास को लेकर विविधता थी। विभिन्न क्षेत्रों में पितृ-स्थानिक, मातृ-स्थानिक व उभय-स्थानिक निवास के नियम होते थे। प्रशांत क्षेत्र के कई चीफडम्स में पाए जाने वाले उभय-स्थानिक नियम से लोगों को अपना वंश उस पूर्वज (पुरुष या स्त्री) के साथ जोड़ने में मदद मिलती थी जो समाज में सर्वोच्च श्रेणी का हो। इस लचीलेपन के चलते कुछ व्यक्तियों को संपत्ति, विशेषाधिकार और सत्ता प्राप्त करने में मदद मिलती थी जबकि चीफडम समाजों में हैसियत की गतिशीलता पर निहित प्रतिबंध थे (Goodenough 1956)।

जेंडर

सामान्यत: चीफडम समाजों में जेंडर सम्बंध अत्यंत गैर-बराबरी के थे, जिनमें पुरुष स्त्रियों पर आर्थिक व राजनैतिक रूप से हावी रहते थे। संयोजित विवाह और साथ में वधू-संपत्ति के भुगतान ने मिलकर पुरुषों को बच्चों और स्त्रियों के श्रम पर हक जताने में समर्थ बनाया। यह प्रथा खास तौर से सर्वोच्च श्रेणी के वंशों में ज़्यादा महत्वपूर्ण थी। किसी स्त्री की सफलता का दारोमदार पूरी तरह उसके भाई-बहनों और माता-पिता की श्रेणी पर निर्भर होता था। उच्च श्रेणी के पुरुष, जो अपने वैवाहिक सम्बंधों, श्रम और भावी संतानों पर नियंत्रण रखना चाहते थे और उनका प्रबंधन करना चाहते थे, वे प्राय: निम्न श्रेणी के भाइयों वाली स्त्रियों से विवाह करते थे।

स्त्री की खुशकिस्मती इसी में थी कि वह या तो उच्च श्रेणी के वंश-समूह में जन्म ले या ऐसे वंश में उसका विवाह हो जाए। ऐसे में उसकी आरोपित या अर्जित हैसियत सुरक्षित रहती थी। मानव वैज्ञानिक लौरा क्लाइन (Laura Klein 1985) ने वर्णन किया है कि कैसे Tsimshian Indians में उच्च श्रेणी की स्त्रियां समाज में अपनी हैसियत बनाए रख पाती थीं। साहलिन (Sahlins 1985) के मुताबिक पारंपरिक हवाई समाज में अत्यंत उच्च श्रेणी के मुखियाओं की पत्नियां अपनी ऊंची हैसियत बनाए रखने के लिए 40 तक

पुरुषों से विवाह करती थीं (एक प्रकार का शाही बहु-पतित्व)। लिहाज़ा शासक स्तर की स्त्रियों की हैसियत अन्य स्तरों के पुरुषों और स्त्रियों दोनों से ऊंची होती थी। उत्तरी अमेरिका के अपालाचिया (Appalachia) क्षेत्र के विभिन्न चीफडम्स के बारे में एक रोचक चर्चा में पुरातत्ववेत्ता लिन सुलिवान (Lynne Sullivan) और क्रिस्टोफर रॉडनिग (Christopher Rodning) बताते हैं कि पुरुषों और स्त्रियों के बीच एक पूरक सम्बंध था, जिसमें शासक आभिजात्य के अंदर सत्ता तक पहुंचने के कई रास्ते थे (2 0 0 1)। पुरुष कस्बों और गांवों पर शासन करते थे जबकि स्त्रियां रिश्तेदारियों के समूह पर। ये भेद मुखिया आभिजात्य के दफन के वक्त उभरते थे। पुरुषों को सार्वजनिक इमारतों में दफन किया जाता था जबकि स्त्रियों को आवासीय इमारतों में।

अर्थात, चीफडम समाजों में शासनकर्ता मुखिया आभिजात्य में स्त्रियों की महत्वपूर्ण हैसियत थी, किंतु सामान्य रूप से आर्थिक व राजनैतिक रूप से नियंत्रण तथा वर्चस्व पुरुषों के पास था।

उम्र

कई चीफडम समाजों में वरिष्ठ पुरुषों को अन्य लोगों के मुकाबले बहुत अधिक अधिकार, उच्च श्रेणी और प्रतिष्ठा प्राप्त थी। कुछ जनजातीय समाजों के समान, इस तरह की गैर-बराबरी बुज़ुर्गराज व्यवस्था को जन्म देती है। जैसे-जैसे पुरुषों - खास तौर से उच्च श्रेणी के वंश के पुरुषों - की उम्र बढ़ती उन्हें हैसियत, विशेषाधिकारों और युवाओं से सम्मान के रूप में अधिकाधिक मिलता था। चूंकि वरिष्ठ पुरुष उत्पादन, विवाह, श्रम और अन्य आर्थिक गतिविधियों को नियंत्रित करते थे, वे वर्चस्व पूर्ण राजनैतिक समूह बन गए थे। वरिष्ठ पुरुषों के पास विशेष ज्ञान भी होता था और वे धार्मिक अनुष्ठानों को भी नियंत्रित करते थे। इस वजह से उनके अधिकारों में और वृद्धि हुई। उनकी एक प्रमुख ज़िम्मेदारी इस विश्वास को आगे बढ़ाना था कि श्रेणी किसी व्यक्ति के वंश-समूह पर निर्भर है और हैसियत वंशानुगत है। कुछ जनजातीय समाजों के समान ही, पितृसत्ता और बुज़ुर्गराज के सम्मिश्रण से सांस्कृतिक एकाधिकार (hegemony) का जन्म हुआ - ऐसे मानक, परिपाटियों, आस्थाओं और मूल्यों का

आरोपण जो उच्च श्रेणी के हितों को पुष्ट करें। यह सांस्कृतिक वर्चस्व चीफडम समाजों में कानून और धर्म की चर्चा के दौरान और स्पष्ट सामने आएगा।

गुलामी

अगले अध्याय में हम चर्चा करेंगे कि कैसे चीफडम्स बार-बार काफी व्यवस्थित, संगठित युद्धों में लिप्त होते थे। इन युद्धों का एक परिणाम लोगों को बंदी बनाए जाने के रूप में सामने आता था, जिन्हें गुलाम कहा जाता था। चीफडम्स में गुलामी का वही अर्थ या आशय नहीं था जो ज़्यादा पेचीदा राज्य-समाजों में नज़र आता है और इसमें मनुष्यों पर निजी संपत्ति के तौर पर स्वामित्व शामिल नहीं था। इस मायने में, यह बागान गुलामी से काफी अलग थी जो आगे चलकर अमेरिका में विकसित हुई थी। कुछेक अपवादों को छोड़ दें, तो चीफडम में गुलामों को विवाह या दत्तक के माध्यम से रिश्तेदारी समूहों में शामिल कर लिया जाता था और वे लगभग बाकी लोगों जैसे ही श्रम करते थे। अलबत्ता, ज़्यादा समतामूलक बैंड व जनजातीय समाजों के विपरीत, चीफडम्स में गुलाम श्रेणी की शुरुआत देखी जा सकती है।

Natchez की चर्चा में हम चीफडम गुलामी व्यवस्था का एक उदाहरण प्रस्तुत कर चुके हैं। अलबत्ता, याद करें कि उच्च श्रेणी के सदस्यों का दायित्व था कि वे स्टिंकार्ड श्रेणी के व्यक्ति से विवाह करें। अर्थात Natchez में वंशानुगत गुलाम आबादी नहीं थी।

इन सामान्यीकरणों का एक अपवाद कुछ उत्तर-पश्चिमी तट के अमेरिकन इंडियन्स में मिलता है, जो एक वंशानुगत गुलाम व्यवस्था चलाते थे। चूंकि किसी गुलाम से विवाह करना गंदा माना जाता था, गुलामी एक वंशानुगत स्थिति हो गई थी (Kehoe 1995)। गुलामों के बच्चे स्वत: ही गुलाम हो जाते थे, जिसके चलते एक स्थायी गुलाम श्रेणी बन गई। इन गुलामों - अधिकांश युद्ध बंदी - को उत्सवों से बाहर रखा जाता था और कभी-कभी नरबलि के दौरान इनकी हत्या कर दी जाती थी। इसके अलावा, इनका लेन-देन भी होता था जिसके चलते एक किस्म का मानव व्यापार शुरु हो गया। अलबत्ता, इस व्यवस्था में भी युद्ध में पकड़े गए गुलामों को उनके रिश्तेदार फिरौती देकर छुड़ा सकते थे या वे खुद अपनी आज़ादी खरीद सकते थे (Garbarino 1988)।

खेतिहर समाजों में सामाजिक संरचना

10.5 खेतिहर राज्यों में परिवार, रिश्तेदारियों, विवाह, जेंडर और उम्र के पैटर्न की चर्चा कीजिए

चूंकि राज्य-पूर्व समाजों की अपेक्षा खेतिहर राज्य ज़्यादा पेचीदा और ज़्यादा संगठित थे, इसलिए वे विभिन्न हैसियत के पदों पर दाखिले के लिए मात्र रिश्तेदारियों पर निर्भर नहीं रह सकते थे। समाज को संगठित करने में रिश्तदारी की अपेक्षा भूमि स्वामित्व और व्यवसाय कहीं ज़्यादा महत्वपूर्ण हो गए। केंद्रीकृत खेतिहर समाजों में समाज के प्रमुख एकीकारक सिद्धांत के तौर पर रिश्तेदारी समूहों का स्थान स्वयं राज्य ने ले लिया।

रिश्तेदारी और हैसियत

अलबत्ता, शेष समाजों के समान, परिवार और रिश्तेदारी सामाजिक संगठन का एक महत्वपूर्ण हिस्सा बने रहे। आभिजात्य और शाही परिवारों में रिश्तेदारी हैसियत का प्रमुख निर्धारक रही। मिस्र और इंका के शाही परिवारों में भाई-बहन के विवाह के रूप में शाही इनसेस्ट से पता चलता है कि खेतिहर समाजों में हैसियत की रक्षा में रिश्तेदारियां कितनी महत्वपूर्ण थीं। सर्वोच्च हैसियत हासिल करने का आम तरीका पुश्तैनी यानी हैसियत का उत्तराधिकार था। सर्वोच्च श्रेणी की सदस्यता आम तौर पर उन लोगों के लिए बंद थी जिनके पास आभिजात्य अथवा श्रेष्ठि समूह के साथ उपयुक्त वंश सम्बंध न हों।

विस्तृत परिवार अधिकांश खेतिहर समाजों में शहरी व ग्रामीण दोनों क्षेत्रों में विस्तृत परिवार ही परिवार का प्रमुख प्रकार था। पारिवारिक बंधन अधिकांश कृषकों के लिए निर्णायक थे। आम तौर पर कृषक विस्तृत परिवार के सदस्य ज़मीन के साझा स्वामि होते थे और खेती के काम में सहयोग करते थे। कुछ हद तक, सघन कृषि उत्पादन के लिए ज़रूरी था कि बड़े-बड़े विस्तृत परिवार हों जो फसलें लगाने, उगाने और काटने के लिए ज़रूरी श्रम उपलब्ध करा सकें (Wolf 1966; L. Stone 2005)। बड़े-बड़े पारिवारिक समूहों को अपने संसाधन व श्रम जुटाना होते थे ताकि आर्थिक उत्पादन किया जा सके।

सहयोग को बढ़ावा देने के लिए खाद्यान्न, वस्तुओं और श्रम का सामान्य आपसी लेन-देन इन परिवारों में आम बात थी।

अन्य रिश्तेदारी सम्बंध 53 खेतिहर सभ्यताओं के बहु-संस्कृति सर्वेक्षण में के मार्टिन और बारबरा वूरीस (Kay Martin and Barbara Voorhies 1975) ने पाया कि 45 प्रतिशत में पितृवंशीय रिश्तेदारी समूह थे, 45 प्रतिशत में द्विपक्षीय समूह थे जबकि 9 प्रतिशत में मातृवंशीय समूह थे। म्यांमार, थाईलैण्ड और कंबोडिया जैसे कुछ दक्षिणी-पूर्वी एशियाई समाजों में द्विपक्षीय वंश समूहों के साथ-साथ किंडर्ड समूह भी मौजूद थे। कुछ परिस्थितियों में, ये किंडर्ड आपसी लेन-देन के ज़रिए खेतिहर उत्पादन के लिए घरेलू श्रम उपलब्ध कराते थे। किंडर्ड के माध्यम से जुड़े परिवार धान की रोपाई और कटाई के लिए श्रम का नियमित लेन-देन करते थे।

नायरों में परिवार की संरचना दक्षिण भारत के केरल प्रांत में एक मातृवंशीय समाज नायर में असामान्य विवाह प्रथा थी जिसके चलते उल्लेखनीय रूप से भिन्न परिवार संरचना का जन्म हुआ। उनमें सम्बंधम नामक एक विज़िटिंग आनुष्टानिक संभोग व्यवस्था की प्रथा प्रचलित थी (Gough 1961; L. Stone 2005)। हर दसेक साल में नायर एक समारोह का आयोजन करते थे जिसमें एक मातृवंश की स्त्रियों का 'विवाह' किसी दूसरे मातृवंश के पुरुषों से किया जाता था। समारोह में पुरुष अपनी धर्मपत्नी के गले में सोने का एक आभूषण पहनाएगा। तीन दिन के सहवास के पश्चात यौन समागम हो भी सकता है और नहीं भी हो सकता है। यह लड़की की उम्र पर निर्भर करता है। इसके बाद, स्वयं को इस सहवास के दूषण से शुद्ध करने हेतु दम्पति स्नान करते हैं। समारोह के बाद पुरुष का स्त्री पर कोई अधिकार नहीं होता। आगे चलकर, स्त्री अपनी ही जाति या आम तौर पर अपने से ऊपर की जाति (जिसे हायपरगैमी कहते हैं) के कई पुरुषों के साथ विवाह करके बच्चे पैदा कर सकती है। स्त्रियां अपने से नीची जाति के पुरुष से विवाह नहीं कर सकतीं। नायर व्यवस्था इस मायने में अनोखी थी कि कोई भी पति अपनी पत्नी के साथ निवास नहीं करता था। पति रात के समय पत्नी के पास आएगा किंतु वह घर में नहीं रहेगा। स्त्री पर और उसके बच्चों पर अधिकार मातृवंशीय समूह का होगा। चूंकि स्त्रियों के एक से अधिक पति हो सकते थे, इसलिए समाज बहु-पति प्रथा वाला था। अलबत्ता, चूंकि पुरुष की भी एक से अधिक पत्नियां हो सकती थीं,

इसलिए नायर बहु-पत्नी भी थे। लिहाज़ा, पारिवारिक इकाई में भाई और बहन होते थे, स्त्री की पुत्रियां और नातिनें होती थीं और उनके बच्चे होते थे। वधू तथा उसके बच्चों का दायित्व था कि उसके धर्म-पति की मृत्यु पर एक अनुष्ठान करें।

पश्चिमी दृष्टिकोण से, नायर वैवाहिक व्यवस्था शायद एक परिवार जैसी न लगे क्योंकि यह दो परिवारों को रिश्तेदारी के बंधन में नहीं बांधती; और तो और, यह पति-पत्नी का बंधन भी नहीं बनाती। इसके अलावा, पुरुषों का अपने बच्चों के साथ जैविक सम्बंध बहुत कम होता था। अलबत्ता, यह व्यवस्था दक्षिण भारत की ऐतिहासिक परिस्थिति का प्रत्युत्तर था। पारंपरिक रूप से अधिकांश नायर पुरुष सेना में भर्ती हो जाते थे। इसके अलावा, मातृवंशीय समूहों के स्वामित्व वाली ज़मीन पर कृषि कार्य नीची जाति के भूमिहीन कृषकों द्वारा किया जाता था। बच्चे अपनी पारिवारिक ज़मीन पर काम नहीं करते थे। लिहाज़ा, युवा नायर पुरुषों का अपने मातृवंशीय समूह के प्रति कोई दायित्व न था और वे पूर्णकालिक योद्धा बनने को स्वतंत्र थे (L. Stone 2010)। नायर समाज पर हाल के जनजातीय अनुसंधान ने दर्शाया है कि इस असाधारण विवाह प्रणाली का ज़्यादा कुछ शेष नहीं बचा है और मातृवंशीय व्यवस्था बढ़ते क्रम में पितृवंशीय हो गई है और एकल परिवार तथा पति-पत्नी मोनोगैमी की ओर बढ़ी है (Menon 1996)।

विवाह

विवाह प्रथाएं, जिन सबके आर्थिक व राजनैतिक निहितार्थ हैं, खेतिहर समाजों में सामाजिक सम्बंधों के महत्व को उजागर करती हैं। चूंकि विवाह के परिणाम दूरगामी होते हैं, इसलिए वैवाहिक साथी का चुनाव महत्वपूर्ण माना गया था और इसे युवा लोगों के भरोसे नहीं छोड़ा गया था। विवाह प्राय: पालकों द्वारा तय किए जाते थे और इसमें कभी-कभी बिचौलियों की मदद ली जाती थी। विवाह तय करते वक्त ज़मीन, संपदा और राजनैतिक सम्बंधों की दृष्टि से विभिन्न विस्तृत परिवारों के बीच गठबंधन का आकलन किया जाता था। यह बात विशेष रूप से राजनैतिक आभिजात्य पर लागू होती थी, जैसे कि रोमन समाज में (L. Stone 2005)। कुछ मामलों (जैसे चीन) में विवाह तब तय कर दिए जाते थे जब बच्चे छोटे होते थे (देखें अध्याय 4)। चीफडम समाजों की तरह,

आभिजात्य विवाह प्राय: एंडोगैमस होते थे। अलबत्ता, कृषक आम तौर पर अपने विस्तृत परिवार और व्यापक रिश्तेदारी समूह से बाहर विवाह करते थे।

दहेज व वधूसंपत्ति अधिकांश कृषि समाजों में किसी न किसी रूप में वैवाहिक लेन-देन की प्रथा थी जिसमें ज़मीन, वस्तुओं या खाद्यान्न का आदान-प्रदान होता था। एशिया और युरोप में लेन-देन का सबसे आम स्वरूप दहेज था - वधू परिवार द्वारा वर परिवार को अदा की जाने वाली वस्तुएं तथा संपत्ति। इस मायने में, दहेज वधूसंपत्ति का उलट जान पड़ता है, जिसमें वर परिवार वधू के बदले संपत्ति देता है। दहेज का उपयोग विवाह अनुबंध तय करने के लिए परिवारों के बीच सामाजिक व आर्थिक लेन-देन के तौर पर किया जाता था। भारतीय, युरोपीय या चीनी वधू से उम्मीद की जाती कि वह अपने विवाह में भौतिक संपदा लेकर आएगी।

एक बहु-संस्कृति तुलना में, जैक गुडी (Jack Goody 1976) ने पाया कि वधूसंपत्ति की प्रथा बागवानी समाजों में ज़्यादा पाई जाती है जबकि दहेज जटिल खेतिहर समाजों में पाया जाता है। युरोप व एशिया में सघन कृषि में हल और पशुओं का इस्तेमाल होता था, जनसंख्या का घनत्व काफी अधिक था और ज़मीन का अभाव था। गुडी ने परिकल्पना प्रस्तुत की कि दहेज प्रथा का एक परिणाम संपत्ति को आभिजात्य समूह के हाथों में केंद्रित करना है। जैसे-जैसे व्यापारिक व अफसरशाही परिवारों ने अपनी संपत्ति को विस्तार दिया और अपनी हैसियत बढ़ाई, वैसे-वैसे ये समूह वधूसंपत्ति से दहेज की ओर बढ़े। जहां वधूसंपत्ति वर और वधू के परिवारों के बीच गठबंधन स्थापित करके संपत्ति के प्रवाह का एक साधन था, वहीं दहेज संपत्ति और संपदा को परिवारों के पितृवंशीय क्रम में केंद्रित करने का तरीका था। भारत, चीन व यूनान के आभिजात्य वैवाहिक लेन-देन के इस रूप पर भरोसा करते थे।

हालांकि दहेज का लेन-देन मुख्य रूप से उच्च सामाजिक-आर्थिक समूहों में ज़्यादा महत्वपूर्ण था, जिसमें संपदा और हैसियत केंद्रीय महत्व रखते थे, किंतु यह रिवाज कृषकों में भी प्रचलित था। कृषक समाज में वधूसंपत्ति अनजानी बात नहीं थी। उत्तरी व दक्षिणी भारत में वधूसंपत्ति निम्न सामाजिक-आर्थिक वर्गों में ज़्यादा प्रचलित हो गई थी। वैसे भी, निर्धनतम परिवारों में विरासत के नाम पर खास कुछ होता नहीं था, और

वास्तविक लेन-देन मूलत: विवाह के भोज तथा सामान्य घरेलू सामान के खर्च के लिए होता था।

बहु-पत्नी प्रथा राज्य-पूर्व समाजों के विपरीत, खेतिहर राज्यों में बहु-पत्नी प्रथा बहुत कम थी, सिवाय आभिजात्य समूहों के। कुछ मामलों में एशिया, मध्य-पूर्व, युरोप और अन्यत्र इन राज्य-समाजों के शासकों के बड़े-बड़े हरम होते थे, जहां कई स्त्रियां एक ही शासक से जुड़ी होती थीं। कई खेतिहर राज्यों के शाही घरों में शासकों के लिए सैकड़ों और कभी-कभी हज़ारों स्त्रियां उपलब्ध होती थीं। चीन, जापान, कोरिया, नेपाल, वियतनाम, थाईलैण्ड, इंडोनेशिया, फारस, मंगोल, मध्य एशिया, मुगल भारत, ओटोमान तुर्की, माया और एज़टेक शासन तथा कई सारे बिब्लिकल साम्राज्यों में शाही परिवारों में कई पत्नियां और रखैलें होती थीं (Tambiah 1976; Bennett 1983)। कई युरोपीय राजाओं के विस्तृत बहु-पत्नी परिवार होते थे और यह ईसाईयत द्वारा ऐसे विवाहों के विरुद्ध मापदंड बना देने के बाद भी जारी रहा (Stone 2005)। धनवान आभिजात्य पुरुष अपनी पत्नियों के अलावा रखैलें भी रखते थे। उदाहरण के लिए, कई आभिजात्य चीनी पुरुष रखैलें या उप-पत्नियां रखते थे, जबकि इस प्रथा के विरुद्ध कानून थे। अन्य खेतिहर राज्यों में भी उच्च सामाजिक-आर्थिक पदों पर आसीन व्यक्तियों में इसी प्रकार की बहु-पत्नी प्रथा प्रचलित थी। इसके अलावा, कई सारे विवाह एंडोगैमस होते थे, अर्थात उसकी उच्च वर्गीय या उच्च जाति की श्रेणी में होते थे, जैसा कि चीफडम समाजों में होता था।

बहरहाल, अधिकांश जनता के लिए मोनोगैमी विवाह का प्रमुख प्रकार था। अर्थशास्त्री एस्टर बोसरूप (Ester Boserup 1970) ने दलील दी थी कि हल-आधारित खेती करने वाले समाजों में बहु-पत्नी प्रथा की गैर-मौजूदगी का कारण यह था कि परिवार में पत्नियां शामिल कर-करके संचित करने हेतु ज़मीन का अभाव था। इसी प्रकार से, गुडी (Goody 1976) की परिकल्पना थी कि खेतिहर समाजों में, जहां भूमि एक दुर्लभ वस्तु हो, कृषक बहु-पत्नीत्व की ऐय्याशी वहन नहीं कर सकते। ज़ाहिर है, संपदा और हैसियत खेतिहर समाजों में पाए जाने वाले विवाह के पैटर्न को प्रभावित करते थे।

तलाक अधिकांशत:, तलाक खेतिहर सभ्यताओं में बहुत कम होता था। विस्तृत परिवार की कार्पोरेट प्रकृति और परिवार के सदस्यों के बीच सहयोगी खेतिहर श्रम की ज़रूरत ने

आम तौर पर तलाक के विरुद्ध अवरोध का काम किया। इसके अलावा, विवाह संपत्ति के हस्तांतरण का सबसे प्रमुख तरीका था और परिवारों और रिश्तेदारी समूहों के बीच गठबंधन का आधार होता था। लिहाज़ा, परिवार साथ-साथ रहने को प्रवृत्त होते थे और वैवाहिक बंधन के साथ तमाम नैतिक, राजनैतिक और सामाजिक वज़न जुड़ा होता था। भारत में, विवाह को पवित्र बंधन माना जाता था, और इसलिए कानूनन तलाक की अनुमति नहीं थी। इसी प्रकार के मानक युरोप के सामंती समाजों में भी दिखते हैं, जहां ईसाईयत ने परिवार की पवित्रता और विवाह की स्थिरता को मज़बूती दी थी।

अलबत्ता, महिलाओं के लिए तो सम्मानजनक कैरियर या जीवन निर्वाह का एकमात्र विकल्प विवाह ही था। विवाह टूट जाने की स्थिति में अधिकांश महिलाएं लाचार हो जाती थीं। लिहाज़ा, आंतरिक झगड़ों और समस्याओं के बावजूद बहुत ही कम महिलाएं विवाह को समाप्त करने की इच्छुक होती थीं। यह पैटर्न स्त्री-पुरुष की गैर बराबर हैसियत को प्रतिबिंबित करता है।

जेंडर, जीवन निर्वाह और हैसियत सघन खेती की ओर संक्रमण ने पुरुषों और स्त्रियों दोनों की जीवन निर्वाह सम्बंधी भूमिकाओं को प्रभावित किया। मार्टिन और वूराइस (Martin and Voorhies 1975) ने ध्यान दिया कि कृषि प्रणालियों में खाद्य उत्पादन में महिलाओं के श्रम का योगदान कम हुआ। उदाहरण के लिए, हल-आधारित खेती अपनाने की वजह से निंदाई की ज़रूरत बहुत कम रह गई। यह काम मूलत: महिलाएं किया करती थीं। उनका अंदाज़ है कि खेती में महिलाओं की भूमिका कम होने के साथ उनकी सामाजिक हैसियत भी कम होती गई। लिहाज़ा खेतिहर सभ्यताएं जनजातीय और चीफडम समाजों से भी ज़्यादा पितृसत्तात्मक थीं। खेतिहर अर्थ व्यवस्था में महिलाओं को नाकारा समझा जाता था और अधिकांशत: उन्हें खाना पकाने, बच्चे संभालने और घरेलू पशुओं की देखभाल का काम करने तक सीमित कर दिया जाता था। अपने निकट परिवार के बाहर उनके कोई संपर्क भी नहीं होते थे।

मार्टिन और वूराइस (Martin and Voorhies 1975) ने इस बात पर ज़ोर दिया है कि खेतिहर राज्यों में पुरुषों और महिलाओं की भूमिकाओं में स्पष्ट अंतर आया था। महिलाओं को अंदरुनी (घरेलू) कार्यों में सीमित कर दिया गया, जबकि पुरुषों को बाहरी

(सार्वजनिक) गतिविधियों में भाग लेने की अनुमति मिली। सामान्यत: महिलाओं को संपत्ति का स्वामि बनने, राजनीति में भाग लेने, शिक्षा प्राप्त करने या ऐसी किसी गतिविधि में भाग लेने की इज़ाज़त नहीं थी जिसके लिए उन्हें घर के दायरे से बाहर जाना पड़े। जब मार्टिन और वूराइस ने अपना शोध किया था, उसके बाद कई नारीवादी मानव वैज्ञानिकों ने जेंडर भूमिकाओं के सरलीकृत घरेलू और सार्वजनिक विभाजन पर सवाल उठाए हैं। कुछ मामलों में घरेलू दायरे में सार्वजनिक दायरे की गतिविधियां शामिल होती थीं और इससे उलट भी होता था। अलबत्ता, वे इस बात पर सहमत हैं कि इस भेद ने अधिकांश खेतिहर समाजों में जेंडर के विश्लेषण में मदद की है (Lamphere 1997; Ortner 1996)। सामान्य तौर पर, अधिकांश अध्ययन मानते हैं कि इनमें से कई समाजों में स्त्री भूमिका सीमित थी।

स्त्रियों को अलग रखना (पृथक्करण) कई खेतिहर समाजों में स्त्रियों की अत्यंत बाधित भूमिका कई सांस्कृतिक प्रथाओं में झलकती है। उदाहरण के लिए, चीन में पैर बांधने का रिवाज़ अपनाया गया, जिसमें छोटी बच्चियों के पैर बांध दिए जाते थे ताकि उसके पैर न बढ़ें। हालांकि माना जाता है कि इस रिवाज़ के परिणामस्वरूप (चीनी पुरुषों की नज़र में) सुंदर पैर विकसित होते थे, लेकिन इसका असर महिलाओं को गतिहीन बनाने का रहा। उच्च वर्गीय महिलाओं के लिए यह कोई बड़ी बाधा नहीं थी, जिन्हें वैसे भी अन्य महिलाओं के समान रोज़मर्रा के कामों में भाग नहीं लेना पड़ता था और उन्हें नौकर-चाकर उठाकर यहां-वहां पहुंचा देते थे। किंतु पैर बांधने के रिवाज़ का पालन कृषक लोग भी विभिन्न अवधियों के लिए करते थे, जिसकी वजह से कृषक महिलाओं को काफी अपंगता का सामना करना पड़ता था।

इसी प्रकार से, निकट पूर्व, उत्तरी अमेरिका और दक्षिण एशिया के कई इलाकों में पर्दा प्रथा थी, जिसके अंतर्गत महिलाओं को घरों तक सीमित कर दिया जाता था। पर्दा एक फारसी शब्द है जिसका मतलब होता है अवरोध। इस प्रथा में किसी महिला को अपने रिश्तेदारों और मित्रों से मिलने के लिए घर से बाहर जाने के लिए पति की इज़ाज़त लेनी होती थी। इनमें से कुछ इलाकों में, महिला जब सार्वजनिक स्थान पर हो तो उसे अपना सिर चादर से ढांककर रखना होता था (Beck and Keddie 1978; Fernea and Fernea 1979)। स्त्रियों को अलग-थलग रखना कई तरीकों में से एक था जिनके ज़रिए

पुरुष उन बच्चों के पितृत्व पर नियंत्रण रखते थे जिन्हें वे पाल रहे हैं। स्त्रियों को अन्य पुरुषों से अलग-थलग रखना इस बात को सुनिश्चित करने का एक तरीका था कि पत्नियां अन्य पुरुषों के साथ यौन सम्बंधों में लिप्त न हो जाए।

पितृसत्ता और सेक्सिज़्म (लिगभेद) खेतिहर समाजों में सेक्सिस्ट विचारधारा महिलाओं के पृथक्करण को पुख्ता करने के लिए उभरी थी। कई खेतिहर समाजों में स्त्रियों को कुदरती रूप से हीन (inferior) और पुरुषों पर आश्रित माना जाता था। पुरुषों की तथाकथित कुदरती श्रेष्ठता को खेतिहर समाजों की अधिकांश कानूनी, नैतिक, और धार्मिक परंपराओं में पुष्ट किया गया था। इनमें कंफ्यूशियसवाद, इस्लाम, हिंदू धर्म, यहूदी धर्म और ईसाई धर्म शामिल हैं। ओल्ड टेस्टामेंट में कई बार उल्लेख है कि महिलाएं पति की संपत्ति होती हैं, पशुओं और अन्य घरेलू साजो सामान के तुल्य होती है। Leviticus 27:3–7 में महिलाओं को मुद्रा (शेकल्स) में पुरुषों से कहीं कम आंका गया है।

न्यू टेस्टामेंट में भी महिलाओं के प्रति पुरुषवादी रवैये का समर्थन किया गया है। Ephesians (5:22–24) में कहा गया है, "पत्नियों, ईश्वर के समान ही, अपने पतियों के अधीन रहो। क्योंकि पति उसी तरह पत्नी का मुखिया है जैसे ईसा मसीह गिरजाघर का मुखिया है। जैसे गिरजाघर ईसा मसीह के अधीन है, उसी तरह पत्नियों को उनके पति के अधीन रहना चाहिए।"

इस्लाम की कुरान के कई अंश पुरुष प्रधान रवैये और सांस्कृतिक मूल्यों का अनुमोदन करते हैं (जैसा कि हम अध्याय 15 में देखेंगे)। यही स्थिति हिंदू धर्म, बौद्ध धर्म और उन सारे धर्मों की भी है जो दुनिया भर के खेतिहर समाजों में विकसित हुए थे। इनमें से कई खेतिहर समाजों में, पुरुषों को ज़्यादा बुद्धिमान, शक्तिशाली और भावनात्मक रूप से ज़्यादा परिपक्व माना जाता था। इसके अलावा, इनमें से कई समाजों में महिलाओं को यौनिकता के लिहाज़ से खतरनाक माना जाता था; विवाह-पूर्व या विवाहेतर यौन सम्बंधों में पकड़ी गई महिला को कठोर दंड दिया जाता था। कुछ मामलों में पत्थर मार-मारकर उनकी हत्या कर दी जाती थी, जैसा कि ओल्ड टेस्टामेंट के Leviticus में

और कुरान में ज़िक्र है। इसके विपरीत, पुरुषों को विवाहेतर सम्बंधों या कई पत्नियां या रखैलें रखने की इज़ाज़त थी।

महिलाओं की हैसियत में विविधता खेतिहर सभ्यताओं में महिलाओं की भूमिका व हैसियत इलाकों के हिसाब से बदलती थी। उदाहरण के लिए, कुछ इलाकों में जहां मिट्टी की हालत खराब थी, वहां परिवार के लिए उत्पादन करने हेतु पुरुष और स्त्री दोनों कृषकों को साथ-साथ खेतों में काम करना पड़ता था, जिसके चलते अधिक जेंडर समानता पैदा होती थी। थाईलैण्ड और कंबोडिया जैसे अधिकांश दक्षिण-पूर्वी एशियाई देशों में धान की फसल में स्त्री और पुरुष दोनों मिलकर काम करते थे। कुछ मामलों में ज़मीन को सारे बच्चों में, लिंग की परवाह न करते हुए, बराबर-बराबर बांट दिया जाता था, जिससे लगता है कि इन समाजों में तुलनात्मक रूप से स्त्रियां पुरुषों के बराबर थीं। हालांकि इन देशों में महिलाएं अधिकांशत: घरेलू दायरे में और घर के कामों में सिमटी रहती थीं, किंतु वे ग्रामीण समुदाय की निर्णय प्रक्रिया और वित्तीय मामलों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती थीं (Keyes 1995; Van Esterik 1996; Winzeler 1996; Scupin 2006a)।

मानव वैज्ञानिकों ने कुछ खेतिहर सभ्यताओं में सार्वजनिक दायरे में कृषक महिलाओं की भूमिका व हैसियत के कुछ अन्य अपवाद भी खोजे हैं। चीन, मीज़ो-अमेरिका और पूर्वी अफ्रीका में कई महिलाएं बाज़ार में विक्रेताओं की तरह भागीदारी करती थीं। वे अतिशेष उपज या गांवों में बनाई गई दस्तकारी वस्तुओं को बाज़ार लाती थीं। अलबत्ता, यह गतिविधि बुज़ुर्ग महिलाओं तक सीमित थी जिनके बच्चे बड़े हो चुके हों। कुछ मामलों में विक्रेता भूमिका से महिलाओं की हैसियत में वृद्धि होती थी। इनमें से कई महिलाएं सार्वजनिक दायरे में भागीदारी करती थीं, किंतु उन्हें राजनैतिक गतिविधियों से दूर ही रखा जाता था। और तो और, इन महिलाओं को बाज़ार में अपने काम के अलावा, घर के काम भी निपटाने पड़ते थे।

आलोचनात्मक परिप्रेक्ष्य: क्या मातृसत्तात्मक समाज थे?

मानव वैज्ञानिकों को मातृ सत्तात्मक समाजों के अस्तित्व के कोई पुरातात्विक या जनजातीय प्रमाण नहीं मिले हैं। ऐसे समाज अवश्य रहे हैं जिनमें मातृवंशीय सामाजिक संगठन था जिसमें वंशानुक्रम को परिवार में मां की ओर से देखा जाता था। मगर जैसी कि हमने पहले चर्चा की थी, मातृवंशिकता मातृसत्ता में तबदील नहीं होती, जिसमें महिलाओं का पुरुषों पर आर्थिक व राजनैतिक वर्चस्व हो। मातृवंशानुक्रम के आधार पर संगठित समाजों, जैसे कि उपरोक्त Iroquois Indian लोग, में राजनैतिक व आर्थिक मामलों में पुरुषों का दबदबा रहता है। हो सकता है कि इन क्षेत्रों में महिलाओं की ज़्यादा सक्रिय भूमिका हो, मगर इन मातृवंशीय समाजों में पितृसत्ता प्रमुख जेंडर पैटर्न के रूप में प्रचलित होती है।

अलबत्ता, पश्चिम में यह विश्वास काफी समय से रहा है कि किसी समय मातृसत्तात्मक समाज अस्तित्व में थे जिनका स्थान युद्धनुमा पुरुष-प्रधान समाजों ने ले लिया। उदाहरण के लिए, यूनानी और रोमन मायथॉलॉजी, कानून, धर्म और इतिहास की छानबीन करने के बाद जर्मन वकील जोहान जेकब बैकोफेन ने एक प्रभावशाली पुस्तक लिखी थी - *डास मुटरेख्ट* (मां का अधिकार)। यह 1861 में प्रकाशित हुई थी। बैकोफेन का सुझाव था कि मातृवंशीय रिश्तेदारियों के साथ मातृसत्ता ही मनुष्य के विकास का पहला ढांचा था। उनका तर्क था कि चूंकि किसी बच्चे के लिए अपने पिता का पता लगाना असंभव था, रिश्तेदारियां, वंशानुक्रम और उत्तराधिकार का निर्धारण सिर्फ मां की ओर से ही किया जा सकता है। बैकोफेन का मत था कि इन प्रारंभिक आदिम समाजों पर आर्थिक व राजनैतिक दोनों दृष्टि से महिलाओं का वर्चस्व था। मानव वैज्ञानिक जॉन मैकलेलन ने अपनी पुस्तक *प्रिमिटिव सोसायटीज़: एन इंक्वायरी इंटू दी ओरिजिन ऑफ दी फॉर्म ऑफ कैप्चर इन मैरिज सेरेमनीज़* (Primitive Marriage: An Inquiry into the Origin of the Form of Capture in Marriage Ceremonies1865,) में इसी तर्क को आगे बढ़ाया है। युरोप की कई पुस्तकों में मातृसत्ता से पितृसत्ता के इस विकास के अलग-

अलग परिदृश्य प्रस्तुत किए गए हैं।

इसी प्रकार के तर्क का उपयोग करते हुए, एक शुरुआती मानव वैज्ञानिक लुइस हेनरी मॉर्गन (देखें अध्याय 6) ने प्राचीन मातृसत्तात्मक समाज की विक्टोरियाई धारणा को पुष्ट किया था। iroquois indian के अपने जनजातीय अध्ययन और अन्य स्रोतों का इस्तेमाल करके मॉर्गन ने अपनी पुस्तक *एंश्यंट सोसायटी* (Ancient Society 1877) में मत व्यक्त किया है कि मातृसत्तात्मक समाज का एक शुरुआती चरण रहा होगा। उन्होंने इस मत को ठोस आधार देने के लिए दुनिया के अलग-अलग इलाकों में रिश्तेदारियों के पैटर्न का अध्ययन किया था। मॉर्गन ने सुझाया था कि कृषि की ज़्यादा उन्नत शैलियों के विकास के साथ पितृसत्तात्मक अवस्था ने मातृसत्ता के शुरुआती चरण का स्थान ले लिया था। इस सोच के अनुसार, मातृसत्तात्मक समाज संपत्ति के साझा स्वामित्व और बहु-पति प्रथा पर आधारित थे। उनका तर्क था कि निजी संपत्ति और स्वामित्व की अवधारणा के साथ-साथ पितृसत्ता का विकास हुआ था। मॉर्गन के मुताबिक पुरुषों ने मोनोगैमी (एकल विवाह) की संस्था का आविष्कार किया था ताकि अपने बच्चों का पितृत्व सुनिश्चित कर सकें। इससे उन्हें अपनी निजी संपत्ति को अपने पुरुष उत्तराधिकारियों को हस्तांतरित करने में सहूलियत होगी।

युरोपीय विचारक कार्ल मार्क्स और फ्रेडरिक एंजेल्स *एंश्यंट सोसायटी* में प्रस्तुत मॉर्गन के विचारों को लेकर उत्साहित हुए। एन्जेल्स ने अपनी पुस्तक *दी ओरिजिन ऑफ दी फैमिली, प्रायवेट प्रॉपर्टी एंड दी स्टेट* (1884) में निजी संपत्ति के प्रादुर्भाव और पितृसत्तात्मक समाज के उदय के परस्पर सम्बंधों के बारे में लिखा था। इस पुस्तक

और मार्क्स व एंजेल्स की अन्य रचनाओं ने उन्नीसवीं और बीसवीं सदी में समाजवादी व साम्यवादी आंदोलनों को बौद्धिक धरातल प्रदान किया। मॉर्गन का अनुसरण करते हुए, मार्क्स व एंजेल्स ने माना कि कृषि के उन्नत स्वरूप के विकास की वजह से अर्थ व्यवस्था में आए क्रांतिकारी बदलावों का परिणाम यह हुआ कि पुरुषों ने महिलाओं के हाथों से राजनीति का नियंत्रण हथिया लिया। जैसे-जैसे पालतू पशुओं और कृषि भूमि पर पुरुषों ने नियंत्रण हासिल किया, उन्होंने एकल-विवाह (मोनोगैमी) की भी स्थापना की, जिसमें स्त्रियां आजीवन एक ही पुरुष से निष्ठा का वचन देती थीं। इस संस्था ने पुरुषों का अपने बच्चों का पितृत्व सुनिश्चित कर दिया। एंजेल्स ने इस निष्ठा को "मादा लिंग की वैश्विक ऐतिहासिक पराजय" कहा था। मार्क्स और एंजेल्स का मत था कि पितृसत्तात्मक विवाह संस्था और एकल-विवाह स्त्री को संपत्ति और वस्तु मानने का आधार बने जो "पिता द्वारा वधू को वर को सौंपने" (भारत में कन्यादान) जैसे वर्तमान पाश्चात्य अनुष्ठानों में झलकती है। महिलाएं पुरुषों की सेवक बन गईं और उन्होंने पूंजीवादी समाजों में पुरुष की सत्ता तथा संपत्ति के संचय को सहारा दिया। मार्क्स और एंजेल्स का मानना था कि विक्टोरियाई लिंगभेदी रवैये और पुरुष श्रेष्ठतावाद (male chauvinism) पुरुषों की सत्ता और पितृत्व सुनिश्चित करने के लिए विकसित किए गए थे। उनका मानना था कि वैश्विक स्तर पर मातृवंशीय और मातृसत्तात्मक समाजों के पितृवंशीय और पितृसत्तात्मक समाजों में परिवर्तन ने एक अंतरंग घटक स्थापित किया जिसकी परिणति शोषमूलक पूंजीवादी समाजों में हुई।

बीसवीं सदी के अन्य महत्वपूर्ण विचारकों, जैसे सिगमंड फ्रायड (देखें अध्याय 4), ने प्रारंभिक मातृसत्तात्मक समाजों को लेकर इन विचारों का प्रचार-प्रसार किया। एक युरोपीय पुरातत्ववेत्ता स्व. मारिया गिम्बुटास (Maria Gimbutas) ने प्रस्ताव दिया कि प्रारंभिक "मेट्रिस्टिक (matristic)" समाज प्राचीन युरोप में समाज का प्रमुख स्वरूप थे (1982, 1991)। उनका मत था कि जिसे वे "पुराना युरोप (Old Europe, 6500 से 3500 ईसा पूर्व))" कहती हैं उसमें शांतिपूर्ण, सुस्त गांव मौजूद थे जहां पुरुष और स्त्री बराबर के साझेदार थे। गिम्बुटास ने अपनी बात के पक्ष में कई पुरातात्विक वस्तुएं खोज निकालीं। पुरातत्व, कला, मूर्तियों, सेरेमिक बर्तनों, कंचों, सोने, कब्र की वस्तुओं और अन्य चीज़ों के आधार पर उन्होंने सुझाया था कि "पुराने युरोप" की संस्कृति एक माता महादेवी और अन्य देवियों पर विश्वास पर केंद्रित थी। गिम्बुटास के मुताबिक, एक "रानी राजकुमारी" इस मातृ-केंद्रित धार्मिक परंपरा पर शासन करती थी और इसका संचालन करती थी। उन्हें उस काल में शस्त्रास्त्र या युद्ध के कोई प्रमाण नहीं मिले, जिससे इस मान्यता को चुनौती मिलती है कि युद्ध मानव समाजों में सर्वव्यापी और सार्वभौमिक हैं। इसके अलावा, गिम्बुटास ने तर्क दिया कि ये समाज पूरी तरह समतामूलक थे, इनमें कोई वर्ग, जाति, गुलाम और पुरुष शासक नहीं थे।

गिम्बुटास के मुताबिक, "पुराने युरोप" पर 4400 ईसा पूर्व में घुड़सवार पशुपालक जनजाति कुरगन का आक्रमण हुआ था। युरेशियाई घास के मैदानों के ये कुरगन पशुपालक पुरुष वर्चस्व के अधीन थे और इनका सम्बंध इंडो-युरोपीय भाषाओं के प्रारंभिक रूपों से था और इन्होंने ऐसी धार्मिक परंपराएं व मायथॉलॉजी विकसित की थीं जो एक योद्धा संस्कृति को प्रतिबिंबित करती थीं। इनमें पुरुष देवताओं के मंदिर हुआ करते थे जिनमें सूर्य, तारे, गरज और वज्र का प्रतिनिधित्व था। इनके पास कटार और कुल्हाड़ी जैसे वस्तुएं होती थीं जो योद्धा से जुड़ी होती हैं। अंततः कुरगन ने लोहे का हल बनाया जिसका उपयोग खेती में किया जाता था। इस तकनीकी नवाचार ने युरोपीय समाज में पुरुष और स्त्री के सम्बंधों को सदा के लिए बदल डाला। हल और काम करने

के लिए पशुओं से लैस पुरुषों ने खेती के स्त्री-उन्मुखी तरीकों को उखाड़ फेंका। जैसे-जैसे कुरगन "पुराने युरोप" का स्थान लेते गए, महिलाओं को जीवन निर्वाह के घरेलू पक्षों में समेट दिया गया। गिम्बुटास के मुताबिक कुरगन द्वारा प्रसारित मिथकीय व वैचारिक संस्कृति युरोप व अन्यत्र ईसाईयत के आरंभ तक बनी रही।

पुरातत्व वेत्ता लिन मेस्केल (lynn Meskell 1995) ने मारिया गिम्बुटास द्वारा प्रस्तुत पुराने युरोप और कुरगन संस्कृति के परिदृश्य की आलोचना की है। मेस्केल का मत है कि उन्नीसवीं सदी से ही मूल मातृसत्तात्मक देवी मां आधारित समाजों में दिलचस्पी बार-बार उभरती रही है। इस मत को कुछ इको-नारीवादियों द्वारा तथा "न्यू एज" धार्मिक साहित्य में व्यक्त किया जाता रहा है। मेस्केल का कहना है कि ये न्यू एज नारीवादी गिम्बुटास का इस्तेमाल अपने आंदोलन को अतीत की एक युटोपियन दष्टि के धरातल पर स्थित करने का प्रयास करते हैं। प्रागैतिहास के ये देवी मां आधारित "स्त्री-केंद्रित" सिद्धांत वर्तमान समाजों की पितृसत्तातमक संस्थाओं को उखाड़ फेंकने के प्रयासों के औज़ार बन जाते हैं। मेस्केल के मुताबिक ये स्त्री-केंद्रित नज़रिए अपर्याप्त अध्ययनों पर आधारित हैं और वास्तव में मानव विज्ञान में जेंडर अनुसंधान के सकारात्मक पहलुओं को क्षति पहुंचाते हैं। मेस्केल तथा कई अन्य पुरातत्व वेत्ताओं ने कहा है कि गिम्बुटास ने आंकड़ों और वस्तुओं के एक विशाल भंडार को अनदेखा किया है जो उनके सिद्धांत की खामियों को उजागर कर देते। कई सारी पुरावस्तुएं, जैसे पुरुष देवता की मूर्तियों का प्राचुर्य दर्शाती कलाकृतियों को गिम्बुटास के डैटा संग्रह में से खारिज कर दिया गया था। युद्ध, नरबलि, और किलेबंदी की द्योतक पुरावस्तुएं गिम्बुटास द्वारा वर्णित पुराने युरोप काल में पुरातात्विक रिकॉर्ड्स में बहुतायत से मिलती हैं। और किसी समय के इस शांतिपूर्ण मैट्रिस्टिक समाज पर पितृसत्तात्मक कुरगन का वर्चस्व युरोपीय पुरातत्व की जटिलताओं की व्याख्या करने की अति-सरलीकृत धारणा है। मेस्केल का निष्कर्ष है कि यह विश्वास विक्टोरियाई अतीत का अवशेष है कि इतिहास में मातृसत्तात्मक और पितृसत्तात्मक जैसी दो स्पष्ट अलग-अलग

अवस्थाएं रही हैं। उनका मत है कि ये सरलीकृत दृष्टिकोण इक्कीसवीं सदी के नारीवादी मानव वैज्ञानिक अनुसंधान और जेंडर अध्ययन की व्याख्या के साथ न्याय नहीं करते।

निसंदेह, ऐसे खेतिहर समाज थे जो देवी पूजा करते थे और मातृसत्तात्मक समाज के बारे में मायथॉलॉजी को संरक्षित रखते थे। दरअसल, ऐसे खेतिहर समाज मौजूद थे जिनमें स्त्रियां महत्वपूर्ण नेतृत्व व राजनैतिक पदों पर थीं, जैसे मशहूर क्लियोपैट्रा। फिर भी, पुरातत्व और जनजातीय अध्ययनों से मिल प्रमाण दर्शाते हैं कि महिलाओं की राजनैतिक प्रधानता और अर्थ व्यवस्था पर वर्चस्व अस्तित्व में नहीं थे। क्लियोपैट्रा की राजनैतिक सत्ता के बावजूद, प्राचीन मिस्र में एक पुरुष आभिजात्य वर्ग ही स्पष्ट रूप से अर्थ व्यवस्था और राजनीति का नियंत्रण करता था।

जैसा कि हमने इस अध्याय में देखा है, अतीत में अधिकांश खेतिहर समाजों, देवी पूजक समाजों सहित, में महिलाओं की हैसियत काफी निम्न थी। पुरुषों और स्त्रियों दोनों ने पूरे इतिहास में प्रारंभिक मातृसत्ता को लेकर मायथॉलॉजी और विश्वासों का सहारा लिया है। उन्नीसवीं सदी के पुरुषों ने इन विश्वासों का इस्तेमाल उनके अनुसार ज़्यादा विकसित व उन्नत "पितृसत्तात्मक" संस्थाओं की हैसियत और सत्ता का औचित्य स्थापित करने हेतु किया। आजकल इको-नारीवादी तथा न्यू एज आंदोलन की कुछ महिलाएं इन मिथकों का इस्तेमाल एक युटोपियन समाज की अपनी दृष्टि को जारी रखने के लिए कर रही हैं। कई समकालीन मानव वैज्ञानिक, स्त्री व पुरुष दोनों, मानते हैं कि दुनिया के कई समाजों में महिलाओं की स्थिति का आकलन करने के लिहाज़ से पितृसत्ता और मातृसत्ता शब्द अत्यंत संकीर्ण हैं। उदाहरण के लिए, एक ताज़ा जनजातीय अध्ययन वीमेन एट दी सेंटर: लाइफ इन ए मॉडर्न मैट्रियार्की (Women at the Center: Life in a Modern Matriarchy 2002) में इंडोनेशिया में मिनांगकाबाऊ में 18 वर्षों के अध्ययन के आधार पर मानव वैज्ञानिक पेगी रीव्स सैण्डे कई पाश्चात्य लोगों के ढांचे और रूढ़ छवियों को चुनौती देती हैं, जो मानते हैं कि इस्लाम धर्म अपनी पितृसत्तात्मक परंपराओं के चलते लगातार महिलाओं को अधीन बनाता है। उन्होंने पाया

है कि इंडोनेशिया में सांस्कृतिक आस्थाएं हमेशा ही अपेक्षाकृत समतामूलक रही हैं और इन आस्थाओं ने इस समाज में महिलाओं को अधीन बनाने का प्रतिरोध किया है। मानव वैज्ञानिक दुनिया भर में जेंडर मुद्दों को लेकर अपने तरीकों को परिष्कृत करने के लिए काम कर रहे हैं और जेंडर परिवर्तन को प्रभावित करने वाले विभिन्न वैश्विक परिवर्तनों की खोजबीन कर रहे हैं। इसके अलावा, मानव वैज्ञानिकों का एक लक्ष्य यह है कि दुनिया भर में महिलाओं और पुरुषों दोनों के अधिकारों में सुधार आए और इजाफा हो (देखें अध्याय 18)। मगर ऐसा करने के लिए हमारे पास इस बात का सटीक आकलन होना चाहिए कि पुरातात्विक व जनजातीय रिकॉर्ड क्या बताते हैं। इस तरह के आकलन के बगैर, न तो हम मानवता के अपने ज्ञान को समृद्ध कर सकते हैं, और न ही मानव स्थिति को बेहतर बना सकते हैं।

विचार हेतु बिंदु

1. अतीत में वास्तविक मातृसत्तात्मक समाज की उपस्थिति का निष्कर्ष निकलने के लिए किस तरह डैटा की ज़रूरत होगी?

2. एक प्रारंभिक मातृसत्तात्मक समाज में विश्वास की ताकतें व कमज़ोरियां क्या है?

3. क्या कभी भी कोई सचमुच का मातृसत्तात्मक समाज हो सकता है?

4. इस परिप्रेक्ष्य बॉक्स ने आपको मानव वैज्ञानिक डैटा के विश्लेषण के बारे में क्या सिखाया?

खेतिहर राज्यों में सामाजिक स्तरीकरण

10.6 खेतिहर राज्यों के लाक्षणिक स्तरीकरण के प्रकारों की चर्चा कीजिए

जैसा कि पहले कहा गया था, खेतिहर सभ्यताएं अत्यंत स्तरीकृत थीं, और सामाजिक गतिशीलता आभिजात्य परिवारों या रिश्तेदारियों पृष्ठभूमि के लोगों तक सीमित थी। लिहाज़ा, मानव वैज्ञानिक ऐसे समाजों को कभी-कभी बंद समाज (closed societies) कहते हैं, इस मायने में कि सामाजिक हैसियत आम तौर पर अर्जित नहीं बल्कि आरोपित

होती थी। उदाहरण के लिए, पारंपरिक चीनी समाज में सम्राट के परिवार से बाहर जन्मे लोगों के पास ऊपर उठने के दो ही रास्ते थे। एक रास्ता था कि व्यक्ति जेंट्री - यानी भूस्वामि वर्ग जो चीनी परिवारों का दो प्रतिशत था - में जन्म ले। दूसरा रास्ता था कि व्यक्ति क्लासिकी कंफ्यूशियन ग्रंथ पढ़कर सख्त परीक्षाएं उत्तीर्ण करके मेंडेरिन - यानी चीनी अफसर या विद्वान - बन जाए। हालांकि सिद्धांतत: यह विकल्प सारे पुरुषों के लिए खुला था, किंतु वास्तव में यह उन्हीं परिवारों या खानदानों तक सीमित था जो अपने पुत्र की पढ़ाई का खर्च वहन कर सकते थे (DeVoe 2006)।

जाति व्यवस्था

भारत तथा हिंदू संस्कृति से सम्बद्ध नेपाल जैसे कुछ अन्य इलाकों में सामाजिक गैर-बराबरी की कहीं ज़्यादा अवरोधक किस्म विकसित हुई जिसे जाति व्यवस्था कहते हैं। जाति एक एंडोगौमस सामाजिक समूह होता है। व्यक्ति इस समूह में जन्म लेता है और आजीवन उसी में बना रहता है। अर्थात जाति व्यवस्था में व्यक्ति की हैसियत आरोपित होती है, और किसी अन्य जाति में प्रवेश करना असंभव होता है। भारतीय जाति व्यवस्था चार मुख्य श्रेणियों से विकसित हुई, जिन्हें इस क्रम में रखा गया - ब्राह्मण (पुरोहित), श्रत्रिय (योद्धा), वैश्य (व्यापारी) और शूद्र (श्रमिक)। तो, व्यक्ति जिस जाति में जन्म लेता, उसी से उसका व्यवसाय निर्धारित होता था। इसके अलावा, लोगों को अपनी ही जाति में विवाह करना होता था। हालांकि विभिन्न जातियों के सदस्यों के बीच मेलजोल आम तौर पर निरुत्साहित किया जाता था, किंतु जातियां विभिन्न आर्थिक लेन देन और दायित्वों का निर्धारण करने वाली जजमानी प्रथा से परस्पर संपर्क में रहती थीं। अध्याय 15 में हम चर्चा करेंगे कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया किस तरह से भारत व अन्यत्र पाई जाने वाली जाति व्यवस्था को प्रभावित कर रही है। अलबत्ता, यह तो सही है कि वैश्वीकरण की प्रक्रिया जाति व्यवस्था को प्रभावित कर रही है।

दासता सामाजिक गैर-बराबरी और आरोपित हैसियत का एक और प्रकार दासता का था। जब किसी समाज में उत्पादक टेक्नॉलॉजी में वृद्धि होती है, व्यापार का प्रसार होता है और जब राज्यों का संगठन ज़्यादा केंद्रीकृत होने लगता है, तब दासता भी बढ़ती है (Goody 1980; Van den Berghe 1981)। उदाहरण के लिए, भूमध्य सागर क्षेत्र के यूनानी,

रोमन, अरब और तुर्क साम्राज्यों में जहाज़ों, स्मारक निर्माण, सिंचाई संरचनाओं, बागानों और बड़ी-बड़ी सार्वजनिक परियोजनाओं में बड़ी संख्या में गुलामों का उपयोग किया जाता था।

दास प्रथा का रूप अलग-अलग समाजों में अलग-अलग होता है। यूनानियों और रोमन्स ने दास की हैसियत घटाकर उन्हें एक अवमानवीय "वस्तु" बना दिया था जिसे एक उपकरण या औज़ार माना जाता था, जो निर्जीव औज़ारों से सिर्फ इस मायने में अलग है कि वह बोलता है (Worsley 1984)। देशज अफ्रीकी साम्राज्य बड़े पैमाने पर दास प्रथा का इस्तेमाल करते थे, जिसमें कुलीन लोग सैकड़ों दासों के मालिक होते थे (Goody 1980)। ज़्यादातर दास बागानों में या घरों पर काम करते थे, हालांकि इनमें से कुछ कुलीन लोगों के सलाहकार और प्रशासक भी बन जाते थे। हालांकि अफ्रीकी दासता में इंसानों को बंदी बनाना शामिल था, किंतु अंततः दासों को रिश्तेदारी समूहों में शामिल किया जा सकता था।

एशिया और अफ्रीका की दास प्रथा की एक समग्र समीक्षा में मानव वैज्ञानिक जेम्स वॉटसन (James Watson 1980) ने दासता के खुले और बंद स्वरूप की बात की है। देशज अफ्रीकी किस्म की दासता इस मायने में खुली थी कि दासों को घरेलू रिश्तेदारी समूह में जोड़ा जा सकता था और वे सामाजिक रूप से ऊपर भी उठ सकते थे। इसके विपरीत, चीन, भारत, यूनान और रोम की दास प्रथा बंद थी। इसमें सामाजिक रूप से ऊपर उठने या रिश्तेदारी समूह में शामिल किए जाने का कोई अवसर न था। दो अलग-अलग किस्म की दासता का सम्बंध जनांकिक परिस्थितियों और राजनैतिक अर्थ व्यवस्था से था। अफ्रीका व थाइलैण्ड जैसे समाजों में, जहां भूमि अपेक्षाकृत प्रचुरता से उपलब्ध थी और आबादी कम थी, वहां खुले किस्म की दासता विकसित हुई (Goody 1971; Turton 1980)। इन समाजों में ताकत और सत्ता की कुंजी भूमि पर नहीं बल्कि लोगों पर नियंत्रण में थी। यूनान, रोम, चीन व भारत जैसी राजनैतिक अर्थ व्यवस्थाओं, जहां भूमिं कम थी और आबादी अधिक सघन थी, में बंद किस्म की दासता उभरी। इन समाजों में सत्ता और संपदा की कुंजी भूमि व श्रम पर नियंत्रण में थी।

औद्योगिक व औद्योगिक-उपरांत समाजों में सामाजिक संरचना

10.7 औद्योगिक व औद्योगिक-उपरांत समाजों में सामाजिक संरचना, रिश्तेदारियों, परिवार, विवाह, जेंडर व उम्र के पैटर्न पर विचार कीजिए।

औद्योगिकरण का असर रिश्तेदारियों, परिवार, जेंडर, वृद्धावस्था, और सामाजिक हैसियत पर उतना ही नाटकीय रहा है जितना कि जनांकिकी, टेक्नॉलॉजी और आर्थिक स्थिति पर।

रिश्तेदारियां (Kinship)

उद्योग-पूर्व समाजों की अपेक्षा औद्योगिक राज्यों में रिश्तेदारियां कम महत्वपूर्ण होती हैं। उद्योग-पूर्व समाजों में जो कार्य रिश्तेदारियों से जुड़े होते थे, उन्हें नई संरचनाएं और संगठन करने लगते हैं। उदाहरण के लिए, सामाजिक हैसियत के प्राथमिक आधार के रूप में रिश्तेदारियों का स्थान व्यावसायिक व आर्थिक कारक ले लेते हैं; संपदा व राजनैतिक ताकत हासिल करने के लिए अब यह ज़रूरी नहीं रह जाता कि व्यक्ति कुलीन या आभिजात्य परिवार का सदस्य हो। आम तौर पर, जब राज्यों का औद्योगिकरण हुआ, तो नए-नए उभरे मध्यम वर्गीय परिवारों ने ऊपर की ओर आर्थिक व सामाजिक गतिशीलता का अनुभव किया और आरोपित रिश्तेदारियों के सम्बंध या जन्म सिद्ध अधिकारों की बजाय आर्थिक प्रदर्शन, मेरिट (योग्यता) और व्यक्तिगत उपलब्धियां सामाजिक हैसियत के आधार बन गए।

निसंदेह, अब भी सामाजिक गतिशीलता पर रिश्तेदारी नेटवर्क और पारिवारिक पृष्ठभूमि का असर बना रहा। संपत्ति, राजनैतिक ताकत और उच्च सामाजिक हैसियत वाले परिवार यह सुनिश्चित कर सकते हैं कि उनके बच्चों को बढ़िया से बढ़िया शिक्षा मिले। इसके अलावा, औद्योगिक व औद्योगिक-उपरांत समाजों में छोटे पैमाने के कारोबार और अन्य उद्यमों तथा राजनैतिक तंत्रों में भाईभतीजावाद, यानी अपने रिश्तेदारों को फायदा पहुंचाना, आज भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उदाहरण के लिए, यूएस समाज में रुज़वेल्ट, केनेडी और बुश परिवार के सदस्यों की राजनैतिक भूमिका और सत्ता की हैसियत बरकरार है। ये परिवार अपनी संतानों को ऐसे पेशेवर रोल मॉडल्स और मूल्य प्रदान करते हैं जो सफलता पर ज़ोर देते हैं। ये परिवार ऐसे आर्थिक व राजनैतिक सम्बंध भी बनाए रखते हैं जिनसे उनके बच्चों को मिलने वाले अवसरों में वृद्धि होती

है। लिहाज़ा, इनके बच्चे निम्न सामाजिक-आर्थिक श्रेणी के बच्चों की तुलना में शुरू से ही आगे रहते हैं। अलबत्ता, रिश्तेदारियां सामाजिक हैसियत और श्रेणी का बुनियादी निर्धारक नहीं रह जातीं, जैसे कि वे उद्योग-पूर्व समाजों में थीं और आज भी हैं।

परिवार

हमने परिवार के विभिन्न कार्यों की चर्चा की है: बच्चों का समाजीकरण, यौन व्यवहार का नियमन, और भावनात्मक व आर्थिक सुरक्षा प्रदान करना। औद्योगिक समाजों में, इनमें से कुछ कार्यों में महत्वपूर्ण बदलाव आए हैं, जैसा कि विस्तृत परिवार के घटते महत्व और छोटे एकल परिवारों के उदय में देखा जा सकता है। कुछ बुनियादी कार्य, जैसे प्रजनन व बच्चों की प्राथमिक देखभाल तथा समाजीकरण आज भी एकल परिवार द्वारा किए जाते हैं।

परिवार की आर्थिक भूमिका में नाटकीय बदलाव आए हैं। औद्योगिक व औद्योगिक-उपरांत समाजों में परिवार उत्पादन से जुड़ी आर्थिक इकाई नहीं रह गई है। औद्योगिक समाजों में दिहाड़ी मज़दूरी विस्तृत परिवारों के विघटन और एकल परिवारों के उदय का प्रमुख कारण रहा है (Wolf 1966; Goody 1976)। कृषक समाजों में विस्तृत परिवार एक सहकारी आर्थिक इकाई के रूप में ज़मीन पर काम करता था। जब नियोक्ताओं ने खदानों, कारखानों और अन्य उद्योगों के लिए व्यक्तिगत मज़दूरों को काम देना शुरू किया, तब एक कार्पोरेट इकाई के रूप में विस्तृत परिवार का कोई आर्थिक उत्पादन कार्य शेष न रहा।

विस्तृत परिवार के घटते महत्व में योगदान देने वाला एक और कारक यह रहा है कि औद्योगिकरण के फलस्वरूप भौगोलिक गतिशीलता में बहुत अधिक वृद्धि हुई है। चूंकि शुरुआत में कारखानों और खदानों में अधिकांश मज़दूर ग्रामीण इलाकों से आए थे, मज़दूरों को अपने परिवार को छोड़कर शहरों में एकल परिवार बसाना पड़ा था। विस्तृत परिवार पर आधारित भूमि स्वामित्व (पट्टा) अब वैसी चालक शक्ति न रहा जैसे कि वह उद्योग-पूर्व समाज में था। इसके अलावा, जब उत्पादन व सेवा उद्योग का प्रसार हुआ तो कई बार वे नई जगहों पर गए या नए कार्यालय खोले, जिसके चलते कामगारों को भी नए स्थानों पर जाना पड़ा। औद्योगिक समाजों की आर्थिक ज़रूरतों का असर

यह हुआ कि विस्तृत परिवार बिखरने लगे जो उद्योग-पूर्व समाजों में निर्णायक महत्व के थे।

इतिहासकार, समाज वैज्ञानिक और मानव वैज्ञानिक दशकों से औद्योगिक इंगलैण्ड, युरोप और उत्तरी अमेरिका में विस्तृत परिवार के विघटन का अध्ययन करते रहे हैं (जैसे, Goode 1963, 1976, 1982, L. Stone 2010)। हालांकि युरोप में मध्ययुग के दौर में विस्तृत पितृवंशीय परिवार धीरे-धीरे बिखरते गए, किंतु पूरे युरोप में छोटे रिश्तेदारी समूह वाले परिवारों और उभयपक्षीय वंशानुक्रम (परिवार के दोनों पक्षों से वंशानुक्रम की पहचान करने वाले) का एक पैटर्न उभरा (Goody 1983, 2000)। हालांकि इसी तरह की प्रक्रिया रूस व जापान में हुई किंतु इन देशों में यह थोड़े विलंब से हुई। उदाहरण के लिए, रूस में एकल परिवार ने विस्तृत परिवार का स्थान लेना खेतिहर गुलामों की मुक्ति के बाद शुरू किया था (Kerblay 1983)। अलबत्ता, मानव वैज्ञानिकों ने पाया है कि रूसी समाज में आज भी एकल परिवार आदर्श मानक नहीं है। सर्वेक्षण बताते हैं कि रूसी लोग इसे सही नहीं मानते कि बूढ़े माता-पिता अकेले रहें और आज भी कई लोग दादा को परिवार का मुखिया मानते हैं। ये आदर्श मानक रूस में विस्तृत कृषक परिवार की पुरानी परंपरा को प्रतिबिंबित करते हैं।

जापानी समाज में पारंपरिक परिवार *ie* (उच्चारण अंग्रेज़ी के yeah जैसा होता है) पर आधारित थे। *ie* एक पितृवंशीय विस्तृत परिवार होता है जिसमें खून के सम्बंधों, विवाह और दत्तक पर आधारित रिश्तेदारियों के नेटवर्क होते थे (Befu 1971; Shimizu 1987; McCreery and McCreery 2006; Hendry 2013)। *ie* एक देशज शब्द है जिसका अनुवाद "घर" होता है मगर यह एक पारिवारिक निरंतरता का द्योतक होता है। *ie* में सारे जीवित और मृत रिश्तेदार भी शामिल होते थे और वे भी शामिल होते थे जिनका अभी जन्म नहीं हुआ है और "घर" में सम्बंधों को वफादारी और परोपकार जैसे कंफ्यूशियन सिद्धांतो के आधार पर पहचाना जाता है (Hendry 2013)। *ie* अपनी ज़मीन और ज़ायदाद का प्रबंधन एक कार्पोरेट इकाई के रूप में करता था और अन्य शाखा *ie* से सोपानक्रम में जुड़कर *dozoku* बनाता था। *dozoku* वही कार्य करता था जो अन्य खेतिहर समाजों के कृषक परिवार करते हैं। जापान में औद्योगिकरण और अब औद्योगिकरण-उपरांत के दौर में *dozoku* का पतन होने लगा और शहरी एकल परिवार, जिन्हें *kazoku*

कहते हैं, विकसित होने लगे (Befu 1971; Kerbo and McKinstry 1998; McCreery and McCreery 2006)। अलबत्ता, जॉय हेंडरी (Joy Hendry 2013) ने बताया है कि जापान में आज भी पारंपरिक *ie* का सम्मान किया जाता है। हेंडरी ने संकेत दिया है कि *ie* की परंपरा को जीवित रखने में कुछ तनाव है, खास तौर से युवा व बुज़ुर्ग पीढ़ी की अपेक्षाओं में अंतरों के कारण (Hendry 2013)। बुज़ुर्ग पीढ़ी का फोकस पूर्वजों के प्रति निष्ठा तथा पारिवारिक सामाजिक पहचान से जुड़े रहने की धारणा पर है जबकि युवा पीढ़ी व्यक्ति पर फोकस करती है और व्यक्तिगत निर्णय व अधिकारों पर ज़ोर देती है। इस तरह के तनावों के बावजूद, व्यक्ति की सफलता प्राय: उस समूह या परिवार की सफलता पर निर्भर करती है जिसका वह सदस्य है। निश्चित रूप से, *ie* का सिद्धांत, जिसका ज़ोर किसी व्यक्ति द्वारा अपने परिवार का प्रतिनिधित्व करने के दायित्व पर है, पश्चिम में व्यक्ति के अपनी मनमर्ज़ी से काम करने के अधिकार के आग्रह के सर्वथा विपरीत है। *ie* और *dozoku* से *kazoku* की ओर परिवर्तन यकायक और हाल ही में हुआ है। जापान के कई बुज़ुर्ग लोग इस परिवर्तन से तालमेल नहीं बना पाए हैं।

औद्योगिक समाजों में विस्तृत परिवारों के विघटन के सामान्य रुझान के बावजूद, इन समाजों में विशिष्ट समूहों में आज भी विस्तृत परिवार हैं। उदाहरण के लिए, विस्तृत, कृषकनुमा परिवार आज भी उज़बेकिस्तान, अज़बेजान और जॉर्जिया जैसे इलाकों में मौजूद हैं जो पूर्व में सोवियत संघ के हिस्से थे (Kerblay 1983)। इसी तरह की प्रवृत्ति ब्रिटेन, युरोप और जापान के ग्रामीण समाजों में भी देखी जा सकती है। संयुक्त राज्य और ग्रेट ब्रिटेन जैसे देशों के शहरी इलाकों में भी कुछ जनजातीय समूह विस्तृत पारिवारिक बंधन बनाए रखते हैं। संयुक्त राज्य में कुछ अफ्रीकी-अमरीकी, हिस्पेनिक अमरीकी, अरबी-अमरीकी और एशियाई-अमरीकी विस्तृत पारिवारिक रिश्तों की निष्ठा और सहारे का लाभ उठाते हैं। इससे व्यापक समाज में उनका आर्थिक व सामाजिक संगठन समृद्ध होता है (Stack 1975; Macionis 2014b; S. L. Brown 2012; Bigler 2012; Benson 2012)।

विवाह

औद्योगिक समाज में विवाह में एक सबसे बड़ा बदलाव यह आया है कि यह व्यक्तिवादी हो गया है। अर्थात, वैवाहिक बंधन की स्थापना में पारिवारिक व्यवस्थाओं की बजाय व्यक्तिगत कारक ज़्यादा महत्वपूर्ण हो गए हैं। यह व्यक्तिवादी विवाह अक्सर रोमांटिक प्रेम पर आधारित होता है, जो भावनात्मक जुड़ाव और शारीरिक और सशक्त यौन आकर्षण का एक सम्मिश्रण होता है। कुछ मानव वैज्ञानिकों ने परिकल्पना प्रस्तुत की है कि कामुक आकर्षण और रोमांटिक प्रेम उद्योग-पूर्व समाजों में भी मौजूद था और यह सार्वभौमिक है (Fisher 1992; Jankowiak and Fischer 1992; Jankowiak 1995, 2008)। राज्य-पूर्व तथा खेतिहर राज्य दोनों समाजों में युगलों के प्रेम में पड़ने के कई जनजातीय विवरण मिलते हैं। चीन, अरेबिया, भारत, यूनान और रोम का क्लासिकी साहित्य और बाइबल जैसे धार्मिक ग्रंथ रोमांटिक प्रेम की कहानियों से भरे पड़े हैं। और यही स्थिति उत्तरी अमेरिका के Ojibway Indians तथा San शिकारी संग्रहकर्ता समाजों की भी है, जिनकी चर्चा पहले की जा चुकी है। अलबत्ता, इन मानव वैज्ञानिकों ने पाया कि रोमांटिक प्रेम कभी-कभार ही विवाह में परिणत होता है किंतु यह प्राय: विवाह-पूर्व सम्बंधों या विवाहेतर सम्बंधों के रूप में रहता है या अरेंज्ड विवाह के विरोध के रूप में रहता है। शेक्सपीयर के नाटक रोमियो एंड जूलियट में पुनर्जागरण के दौरान पश्चिमी युरोप में रोमांटिक प्रेम और विवाह के पारिवारिक व व्यावहारिक कारकों के बीच के टकराव को रेखांकित किया गया है। मानव वैज्ञानिक चार्ल्स लिंडहोम (Charles Lindholm) ने इस विषय पर बहु-संस्कृति अनुसंधान करके सुझाया है कि हो सकता है कि रोमांटिक प्रेम कुछ ज्ञात संस्कृतियों में मौजूद रहा होगा, किंतु कई अन्य समाजों में इसका अस्तित्व नहीं था, और रोमांटिक प्रेम व बच्चे पैदा करने के बीच सम्बंध बहुत कमज़ोर है। लिंडहोम का मत है कि जो समाज विवाह का निर्धारण आर्थिक व राजनैतिक लाभ के लिए करते हैं, उनमें जन्म दर उन समाजों से अधिक होती है जो ऐसा नहीं करते (2001)। लिंडहोम प्रणय के आदर्शों और शायराना अभिव्यक्ति की जड़ें मध्य युगीन इस्लामिक विश्व में देखते हैं, जहां से यह अंतत: युरोपीय पुनर्जागरण की संस्कृति में रिसा (2001)।

विलियम जैन्कोविक (William Jankowiak) ने रोमांटिक प्रेम का कहीं ज़्यादा व्यापक बहु-संस्कृति सर्वेक्षण किया, जिसमें उन्होंने कई इलाकों की लोककथाओं और जनजातीय

अनुसंधान कर्ताओं से बातचीत का सहारा लिया था (2008)। *इंटीमेसीज़: बिट्वीन लव एंड सेक्स* नामक पुस्तक में जैन्कोविक और पेलाडिनो (Jankowiak and Paladino 2008) दो तरह के प्रेम की चर्चा करते हैं - सखा प्रेम (जिसे कभी-कभी सुकून प्रेम या लगाव भी कहते हैं) और भावपूर्ण या रोमांटिक प्रेम। इन दो तरह के प्रेमों के अपने-अपने तर्क और हारमोन-विज्ञान होते हैं। सखा या सुकून प्रेम उन लोगों के प्रति एक गहरा भावनात्मक स्नेह का एहसास होता है जिनके साथ हम नज़दीक से जुड़े हैं और जिनका जीवन हमारे जीवन के साथ गूंथा हुआ है। "भावुक प्रेम में, एक कामुक संदर्भ में, दूसरे का आदर्शीकरण इस मान्यता के साथ किया जाता है कि यह एहसास भविष्य में कुछ समय तक जारी रहेगा।" (Jankowiak and Paladino 2008:5) रोमांटिक प्रेम ज़्यादा शारीरिक होता है और सखा प्रेम ज़्यादा अध्यात्म आधारित होता है। दोनों किस्म के प्रेम सारी संस्कृतियों में पाए जाते हैं।

बहरहाल, सारे मानव वैज्ञानिक इस बात पर सहमत हैं कि रोमांटिक प्रेम युरोप में ज़्यादा प्रचलित हुआ था, जिसकी वजह से पूरे पश्चिमी युरोप में इस तरह के विवाह का प्रसार हुआ था। यहूदी नोमोस (*nomos*) की बिब्लिकल परंपरा में दिखने वाले और आगे चलकर एगेप (*agape*) की ईसाई धारणा में व्यक्त हुए आदर्श तथा उसके द्वारा यौनिकता के अवमूल्यन का कुछ असर तो विवाह में रोमांटिक प्रेम की अवधारणा पर हुआ (Lindholm 1995; de Munck 1998)। अंततः रोमन कैथोलिक चर्च ने 1439 ईस्वी में विवाह को व्यक्ति की पसंद के आधार पर परिभाषित कर दिया और फतवा जारी किया कि यह सातवां संस्कार है और अध्यात्म आधारित है (L. Stone 2010)।

निसंदेह, उच्च वर्ग के कई लोग तयशुदा विवाहों पर अड़े रहे (जैसा कि ब्रिटिश लेखक जेन ऑस्टिन के उपन्यासों में वर्णित है)। युरोप के शाही परिवार अपने बच्चों के विवाह राजनैतिक गठबंधनों तथा संपत्ति के अधिकारों के आर्थिक सुदृढ़ीकरण के लिए तय किया करते थे। युरोप के उच्च वर्गों में कज़िन विवाह भी जारी रहा। उन्नीसवीं सदी के कई विक्टोरियन्स, चार्ल्स डारविन समेत, तथा उच्च वर्ग के परिवारों के सदस्यों, मशहूर रईस बैंकिग परिवार रॉथ्सचाइल्ड परिवार समेत, नियमित रूप से कज़िन्स के विवाह करवाते थे, जैसे कि ओल्ड टेस्टामेंट तथा शुरुआती ईसाई युग व रोमन काल के खेतिहर समाज

किया करते थे। जैसा कि इस पाठ्य पुस्तक में पहले कहा गया था, ज़रूरी नहीं कि इस तरह के इनब्रीडिंग (अंत:जनन) के हानिकारक जेनेटिक परिणाम हों (Conniff 2003)।

मानव वैज्ञानिक जैक गुडी (Jack Goody) ने युरोप में विवाह और परिवार के अध्ययन में काफी योगदान दिया है जिसस पाश्चात्य समाज की बेहतर समझ बनाने में मदद मिली है (1983, 2000)। गुडी बताते हैं कि पाश्चात्य विवाह का पैटर्न रोमन साम्राज्य के अंत में 6ठी शताब्दी में भूमध्यसागरीय पैटर्न से अलग दिशा में जाने लगा था। विवाह का भूमध्यसागरीय व रोमन पैटर्न अत्यंत पितृवंशीय था और आम तौर पर इसमें कज़िन विवाह होते थे। महिलाओं को संपत्ति के स्वामित्व का या सार्वजनिक दायरे में भागीदारी का अधिकार नहीं था और जेंडर पृथक्करण बहुत सशक्त था। दूसरी ओर, पश्चिमी युरोप का पैटर्न ज़्यादा उभयवंशीय हो चला था; कज़िन विवाह पर प्रतिबंध लग गया था, एक्सोगैमी के बढ़ावा दिया जाता था और महिलाओं को संपत्ति पर ज़्यादा अधिकार थे। गुडी का मत है कि यह परिवर्तन रोमन कैथोलिक चर्च की नीतियों की वजह से आया था जो कज़िन विवाह, भावज विवाह, बच्चे गोद लेने और तलाक के विरुद्ध थीं। गुडी का मत है कि चर्च के सांसारिक हितों की वजह से ये नीतियां अस्तित्व में आई थीं। कज़िन विवाह, दत्तक लेना, भावज विवाह और तलाक से सुनिश्चित होता है कि संपत्ति परिवारों और घरों में ही रहेगी। कज़िन विवाह और पितृवंशीय उत्तराधिकार पर प्रतिबंध का मतलब होगा कि विधवा तथा अन्य सम्बंधी अपनी संपत्ति चर्च को दान में दे देंगे। गुडी का मत है कि चर्च की नीतियों में इन परिवर्तनों ने पश्चिमी युरोप की सामाजिक संरचना को नाटकीय ढंग से बदल डाला और पाश्चात्य दुनिया में आर्थिक व राजनैतिक घटनाक्रम को प्रभावित किया (2000)।

जैसा कि हम आगे के एक अध्याय में देखेंगे, दुनिया भर के गैर-पाश्चात्य समाजों में कज़िन विवाह आज भी विवाह का एक प्रमुख प्रकार है। अलबत्ता, युरोप में पुनर्जागरण और औद्योगिक क्रांति के बाद रोमांटिक प्रेम पर आधारित स्वतंत्र वैवाहिक पसंद की सांस्कृतिक परंपरा, खास तौर से सामाजिक रूप से ऊपर उठने की कोशिश में लगे मध्यम तथा निम्न-मध्यम वर्ग में, पूरे युरोप में और पाश्चात्य संस्कृति से प्रभावित अन्य इलाकों में फैल गई। जैसा कि कई समाज वैज्ञानिकों, मानव वैज्ञानिकों और युरोप के इतिहासकारों ने सुझाया है, औद्योगिकरण और आधुनिकीकरण ने कृषि-आधारित

संपत्ति व्यवस्थाओं को तथा विस्तृत परिवार व रिश्तेदारी के सम्बंधों को कमज़ोर किया था; परिवार छोटे हो गए और भौगोलिक गतिशीलता बढ़ी। इसने युरोप के समाजों में और अधिक व्यक्तिवाद, निजी स्वायत्तता, पसंद, आत्म-संवर्धन के नए रूपों और रोमांटिक प्रेम को बढ़ावा दिया (L. Stone 2010)।

अलबत्ता, वर्षों पहले युरोप के औद्योगिकरण से पूर्व कई परिवार अपने बच्चों के विवाह अपने ही वर्ग, धार्मिक और जनजातीय समूह में करने पर अड़े रहे और बच्चों के विवाह प्राय: पालकों के हस्तक्षेप से तय होते थे। हो सकता है कि रोमांटिक प्रेम उद्योग-पूर्व समाजों में अस्तित्व में रहा हो (और कई मामलों में यह विवाहेतर सम्बंधों का आधार भी बनता था) किंतु औद्योगिक क्रांति से पहले यह आम तौर पर विवाह का प्रमुख आधार नहीं बना था। मध्यम वर्गीय परिवारों के नए-नए समूहों उभरने के साथ, जैसे-जैसे सांस्कृतिक मूल्य ज़्यादा व्यक्तिवादी होते गए, कई लोग अपने वैवाहिक साथी चुनने लगे। जब विस्तृत परिवार का महत्व घटा, तो वैवाहिक साथी चुनने जैसे महत्वपूर्ण निर्णय परिवारों की बजाय व्यक्ति करने लगे।

हालांकि अधिकांश औद्योगिक समाजों में व्यक्ति अपने वैवाहिक साथी चुनते हैं, किंतु इन समाजों में भी पालक कोशिश करते हैं कि वैवाहिक पसंद चंद श्रेणियों में से ही हो। उदाहरण के लिए, उच्च व उच्च-मध्यम वर्ग के पालक अक्सर अपने बच्चों के लिए कुछ खास कॉलेज या विश्वविद्यालय चुनते हैं ताकि वे वहां उपयुक्त वैवाहिक साथी से मिल सकें। कई पालक अपने बच्चों के लिए सामाजिक गतिविधियां प्रायोजित करते हैं ताकि वे अपने सामाजिक-आर्थिक, जनजातीय, धार्मिक समूहों के संभावित वैवाहिक साथियों से मिल सकें। दक्षिणी संयुक्त राज्य अमेरिका और क्यूबेक (कनाडा) जैसे कुछ इलाकों में अभी हाल तक कज़िन विवाह होते थे ताकि संपत्ति के अधिकारों को सुदृढ़ बनाया जा सके और संपत्ति परिवार के अंदर ही हस्तांतरित होती रहे। यूएस के उन्नीस राज्यों में प्रथम-कज़िन विवाह की अनुमति है (Conniff 2003; Molloy 1990)।

औद्योगिक समाजों में भी, कुछ हद तक, वैवाहिक साथी के चुनाव में व्यक्ति की पसंद को पालकों का मार्गदर्शन या अन्य सांस्कृतिक मानक कमज़ोर कर देते हैं। अलबत्ता, यूएस जैसे औद्योगिकृत समाजों में कई लोगों को लगता है कि पारिवारिक और

सामुदायिक सम्बंधों के विघटन की वजह से व्यक्तियों को वैवाहिक साथी खोजने में कठिनाई होती है। कई व्यक्ति ऐसे परिवारों से हैं जहां उनके पालकों का कम से कम एक बार तलाक हो चुका है, और इसकी वजह से उनके लिए अपने परिवार के ज़रिए किसी से मिलने की संभावना कम हो जाती है। इसके चलते, यूएस जैसे औद्योगिक-उपरांत समाजों में डेटिंग और मैचमेकिंग सेवाओं तथा कंप्यूटर आधारित डेटिंग सेवाओं में वृद्धि हुई है। ऐसी हज़ारों डेटिंग व मैचमेकिंग सेवाएं, और साथ में अकेले व्यक्तियों को वैवाहिक साथ ढूंढने में मदद करने वाली इंटरनेट वेबसाइट्स पिछले कुछ दशकों में ही विकसित हुई हैं।

औद्योगिकरण और व्यापारीकरण तथा वैवाहिक साथी के चुनाव में व्यक्तिगत निर्णय के बीच सम्बंध का एक अपवाद गौरतलब है। अपवाद जापानी विवाह प्रथाओं का है। परिष्कृत प्रेम (कोर्टली प्रेम), जो लगभग रोमांटिक प्रेम जैसा होता है, की चर्चा दसवीं सदी के जापानी दरबार में लेडी मुरासाकी (Lady Murasaki) के *टेल ऑफ गेंजी* (*Tale of Genji*) जैसे क्लासिकी साहित्य में की गई थी। जापानी समाज में सबसे सामान्य पारंपरिक किस्म के विवाह एक बिचौलिए - नाकोडा - के ज़रिए किए जाते थे। वह महिला व पुरुष के बीच मुलाकात करवाता था ताकि वे एक-दूसरे को जान सकें (Hendry 2013)। नाकोडा दो विस्तृत परिवारों के बीच गठबंधन स्थापित करवाता था। इस तरीके को विवाह की समुराई किस्म कहते हैं क्योंकि तोकुगावा काल में योद्धा-विद्वान ऐसा करते थे।

जापानी समाज में औद्योगिकरण के साथ, वैवाहिक साथी के चुनाव पर रोमांटिक प्रेम का असर पड़ने लगा और आजकल कई जापानी लोग अपना साथी खुद चुनते हैं। किंतु मानव वैज्ञानिक जॉय हेंडरी (Joy Hendry 2013) ने पाया है कि आज भी "प्रेम विवाह" संदिग्ध माने जाते हैं और वैवाहिक बंधन के गंभीर व्यावहारिक सरोकारों तथा लोगों के मन में अपने पालकों के प्रति पारंपरिक दायित्व बोध के विरुद्ध जाते हैं। कई मामलों में, आज भी इस अत्यंत आधुनिक समाज में विवाह तय करवाने के लिए नाकोडा का उपयोग किया जाता है। वर्तमान में, युवा बनाम बुज़ुर्ग पीढ़ी के बीच इस बात को लेकर सांस्कृतिक संघर्ष जारी है कि जापानी समाज में किस तरह के विवाह और पारिवारिक सम्बंध बनाना चाहिए (McCreery and McCreery 2006)।

जापान में लगभग एक-तिहाई विवाह अरेंज्ड होते हैं। विवाह योग्य उम्र के पुरुष व महिला को नाकोडा द्वारा तय की गई एक औपचारिक मुलाकात - ओमिआई - में साथ लाया जाता है। रोमांटिक प्रेम पर आधारित प्रेम विवाह (जिन्हें रेनाई केक्कोम कहते हैं) हो सकते हैं किंतु अधिकांश मामलों में बच्चों के वैवाहिक साथी के मामले में पालकों को वीटो का अधिकार होता है (Kerbo and McKinstry 1998)। जापान में आज भी विवाह व्यक्ति की पसंद या निर्णय की बजाय पारिवारिक मसला है। फिर भी युवा पीढ़ी के कुछ लोग रोमांटिक प्रेम और वैवाहिक साथी के चयन में व्यक्तिगत पसंद का विकल्प चुन रहे हैं। विवाह में इस नए रुझान का एक चिंह यह है कि ये युवा लोग, खास तौर से मध्यम व उच्च वर्गों में, सामान्य जापानी विवाहोत्सव के स्थान पर "ईसाई शैली" के विवाह करते हैं, और अपने विवाहोत्सव के लिए कभी-कभी हवाई जाते हैं।

तलाक कुछेक औद्योगिक समाजों को छोड़ दें, तो शेष सभी ने तलाक को कानूनी बना दिया है, और तलाक पाना कहीं अधिक आसान हो गया है। आम तौर पर, औद्योगिक समाजों में तलाक के साथ ज़्यादा सामाजिक लांछन नहीं जुड़ा है (Quale 1988)। उद्योग-पूर्व समाजों की अपेक्षा औद्योगिक समाजों में तलाक की दर ज़्यादा होती है। हालांकि इतिहासकारों और मानव वैज्ञानिकों को लगता है कि मध्ययुगीन युरोप में भी विवाह काफी अस्थिर होते थे, किंतु अधिकांश विवाह उच्च मृत्यु दर के कारण समाप्त होते थे (L. Stone 2010)। चौथी शताब्दी से युरोप के रोमन कैथोलिक चर्च ने तलाक पर प्रतिबंध लगा दिया था। जैसा कि पहले कहा जा चुका है, जैक गुडी जैसे मानव वैज्ञानिक तलाक व विवाह में इन परिवर्तनों का श्रेय चर्च द्वारा उत्तराधिकारियों की संपत्ति में बंटवारे के विरोध को मानते हैं, जिसे हो सकता है कि चर्च द्वारा हथिया लिया जाता था (1983, 2000)।

औद्योगिक समाजों में तलाक की ऊंची दर में योगदान देने वाले कई कारकों में से एक वह असंतोष है जो कुछ लोग वैवाहिक सम्बंधों में महसूस करते हैं। जो लोग रोमांटिक प्रेम के आदर्शों और अपेक्षाओं के साथ वैवाहिक सम्बंध में प्रवेश करते हैं, हो सकता है कि उन्हें उन आदर्शों और वैवाहिक जीवन की हकीकतों के बीच टकराव का अनुभव करना पड़े। औद्योगिक समाज में जो महिलाएं आर्थिक रूप से ज़्यादा आत्म निर्भर हैं उनके खराब विवाह में बंधे रहने की संभावना कम होती है। उद्योग-पूर्व समाजों में, जहां

विवाह वास्तव में कार्पोरेट रिश्तेदारी समूहों के बीच गठबंधन होते थे, वहां आम तौर पर व्यक्तियों को विवाह को समाप्त करने की आज़ादी नहीं होती थी। जब औद्योगिकरण के उभार के साथ व्यक्तिवादी निर्णय आया तो एक असंतोषप्रद सम्बंध के साझेदार तलाक पर विचार करने को ज़्यादा तत्पर हो गए।

अधिकांश पाश्चात्य औद्योगिक समाजों में तलाक दर पिछली एक शताब्दि में तेज़ी से बढ़ी है। उदाहरण के लिए, पिछली एक सदी में यूएस में तलाक दर दस गुना अधिक हो गई है (Macionis 2014)। यही स्थिति रूस में दिखती है, जहां तलाक को लेकर पारंपरिक पाबंदियों का स्थान ज़्यादा सहिष्णु रवैयों ने ले लिया है (Kerblay 1983)।

अलबत्ता, जापान में औद्योगिकरण के बाद तलाक दर में गिरावट आई (Befu 1971)। अधिकांश खेतिहर समाजों के विपरीत, माइजी युग से पहले जापान की तलाक दर काफी अधिक थी। ऐसा पति और पत्नी के बीच झगड़ों के कारण नहीं था; तलाक तब होते थे जब परिवार के बुज़ुर्ग किसी वधू को इसलिए अस्वीकार कर देते थे कि वह पारिवारिक रीति रिवाज़ों के साथ आसानी से तालमेल नहीं बना पा रही है या वह पर्याप्त दहेज़ लेकर नहीं आई है, या कोई और कारण। विवाहोपरांत निवास का पारंपरिक नियम पितृ-स्थानिक था, जिसमें पत्नी पति के घर जाकर रहती थी (Goode 1982)। औद्योगिकरण और इन पारंपरिक पैटर्न के विघटन के साथ, तलाक की दर कम होने लगी। यद्यपि ज़्यादा हाल में जब औद्योगिकरण ने वही तनाव पैदा करने शुरू कर दिए जो अन्य औद्योगिक समाजों में पैदा हुए थे तो जापान में तलाक दर बढ़ने लगी है। बहरहाल, आज भी जापान की तलाक दर यूएस का पांचवां अंश ही है (Kerbo and McKinstry 1998; Hendry 2013)। निसंदेह, कुछ हद तक, जापानी समाज में स्त्री जेंडर भूमिकाओं और अपेक्षाओं के जो पारंपरिक मानक हैं, उनका असर कम तलाक दर पर पड़ा है। पारंपरिक रूप से जापानी महिला से यह अपेक्षा नहीं की जाती कि वह परिवार के मुखिया के रूप में पति की प्रमुख भूमिका को चुनौती देगी। उससे अपेक्षा होती है कि वह अपने पति और बच्चों के प्रति समर्पित रहेगी। घर के बाहर काम जब ज़रूरी हो, सिर्फ परिवार की आमदनी बढ़ाने के लिए करना चाहिए और बच्चे पैदा करने के बाद करना चाहिए। जापानी महिला से पूर्णकालिक गृहिणी बनने की अपेक्षा की जाती है (Kerbo and McKinstry 1998)। परिणामस्वरूप, बहुत ही कम जापानी मंहिलाओं में इतनी

वित्तीय सामर्थ्य है कि वे विवाह के बाहर खुद का निर्वाह कर सकें। वर्तमान में, जापान के कई युवा लोग जेंडर और व्यक्तिगत पसंद के मुद्दों पर विवाद कर रहे हैं (McCreery 2007; McCreery and McCreery 2006)।

जेंडर

जेंडर सम्बंधों पर औद्योगिकरण का व्यापक असर हुआ, खास तौर से इंगलैण्ड, युरोप और उत्तरी अमेरिका में। खेतिहर अर्थ व्यवस्था के औद्योगिक दिहाड़ी अर्थ व्यवस्था में संक्रमण ने कई महिलाओं को घरेलू दायरे से कार्यस्थलों में खींचा। आम तौर पर, महिलाएं आर्थिक रूप से ज़्यादा आत्म-निर्भर तथा सहारे के लिए पुरुषों पर कम निर्भर हुई हैं।

जेंडर और श्रम विभाजन हालांकि पिछले कुछ दशकों में पाश्चात्य औद्योगिक समाजों में महिलाएं बड़ी संख्या में श्रमिक दल में शरीक हुई हैं किंतु अधिकांश महिलाएं अर्थ व्यवस्था के सेवा क्षेत्र अंदर बहुत ही थोड़े से व्यवसायों में काम करती हैं, खास तौर से कम वेतन वाले लिपिकीय पदों पर। इसके अलावा, औद्योगिक समाजों में महिलाएं अधिकांश घरेलू कार्य भी करती हैं, जैसे घर के कामकाज और बच्चों की देखभाल, जिन्हें आज भी महिलाओं की प्राथमिक ज़िम्मेदारी माना जाता है। पुरुष के व्यवसायों और पति की आमदनी को पारिवारिक आमदनी का प्रमुख स्रोत माना जाता है। परिणामस्वरूप, इन समाजों में महिलाओं को अपने घर के काम और घर के बाहर रोज़गार के दोहरे बोझ को संभालना होता है (Bernard 1981, 1987; Bannister 1991)। यही पैटर्न जापानी समाज में भी दिखता है (McCreery and McCreery 2006)।

इंस्टीट्यूट फॉर वीमेन्स पॉलिसी रिसर्च (IWPR) के समाज वैज्ञानिकों ने यूएस समाज में महिलाओं और पुरुषों के अंतर का अध्ययन जेंडर मज़दूरी में अंतरों के आधार पर किया है। 2014 में IWPR द्वारा जारी एक रिपोर्ट में इन समाज वैज्ञानिकों ने पाया कि महिला पूर्णकालिक कर्मचारी की औसत साप्ताहिक आमदनी $706 थी जबकि पुरुषों के लिए यह आंकड़ा $860 प्रति सप्ताह था। इससे पता चलता है कि जेंडर मज़दूरी अनुपात 82.1 प्रतिशत था। इसके अलावा, यूएस महिलाएं यदि प्रमुखत: महिला व्यवसाय में काम करे तो उस पर प्रमुखत: पुरुष व्यवसाय में काम करने की अपेक्षा जुर्माना भी

लगता है। यह जुर्माना महिलाओं और पुरुषों दोनों के लिए उन व्यवसायों में सर्वाधिक है जिनके लिए कम से कम चार वर्ष के कॉलेज या विश्वविद्यालय की उपाधि ज़रूरी होती है। जो महिलाएं अत्यंय कुशल, प्रमुखत: महिला-प्रधान व्यवसाय में काम करती हैं, उनकी आमदनी ऐसे व्यवसाय के मुकाबले मात्र 71 प्रतिशत होती है जो अति कुशल पुरुष-प्रधान व्यवसाय हैं। यानी प्रति घंटे कम से कम 10 डॉलर कम (और पुरुष-प्रधान व्यवसाय में काम करने वाले कुशल पुरुषों से 12 डॉलर कम)। लगभग समान कुशलता वाले और एक जैसे जेंडर संघटन वाले व्यवसायों में पुरुषों के बराबर मज़दूरी न होने के चलते महिलाओं को पूर्णकालिक काम में प्रति वर्ष 3555 से 17450 डॉलर का नुकसान होता है। लगभग सारे व्यवसायों में महिलाओं की औसत आमदनी पुरुषों से कम है, चाहे वे उन व्यवसायों में काम करें जहां मुख्यत: महिलाएं काम करती हैं या ऐसे व्यवसायों में काम करें जहां मुख्यत: पुरुष काम करते हैं या मिश्रित व्यवसायों में काम करें। और तो और, पुरुषों के मुकाबले दुगनी महिलाएं गरीबी में हैं (Hegewisch and Hartmann 2014)।

गोरे पुरुषों की तुलना में अफ्रीकी-अमरीकी और हिस्पैनिक महिलाओं की मज़दूरी तो और भी कम हैं। हिस्पैनिक महिलाओं की औसत आमदनी सबसे कम है, 541 डॉलर प्रति सप्ताह (जो किसी गोरे पुरुष की औसत साप्ताहिक आमदनी 884 डॉलर का मात्र 61.2 प्रतिशत है)। अफ्रीकी अमरीकी महिलाओं की औसत साप्ताहिक आमदनी 606 डॉलर यानी किसी गोरे पुरुष की औसत साप्ताहिक आमदनी का मात्र 68.6 प्रतिशत है। (Hegewisch and Hartmann 2014)

औद्योगिक समाजों में स्त्री की हैसियत कुछ हद तक औद्योगिकरण ने पितृसत्ता के पारंपरिक स्वरूप को कमज़ोर किया। उद्योग-पूर्व समाजों में पुरुषों का स्त्रियों पर काफी अधिकार और नियंत्रण होता था। औद्योगिक समाजों मे जब महिलाएं ज़्यादा आत्म निर्भर हुईं और जेंडर सम्बंध ज़्यादा समतामूलक हुए, तो यह अधिकार कम हो गया। अलबत्ता, जैसा कि हमने देखा, महिलाएं आज भी कार्यस्थल के लिहाज़ से सीमित हैं और उन पर घर व बाहर के कामों का दोहरा बोझ है। इससे पता चलता है कि पितृसत्ता की सांस्कृतिक विरासत अधिकांश औद्योगिक समाजों में आज भी टिकी हुई है।

आर्थिक भूमिका बदलने के साथ, महिलाओं ने बराबर आर्थिक व राजनैतिक अधिकार हासिल करने की कोशिश की है। जेंडर समानता की आवाज़ सबसे पहले उच्च व मध्यम वर्ग की महिलाओं से उठी। मज़दूर वर्ग की महिलाओं के विपरीत, महिला अधिकारों के ये शुरुआती पैरवीकार वित्तीय रूप से सुरक्षित थे और इनके पास राजनैतिक एक्टिविज़्म के लिए काफी फुरसत थी। इन्होंने अंततः यूएस व अन्य औद्योगिक राष्ट्रों में मताधिकार हासिल कर लिया। इसके अलावा, बढ़ते शैक्षणिक स्तर और आर्थिक अवसरों के चलते ज़्यादा महिलाओं ने कामगार दल में प्रवेश किया। उदाहरण के लिए, 1977 तक यूएस में 77 प्रतिशत वयस्क महिलाएं कामगार दल में थीं। 2012 तक यह आंकड़ा 75 प्रतिशत तक पहुंच गया था, जैसा कि चित्र 10.8 में दर्शाया गया है।

चित्र 10.8 उम्र व जेंडर के अनुसार यूएस श्रमिक दल में भागीदारी: 25-54 वर्ष की महिलाएं (Sullivan, David. "trends in labor Force Participation" Chicago: Federal reserve Bank, June 2013)

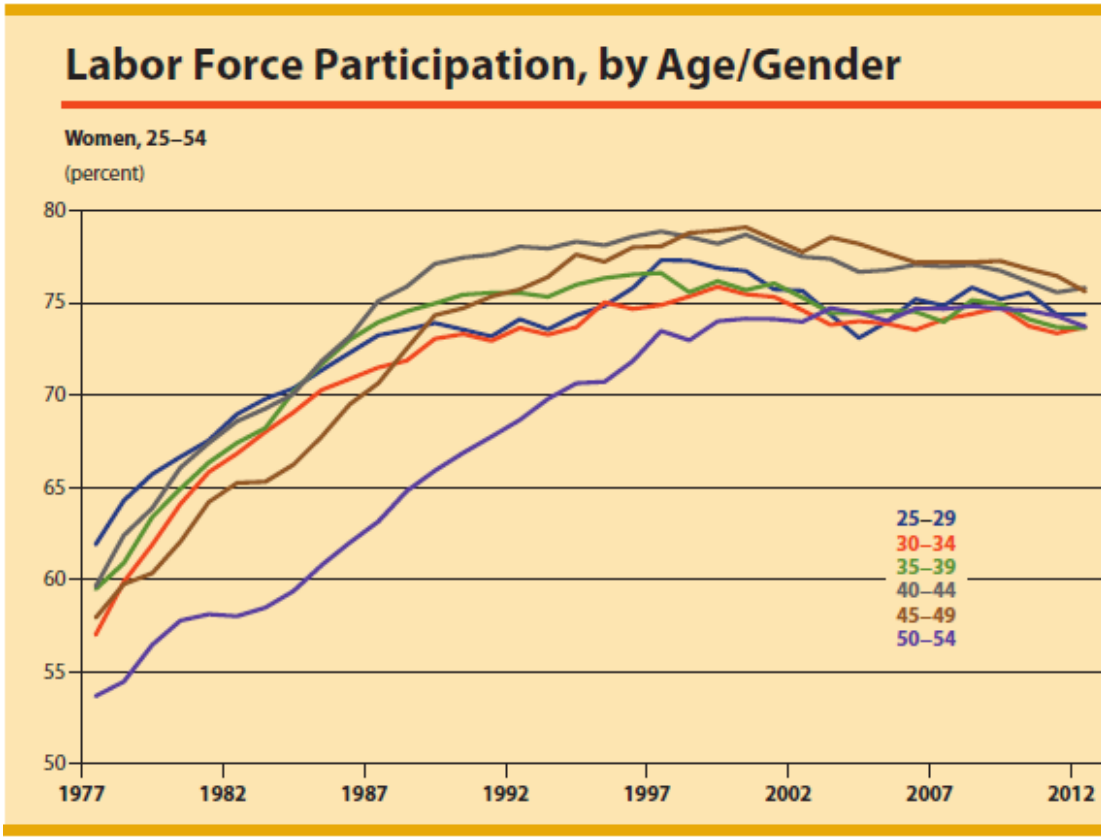

आधार कहीं व्यापक है। इसके समर्थकों में पेशेवर महिलाएं, हाई स्कूल व कॉलेज विद्यार्थी, गृहिणियां, वरिष्ठ नागरिक, और कई पुरुष हैं।

नारीवादियों ने कई ठोस उपलब्धियां हासिल की हैं और संयुक्त राज्य में कुछ रवैये बदलने में मदद की है। उदाहरण के लिए, 1972 के एक महत्वपूर्ण कानूनी फैसले में, दुनिया में महिलाओं की सबसे बड़ी नियोक्ता अमेरिकन टेलीफोन एंड टेलीग्राफ कंपनी (AT&T) को विवश किया गया था कि वह 230 लाख डॉलर तत्काल वेतन वृद्धि के तौर पर और 150 लाख डॉलर अतीत के वेतन के तौर पर उन महिलाओं को अदा करे जिनके साथ लिंग के आधार पर भेदभाव किया गया था। इसके अलावा, महिलाओं को कई पूर्ववर्ती सिर्फ-पुरुष संगठनों में भी प्रवेश मिला, जैसे यूएस मिलिटरी एकेडमी (Macionis 2014)।

इन उपलब्धियों के बावजूद, कई महिला कर्मियों को आज भी कम वेतन वाले सेवा व्यवसायों में ही सीमित रखा गया है। इस व इस जैसी अन्य समस्याओं को सुलझाने के लिए नारीवादी आंदोलन नें यूएस के संविधान में समान अधिकार संशोधन का समर्थन किया है ताकि जेंडर आधारित भेदभाव पर प्रतिबंध लगे। हालांकि इस संशोधन का समर्थन लगभग तीन-चौथाई अमरीकी वयस्कों ने किया और 1972 में कांग्रेस ने इसे पारित भी कर दिया किंतु राज्यों ने इसका अनुमोदन नहीं किया है। ऐसा लगता है कि पूर्ण समानता और समान कार्य के लिए समान वेतन के विचार को यूएस समाज की पूरी स्वीकृति नहीं मिली है। एक अग्रणी औद्योगिक समाज में भी पितृसत्ता की सांस्कृतिक विरासत काफी अड़ियल ताकत बनी हुई है।

जापान में, पितृसत्ता की सांस्कृतिक विरासत ने महिलाओं की भूमिका पर अपनी पकड़ बनाए रखी है। औद्योगिकरण के शुरुआती दौर में, 1898 में लागू की गई माइजी संहिता के तहत महिलाओं को बहुत थोड़े अधिकार दिए गए थे (McCreery and McCreery 2006)। वर्ष 1900 के पुलिस सुरक्षा नियमन के अनुच्छेद 5 में स्पष्ट शब्दों में महिलाओं को राजनैतिक संगठन से जुड़ने या यहां तक कि ऐसी बैठकों में शामिल होने की भी मनाही थी जहां राजनैतिक भाषण होंगे। ये कानून जापान में द्वितीय विश्व युद्ध के बाद तक लागू रहे।

द्वितीय विश्व युद्ध के बाद यूएस द्वारा जापान के ऑक्यूपेशन के बाद महिला मताधिकार मंज़ूर किया गया। 1946 में अधिसूचित जापानी संविधान के अनुच्छेद में 14 नस्ल, धर्म, लिंग, सामाजिक स्थिति या पारिवारिक मूल के आधार पर भेदभाव पर प्रतिबंध लगाया गया। अनुच्छेद 24 में स्पष्ट शब्दों में विवाह के लिए दोनों पक्षों की सहमति को ज़रूरी बनाया गया। 1947 में जारी संशोधित नागरिक संहिता में पारंपरिक *ie* कार्पोरेट परिवार व्यवस्था को समाप्त कर दिया गया। जापानी महिलाओं की कानूनी हैसियत में अगला बड़ा परिवर्तन 1985 में समान अवसर रोज़गार कानून के पारित होने के साथ आया। किंतु कानूनी हैसियत और सामाजिक स्वीकृति दो अलग-अलग चीज़ें हैं, खास तौर से जब कानून के उल्लंघन पर किसी दंड का प्रावधान हो।

अलबत्ता, 1970 के दशक में जो पत्नियां और बेटियां उपनगरों में पहुंचीं वे उन महिलाओं की पुत्रियां थीं जो घर पर रहने वाली पत्नी होने की अभ्यस्त थीं। यूएस व युरोप के समान ही अधिक से अधिक जापानी महिलाएं कार्य बल में प्रवेश कर रही थीं। अन्यत्र औद्योगिक विश्व के समान, बच्चों को शिक्षित करने की लागत बढ़ती जा रही थी। कुछ महिलाओं को तो सदा से सिर्फ ज़रूरतों की पूर्ति के लिए काम करना पड़ता था। अब ज़्यादा महिलाएं काम की तलाश करने लगीं ताकि पड़ोसियों की बराबरी कर सकें, या यह सुनिश्चित कर सकें कि उनके परिवार नई-नई उपभोक्ता वस्तुएं हासिल कर सकें। कई युवा महिलाओं ने ऐसी नैकरियां लीं जो उनके विवाह तक चलने वाली हों। फिर वे श्रमिक दल में तब लौटतीं जब उनके बच्चे स्कूल जाने लगते। तब उन्हें कम वेतन वाले अंशकालिक काम ही मिलते थे। वे अपनी पारिवारिक आमदनी में सहायता तो दे सकती थीं किंतु इतना नहीं कमा पाती थीं कि आर्थिक रूप से आत्म-निर्भर हो जाएं।

अलबत्ता, जापानी महिलाएं ज़्यादा उच्च शिक्षा प्राप्त करने लगी थीं। 1955 में मात्र 5 प्रतिशत महिलाओं ने उत्तर-माध्यमिक शिक्षा प्राप्त की थी और इनमें से आधी से कुछ ज़्यादा जूनियर कॉलेज तक पहुंची थीं। वर्ष 2002 में 48.5 प्रतिशत जापानी महिलाएं (पुरुष 48.8 प्रतिशत) उत्तर-माध्यमिक शिक्षित थीं। 33.8 प्रतिशत महिलाएं विश्वविद्यालय पहुंची थीं। उच्च शिक्षा और साथ में सीमित अवसर असंतोष का नुस्खा था और इसने अस्थायी राहत ही प्रदान की (McCreery and McCreery 2006)।

जापानी समाज में जब महिलाएं कार्य बल में होती भी हैं, तो पुरुषों की तुलना में उन्हें दोयम दर्जा मिलता है। कई कॉलेज-शिक्षित महिलाओं को कार्यालयों में युनिफॉर्म पहनना पड़ती है और पुरुषों को चाय-कॉफी परोसना पड़ती है, और उनके साथ ऐसा सलूक किया जाता है मानो वे कार्यालय में चपरासी हों (Hendry 2013; Kerbo and McKinstry 1998)। उनसे अपेक्षा की जाती है कि वे पुरुषों के सामने विनम्र रहेंगी और बालसुलभ व्यवहार करेंगी जिसे मोहक और विनम्र माना जाता है। जापान में अधिकांश पुरुष कोई घरेलू काम नहीं करते और चाहते हैं कि पत्नी उनकी सेवा करेगी। जापान में पितृसत्ता की इस परंपरा के बावजूद, घर के अंदर जापानी महिला की स्थिति काफी शक्तिशाली है। वह बजट संभालती है, बच्चों की शिक्षा सम्बंधी निर्णय करती है और परिवार के लिए दीर्घावधि वित्तीय निवेश करती है। लिहाज़ा, जापान में घर के बाहर और घर के अंदर महिलाओं की भूमिका पर पितृसत्तात्मक परंपरा का काफी प्रभाव है।

कुछ महिलाएं जापान में विकसित होते नारीवादी आंदोलन, जो जेंडर भूमिकाओं को बदलना चाहता है, में सक्रिय हैं किंतु पितृसत्ता पर आधारित पारंपरिक सांस्कृतिक अपेक्षाएं बदलाव का प्रतिरोध करती हैं (McCreery and McCreery 2006)। पाश्चात्य समाजों और जापान दोनों में अतीत के मुकाबले महिलाएं कहीं अधिक उम्र में विवाह कर रही हैं। औद्योगिक व उद्योग-उपरांत समाजों में प्रकट हुई कृत्रिम निषेचन और परखनली शिशु (और संभवत: भविष्य में कुछ समाजों में क्लोनिंग) जैसी नई प्रजनन टेक्नॉलॉजी निसंदेह इन उन्नत उद्योग-उपरांत समाजों में जेंडर, विवाह और स्त्री-पुरुष सम्बंधी अन्य मुद्दों के नैतिक, कानूनी व सामाजिक हैसियत जैसे मुद्दों को प्रभावित करेंगी।

उम्र

औद्योगिकरण का एक और परिणाम यह हुआ है कि बुज़ुर्ग लोगों ने पारंपरिक हैसियत और सत्ता खोने का एहसास किया है। यह प्रवृत्ति औद्योगिक व उद्योग-उपरांत समाजों में पारिवारिक ढांचे और सांस्कृतिक ज्ञान की प्रकृति में बदलावों में झलकती है। विस्तृत परिवारों का स्थान एकल परिवारों द्वारा लिए जाने के साथ ही बुज़ुर्ग लोग अब अपने वयस्क बच्चों के साथ नहीं रहते। पेंशन योजनाओं और सामाजिक सुरक्षा जैसे सरकारी

समर्थन के कार्यक्रमों ने बुज़ुर्गों के लिए आर्थिक सहारे के रूप में परिवार का स्थान ले लिया। इसके साथ ही, औद्योगिक समाजों में बुज़ुर्गों और संतानों के बीच संसाधनों का लेन-देन कम महत्वपूर्ण हो गया (Halperin 1987)। लिहाज़ा, परिवार के बुज़ुर्ग सदस्यों ने आर्थिक ताकत का एक प्रमुख स्रोत गंवा दिया।

उपयोगी ज्ञान को सहेजने और प्रसारित करने में बुज़ुर्गों की जो पारंपरिक भूमिका थी वह भी कम हो गई। समाज वैज्ञानिक डोनाल्ड ओ. काऊगिल (Donald O. Cowgill 1986) की परिकल्पना है कि औद्योगिक समाजों में टेक्नॉलॉजीगत परिवर्तनों की रफ्तार बढ़ने के साथ, ज्ञान तेज़ी से बासी पड़ जाता है, जिसका असर बुज़ुर्ग लोगों की हैसियत पर पड़ता है। औद्योगिकरण नए-नए उत्पादों और नई-नई सेवाओं के ज़रिए मुनाफा बढ़ाता है, जो सबके सब युवाओं को तरजीह देते हैं, जिनकी औपचारिक शिक्षा व प्रशिक्षण की बदौलत टेक्नॉलॉजीगत ज्ञान तक बेहतर पहुंच होती है। इसके अलावा, सांस्कृतिक व तकनीकी जानकारी इस हद तक बढ़ गई है कि बुज़ुर्ग लोग इस सबको नहीं सहेज सकते। इसकी बजाय, पुस्तकालय, डैटाबेस, और औपचारिक शिक्षा संस्थान सांस्कृतिक ज्ञान के भंडारग्रह बन गए हैं।

काऊगिल के मुताबिक, इन परिवर्तनों का असर यह हुआ है कि औद्योगिक समाजों में बुज़ुर्ग लोगों का अपनी भूमिकाओं से तेज़ी से अलगाव हुआ है। हालांकि कई बुज़ुर्ग लोग सक्रिय व उत्पादक बने रहते हैं, किंतु उनके पास वह आर्थिक, राजनैतिक व सामाजिक हैसियत नहीं होती जो औद्योगिकरण-पूर्व समाजों में थी। कुछ मामलों में, औद्योगिक समाजों में युवा पीढ़ी के लिए स्थान बनाने हेतु बुज़ुर्ग लोगों को अपनी नौकरियों से सेवा निवृत्त कर दिया जाता है। उदाहरण के लिए, अभी हाल तक औद्योगिक जापान में बुज़ुर्गों को 55 वर्ष की उम्र में सेवा निवृत्त कर दिया जाता था और उन्हें अपने वरिष्ट वर्षों के साथ तालमेल बनाने में अक्सर कठिनाई होती थी।

बुज़ुर्गों की हैसियत व भूमिकाओं में बदलाव जापान की अपेक्षा पश्चिम में ज़्यादा नाटकीय हुए हैं। जापानी समाज में कंफ्यूशियन मूल्यों और आचार प्रणाली से प्रभावित पारिवारिक दायित्व की परंपरा बुज़ुर्गों के आदर को बढ़ावा देती है। इसके अलावा, तीन-चौथाई बुज़ुर्ग अपने बच्चों के साथ रहते हैं, जिससे बच्चों में अपने पालकों के प्रति

ज़िम्मेदारी का एहसास पैदा होता है। वर्ष 2002 में सरकारी अनुमान के मुताबिक जापान की जनसंख्या 12,74,35,000 थी। इनमें से 2,36,28,000 (18.5 प्रतिशत) 65 वर्ष या उससे अधिक उम्र के थे। मात्र 1,81,02,000 (14.2 प्रतिशत) 14 वर्ष या उससे कम उम्र के थे। 2001 में जापानी पुरुषों की औसत आयु 78.07 वर्ष और जापानी महिलाओं की औसत आयु 84.83 वर्ष थी (McCreery and McCreery 2006)।

काऊगिल जैसे सिद्धांतकारों का मत है कि चूंकि जापान या भूतपूर्व सोवियत संघ का औद्योगिकरण पश्चिम के काफी बाद हुआ था, इसलिए पारिवारिक संरचना और बुज़ुर्गों की हैसियत बदलने के लिए ज़्यादा समय नहीं मिला है। इन समाजों के सबसे आधुनिक औद्योगिकृत शहरी क्षेत्र और ग्रामीण क्षेत्रों की तुलना से इस नज़रिए को समर्थन मिलता है। उदाहरण के लिए, रूस और अभी हाल तक जापान के अपेक्षाकृत ग्रामीण इलाकों में विस्तृत परिवार या *ie* ही मानक था और बुज़ुर्ग लोग प्रभावशाली और सम्मानित थे। लिहाज़ा, हो सकता है कि जापान व रूस में बुज़ुर्गों की उच्च हैसियत औद्योगिकरण की विलंबित प्रतिक्रिया है (Cowgill 1986)। बहरहाल, फिलहाल जापान इन पैटर्न्स में तेज़ बदलाव से गुज़र रहा है, और यूएस व युरोप के समान, बुज़ुर्ग लोग कहीं ज़्यादा स्वतंत्र हो रहे हैं और अपनी निजता तथा अपने परिवार पर निर्भरता से मुक्ति का लुत्फ उठा रहे हैं (McCreery and McCreery 2006; Hendry 2013)।

औद्योगिक व औद्योगिक-उपरांत समाजों में सामाजिक स्तरीकरण

10.8 ब्रिटेन, संयुक्त राज्य, जापान तथा भूतपूर्व सोवियत संघ की वर्ग संरचना पर विचार कीजिए।

हमने यह चर्चा की कि उद्योग-पूर्व समाजों में सामाजिक स्तरीकरण किस तरह का था। बैंड्स और कबीले कमोबेश समतामूलक थे, जबकि चीफडम्स और खेतिहर राज्यों में आरोपित हैसियत के आधार पर सामाजिक गैर-बराबरी बढ़ी थी। चीफडम्स और खेतिहर राज्यों को बंद समाज कहा जाता है जिनमें सामाजिक गतिशीलता की गुंजाइश बहुत कम होती है। इनके विपरीत, औद्योगिक समाजों को खुले समाज के रूप में वर्गीकृत किया जाता है, जिनमें सामाजिक हैसियत निजी प्रयासों से हासिल की जा सकती है। सामाजिक हैसियत की प्राप्ति जटिल श्रम विभाजन से जुड़ी होती है, जो विशेषीकृत

व्यावसायिक भिन्नताओं पर आधारित होता है। औद्योगिक समाजों में व्यवसाय हैसियत का सबसे प्रमुख निर्धारक बन गया। आमदनी, राजनैतिक सत्ता, और प्रतिष्ठा जैसे सारे सामाजिक पारितोषिक व्यक्ति के व्यवसाय पर निर्भर करते हैं।

कहने का मतलब यह नहीं है कि औद्योगिक समाज समतामूलक होते हैं। दरअसल, कुछ खेतिहर राज्यों के समान, उनमें लगभग सामाजिक हैसियतों के आधार पर स्पष्ट वर्ग होते हैं। इन वर्गों के बीच संपत्ति, सत्ता, और हैसियत के अंतर उद्योग-पूर्व समाजों की अपेक्षा औद्योगिक समाजों में ज़्यादा होते हैं। लिहाज़ा, हालांकि लोगों को यह अवसर होता है कि उन्होंने जिस वर्ग में जन्म लिया था, उससे भिन्न वर्ग में चले जाएं, किंतु इन समाजों में, उद्योग-पूर्व समाजों की अपेक्षा, स्तरीकरण कहीं ज़्यादा अतिवादी होता है। आइए कुछ औद्योगिक समाजों में स्तरीकरण की प्रणालियों की छानबीन करते हैं।

ब्रिटिश वर्ग व्यवस्था

कुछ औद्योगिक राज्य आज भी अपना खेतिहर अतीत प्रतिबिंबित करते हैं। उदाहरण के लिए ग्रेट ब्रिटेन में एक वर्ग व्यवस्था है जिसमें उसके कुछ सामंती पैटर्न बरकरार हैं। यहां एक सांकेतिक राजशाही और नोबिलिटी है जो आरोपित हैसियत पर आधारित है जिसे पीढ़ी-दर-पीढ़ी सौंपा जाता है। राजशाही और नोबिलिटी के नाम राजकुमार, राजकुमारी, नाइट, पीयर, और अर्ल वगैरह हैं। इन व्यक्तियों को उपयुक्त ढंग से संबोधित करना पड़ता है: योर रॉयल हाइनेस, सर, लॉर्ड, लेडी। ब्रिटिश राजनैतिक प्रणाला में हाउस ऑफ लॉर्ड्स के रूप में उसके सामंती अतीत की झलक मिलती है। 2001 तक इसकी सदस्यता पारंपरिक रूप से परिवार के ज़रिए उत्तराधिकार में मिलती थी। यह हाउस ऑफ कॉमन्स के विपरीत है, जहां व्यक्तियों का स्वतंत्र चुनाव होता है। हालांकि आज राजशाही और हाउस ऑफ लॉर्ड्स के अधिकार बहुत कम हैं, किंतु ये ब्रिटिश राजनीति में महत्वपूर्ण सांकेतिक भूमिका निभाते हैं।

आधुनिक ब्रिटेन में वर्ग विभाजन कई अन्य युरोपीय समाजों जैसा ही है। इनमें एक छोटा-सा उच्च वर्ग है, जो उत्तराधिकार के नियमों और आभिजात्य पब्लिक स्कूलों में अपने बच्चों की शिक्षा के ज़रिए अपनी स्थिति बनाए रखता है; एक अपेक्षाकृत बड़ा मध्यम वर्ग है जिसमें चिकित्सक, वकील, व्यापारी और सेवा क्षेत्र के अन्य व्यवसायी

शामिल हैं; और एक विशाल मज़दूर वर्ग है जो अर्थ व्यवस्था के प्राथमिक व द्वितीयक क्षेत्रों में कार्यरत हैं। अलबत्ता, ग्रेट ब्रिटेन में सामाजिक गतिशीलता खुली है, और लोग एक वर्ग से दूसरे वर्ग में जा सकते हैं।

अन्य औद्योगिक राज्यों के समान ग्रेट ब्रिटेन में सामाजिक गतिशीलता कुछ हद तक औद्योगिक अर्थ व्यवस्था में हालिया बदलाव का परिणाम है। उन्नत औद्योगिकरण के साथ, नौकरियों का अधिक प्रतिशत तृतीयक (सेवा) क्षेत्र में नज़र आता है, जबकि प्राथमिक और द्वितीयक क्षेत्र सिमट गए हैं। लिहाज़ा व्हाइट कॉलर कामगारों की संख्या बढ़ी है और ब्लू कॉलर कामगारों की संख्या घटी है। परिणामस्वरूप, ब्लू कॉलर कामगारों के कई पुत्र-पुत्रियों की सामाजिक हैसियत उनके पालकों से बेहतर है। उदाहरण के लिए, 1950 के दशक से, ग्रेट ब्रिटेन के शारीरिक श्रमिकों के लगभग 40 प्रतिशत पुत्र मध्यम वर्ग में पहुंच गए हैं (Robertson 1990; Macionis 2014)। समाज वैज्ञानिक इसे ढांचागत गतिशीलता कहते हैं, अर्थात वह सामाजिक गतिशीलता जो औद्योगिक-उपरांत अर्थ व्यवस्था की पुनरर्चना के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई है जिसने नए व्यावसायिक अवसर पैदा किए हैं। टेक्नॉलॉजिकल नवाचार, अर्थ व्यवस्था में उछाल या मंदी, और सेवा क्षेत्र में नौकरियों की संख्या बढ़ना, व्हाइट कॉलर नौकरियों में वृद्धि मज़दूर वर्ग की मध्यम या उच्च वर्ग में गतिशीलता को प्रभावित कर सकते हैं।

संयुक्त राज्य में वर्ग

अधिकांश अनुसंधान दर्शाते हैं कि संयुक्त राज्य में सामाजिक गतिशीलता की दर लगभग शेष औद्योगिक राज्यों जैसी ही है। मज़दूर वर्ग के लगभग एक-तिहाई बच्चे अपने जीवन में उसी वर्ग में बने रहते हैं (Macionis 2014)। हालांकि संयुक्त राज्य ग्रेट ब्रिटेन से इस मायने में अलग है कि यहां कभी भी पदवीधारी अभिजात्य वर्ग वाली अधिकारिक वर्ग व्यवस्था नहीं रही, किंतु यह वर्गविहीन समाज नहीं है। संयुक्त राज्य की वर्ग व्यवस्था पांच श्रेणियों से मिलकर बनी है, जिनमें से प्रत्येक के अंदर तुल्य सामाजिक हैसियत वाले लोग आते हैं, जो मूलत: व्यवसाय, आमदनी और शिक्षा से निर्धारित होती हैं (देखें तालिका 10.1)। हालांकि ये वर्ग-सरहदें काफी धुंधली हैं और

सख्त नहीं हैं, किंतु ये इस बात पर प्रभाव डालती हैं कि कोई व्यक्ति सामाजिक गतिशीलता हासिल कर सकता है या नहीं।

संयुक्त राज्य का एक प्रमुख आदर्श यह है कि कोई भी व्यक्ति प्रयास और प्रेरणा से सामाजिक सीढ़ी पर ऊपर चढ़ सकता है। इस वजह से, उच्च व उच्च-मध्यम वर्ग के अमरीकियों का मानना होता है कि आर्थिक व सामाजिक गैर-बराबरियां मुख्यत: व्यक्तिगत क्षमताओं और काम की आदतों से पैदा होती हैं। और तो और, संयुक्त राज्य के अधिकांश व्यक्ति दावा करेंगे कि वे यूएस समाज के मध्यम वर्ग में हैं, जबकि तथ्य यह होगा कि वे इस आर्थिक श्रेणी में नहीं होते (Wolfe 1999)। अधिकांश अमरीकी मानते हैं कि निजी ज़िम्मेदारी, प्रवीणता और काम की आदतों के आधार पर सारे लोगों को बराबर अवसर उपलब्ध हैं। लिहाज़ा, ये सांस्कृतिक विश्वास सामाजिक गैर-बराबरी को उचित ठहराने में मदद करते हैं।

वास्तव में निजी प्रयासों के अलावा कई कारक - जैसे पारिवारिक पृष्ठभूमि, नस्ल, जनजातीयता, जेंडर, संपत्ति, ज़ायदाद, और परिसंपत्तियां तथा राष्ट्रीय व वैश्विक अर्थ व्यवस्थाएं - सामाजिक-आर्थिक सीढ़ी पर व्यक्ति की स्थिति व गतिशीलता को प्रभावित करते हैं। उदाहरण के लिए, ऐतिहासिक रूप से अफ्रीकी-अमरीकी, देशज अमरीकी और हिस्पेनिक्स की गतिशीलता की रफ्तार एशियाई-अमरीकी और गोरे मध्यम वर्गीय अमरीकियों से कम रही है।

तालिका 10.1 इक्कीसवीं सदी में अमरीकी वर्ग व्यवस्था: एक समेकित अनुमान

वर्ग और कुल आबादी में प्रतिशत	आमदनी	संपत्ति	व्यवसाय	शिक्षा	निजी व पारिवारिक जीवन	बच्चों की शिक्षा
उच्च वर्ग (1-3 प्रतिशत	बहुत अधिक आमदनी, अधिकांश संपत्ति से	विशाल संपत्ति, पुरानी संपदा, निवेश पर	मेनेजर, पेशेवर, उच्च नागरिक व फौजी अफसर	आभिजात्य स्कूलों में उदार कला शिक्षा	स्थिर पारिवारिक जीवन, स्वायत्त व्यक्तित्व	दोनों लिंगों के लिए अधिकार के रूप में कॉलेज शिक्षा

		नियंत्रण				
उच्च-मध्यम वर्ग (10-15 प्रतिशत)	उच्च आमदनी	बचत के ज़रिए संपत्ति का संचय	सबसे कम बेरोज़गारी	स्नातक प्रशिक्षण	बेहतर शारीरिक न मानसिक स्वास्थ्य और स्वास्थ्य सेवा	शिक्षा व्यवस्था इनके पक्ष में झुकी हुई
निम्न-मध्यम वर्ग (30-35 प्रतिशत)	साधारण आमदनी	थोड़ी परिसंपत्तियां, कुछ बचत	छोटे व्यापारी और किसान, निचले स्तर के पेशेवर, अर्ध पेशेवर, सेल्स व लिपिकीय कर्मचारी	कुछ कॉलेज, कुछ हाई स्कूल	उच्च औसत आयु, अस्थिर पारिवारिक जीवन	कॉलेज शिक्षा का अवसर मज़दूर वर्ग के बच्चों से ज़्यादा, शिक्षा व्यवस्था इनके विरुद्ध झुकी हुई
मज़दूर वर्ग (40-45 प्रतिशत)	निम्न आमदनी	परिसंपत्तियां थोड़ी या नहीं कोई बचत नहीं कोई परिसंपत्ति नहीं	कुशल व अकुशल मज़दूर	ग्रेड स्कूल	एक-पालकीय घर. समायोजित करने वाले व्यक्तित्व	रोज़गारोन्मुखी शिक्षा की ओर रुझान
निम्न वर्ग (20-25 प्रतिशत)	गरीबी स्तर की आमदनी	कोई बचत नहीं	सर्धिक बेरोज़गारी, अतिशेष श्रमिक	निरक्षरता, खास तौर से कामकाजी निरक्षरता	घटिया शारीरिक व मानसिक स्वास्थ्य, कम औसत आयु	शिक्षा में कम रुचि, शालात्याग की ऊंची दर

Source: Adapted from Social Stratification: The Interplay of Class, Race, and Gender, 2nd ed., by Daniel W. rossides, © 1997. Adapted by permission of Pearson Education, inc., Upper Saddle river, NJ.

जापान और भूतपूर्व सोवियत संघ में वर्ग

अधिकांश अनुसंधान दर्शाते हैं कि वर्गों के बीच सामंजस्य के सांस्कृतिक मूल्य के बावजूद जापान में वर्ग विभाजन और टकराव मौजूद हैं। समाज वैज्ञानिक रॉब स्टीवन (Rob Steven 1983) ने जापानी समाज में पांच प्रमुख वर्गों की पहचान की है: बुर्ज़ुआज़ी या पूंजीपति वर्ग (प्रमुख उद्योगों के मालिक), क्षुद्र बुर्ज़ुआज़ी (छोटे व्यापार के मालिक), मध्यम वर्ग (पेशेवर तथा सेवा क्षेत्र के अन्य कर्मी), कृषक (ग्रामीण किसान) और मज़दूर वर्ग (औद्योगिक मज़दूर)। जापानी समाज में सामाजिक गतिशीलता का प्रमुख ज़रिया शिक्षा व्यवस्था है, जो प्रारंभिक से लेकर हाई स्कूल तक अत्यंत अनुशासित व सख्त है। उच्च शिक्षा सिर्फ उन विद्यार्थियों तक सीमित है जो विभिन्न उपलब्धि परीक्षाओं में बढ़िया प्रदर्शन करते हैं, यह प्रणाली कुछ हद तक वर्ग पृष्ठभूमि को प्रतिबिंबित करती है। अन्य औद्योगिक समाजों के समान ही, मध्यम व उच्च वर्ग के छात्रों को बेहतर अवसर मिलते हैं। जापान में सामाजिक गतिशीलता की दर अन्य औद्योगिक समाजों के समान ही है (Lipset and Bendix 1967)। अलबत्ता, अधिकांश मौजूदा जनजातीय अनुसंधान दर्शाता है कि सख्त वर्ग व्यवस्था जापानी समाज पर हावी नहीं है और अधिकांश लोग मानते हैं कि शिक्षा और अपने निजी प्रयासों से वे आर्थिक व सामाजिक रूप से बेहतर पदों पर पहुंच सकते हैं। संयुक्त राज्य के समान ही यहां भी निम्न वर्ग के कुछ व्यक्ति सेलेब्रिटीज़, कलाकार और सीईओ तक पहुंचे हैं। लिहाज़ा, जापान जैसे बढ़ते क्रम में समृद्ध होते समाज खुद के भविष्य को लेकर एक आशावाद को बढ़ावा देते हैं (McCreery and McCreery 2006)।

1917 में सोवियत क्रांति के बाद से ही भूतपूर्व सोवियत संघ का दावा था कि वह एक वर्गविहीन समाज है क्योंकि इसकी व्यवस्था उत्पादन के साधनों पर निजी स्वामित्व पर आधारित नहीं है। अलबत्ता, वास्तव में यहां व्यवसाय पर आधारित स्तरबद्ध वर्ग व्यवस्था थी। व्यवसायों को आमदनी, सत्ता, व प्रतिष्ठा के आधार पर ऊपर से नीचे चार प्रमुख हैसियत समूहों में बांटा गया था। सर्वोच्च हैसियत समूह उच्च स्तर के सरकारी

अधिकारियों (पोलिटब्यूरो के सदस्य जिनकी नियुक्ति कम्यूनिस्ट पार्टी में से की जाती थी) का था। दूसरा स्तर इंजीनियर्स, प्रोफेसर्स, चिकित्सक और वैज्ञानिकों के अलावा निचले स्तर के सरकारी कर्मचारियों का था। तीसरा स्तर औद्योगिक अर्थ व्यवस्था में शारीरिक श्रमिकों का था, और सबसे निचला स्तर ग्रामीण किसानों का था (Kerblay 1983; Dunn and Dunn 1988)। अधिकांश समाज वैज्ञानिक मानते हैं कि हैसियतों की ऊंच-नीच वर्ग आधारित समाज का लक्षण है।